भैषज्य कल्पना

भैषज्य

भेष- भय / व्याधि **ज - जीतना**

जिसके द्वारा रोगों की चिकित्सा की जाती है या रोगों को दूर किया जाता है उसे भेषज कहते हैं और भेषज का भाव या कर्म हि भैषज्य है।

कल्पना

इसका अर्थ उस प्रक्रिया से लिया जाता है जिसके द्वारा किसी द्रव्य या वस्तु में विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने के लिए शक्ति उत्पन्न की जाती है, उसे कल्प या कल्पना कहते हैं।

भैषज्य कल्पना का इतिहास एवं विकास क्रम

भैषज्य कल्पना का अवलोकन किया जाए तो यह माना जा सकता है की प्राणिमात्र की उत्पत्ति के साथ ही भैषज्य कल्पना का आविर्भाव हो गया था, सम्भवतः आदि मानव ने अपनी भूख को शान्त करने के लिए वानस्पतिक द्रव्य (फल आदि) को दाँतों से चबाया होगा और यही मौलिक रूप में कल्क कल्पना का प्रारम्भ है। इसी प्रकार द्रव्यों का चर्वण कर उसका रस भी आचूषित किया होगा , जो स्वरस कल्पना का स्वरूप माना जा सकता है।

भैषज्य कल्पना के इतिहास को विवेचन की सुगमता के दृष्टिकोण से निम्न कालो मे विभक्त किया जा सकता है

- वेदिक काल
- संहिता काल
- मध्य/रसशास्त्रीय काल
- आधुनिक काल

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. वेदिक काल –

- वैदिक काल को भैषज्य कल्पना का प्रारंभिक काल माना है।
- भैषज्य कल्पना की मौलिक पञ्चविध कषाय कल्पनाएँ तथा अनेक व्युत्पन्न कल्पनाएँ वैदिक काल मे विद्दमान थी।
- चिकित्सा की दृष्टि से अथर्ववेद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए अथर्ववेद को **" भिषग्वेद "** या **" भैषज्य वेद "** भी कहा गया है।
- विश्व के प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद में ही भिषक् और भैषज्य का प्रथम प्रसंग मिलता है।
- ऋग्वेद के नवम मण्डल में सोमरस का वर्णन मिलता है।
- वेदों मे सोम को औषधि का राजा और तलाशा को औषधि की रानी कहते हैं।

2. संहिता काल –

आयुर्वेद में चरक संहिता , सुश्रुत संहिता , काश्यप संहिता , अष्टाङ्ग संग्रह , अष्टाङ्ग हृदय आदि ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार की भैषज्य कल्पनाओं का उल्लेख मिलता है।

(i) चरक संहिता : -

- भैषज्य कल्पना का व्यस्थित व वैज्ञानिक विवरण चरक संहिता में मिलता है।
- चरक संहिता के सूत्रस्थान के द्वितीय अध्याय मे 32 यवागु और तृत्तीय अध्याय मे 32 सिद्धतम चूर्ण प्रदेह का वर्णन मिलता है।
- चरक संहिता के सूत्रस्थान के चतुर्थ अध्याय में पाँच कषाय योनियों का वर्णन किया गया है।

" पञ्चकषाययोनय इति मधुरकषायोऽम्लकषायः कटुकषायस्तिक्त कषायः कषायकषायश्चेति तन्त्रे संज्ञा "।

मधुर कषाय , अम्ल कषाय , कटु कषाय , तिक्त कषाय एवं कषाय कषाय इन पञ्च कषाय योनियों से पञ्चविध कषाय कल्पनाओं की उत्पत्ति मानी गयी है , लवण रस को छठी कषाय योनि नहीं मानी गयी है क्योंकि लवण रस पूर्ण रूप से जल मे मिल जाता है।

" पञ्चविधं कषायकल्पनमिति तद्यथा - स्वरसः , कल्कः , शृतः , शीतः , फाण्टः कषाय इति। तेषां यथापूर्वम् बलाधिक्यम् अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापे क्षिणी न त्वेवं सर्वाणि सर्वत्रोपयोगिनी भवन्ति ।। "

अर्थात् स्वरस , कल्क , शृत (क्वाथ) , शीत (हिम) और फाण्ट पाँच प्रकार की कषाय कल्पनाएँ होती हैं तथा ये कषाय कल्पनाएँ यथापूर्व गुरु होती है। अतः इन कषाय कल्पनाओं का प्रयोग व्याधि एवं रोगी के बल पर निर्भर करता है, क्योंकि पञ्चविध कषाय कल्पनाएँ सम्पूर्ण रोगों में समान रूप से उपयोगी नहीं होती है।

(ii) सुश्रुत संहिता : -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- चरक संहिता के पश्चात् सुश्रुत संहिता का स्थान है। इसमें 6 प्रकार की मौलिक कल्पनाएँ मानी है क्षीर , स्वरस , कल्क , शृत (क्वाथ) , शीत (हिम) और फाण्ट - इन छ : कल्पनाओं को आचार्य सुश्रुत ने मौलिक कल्पनाएँ माना है।
- सुश्रुत संहिता के चिकित्सा स्थान के चतुर्थ अध्याय में वातरोगों में शतपाकी एवं सहस्रपाकी तैल कल्पना एवं लवण कल्पों का प्रयोग बताया गया है।
- इसके अतिरिक्त गुग्गुल कल्प , अयस्कृति कल्पना , मसी कल्पना तथा क्षारसूत्र कल्पना का सर्वप्रथम वर्णन मिलता है।

(iii) काश्यप संहिता :-

- आचार्य काश्यप ने चूर्ण , शीत , स्वरस , अभिषव , फाण्ट , कल्क और क्वाथ - इन सात को मौलिक कल्पनाएँ माना है। जिनमें चूर्ण एवं अभिषव कल्पनाओं का पञ्चविध कषाय कल्पना में समावेश हो जाता है।
- काश्यप संहिता के खिलस्थान में यूषों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

(iv) अष्टाङ्ग संग्रह व अष्टाङ्ग हृदय :-

- आचार्य वाग्भट द्वारा रचित यह ग्रन्थ है।
- इन्होंने आचार्य चरकानुसार पंचविध कषाय कल्पना को ही मौलिक कल्पनाए माना है।
- इनके अतिरिक्त अन्य अनेक कल्पनाएँ यथा अञ्जन , अणुतैल , अवलेह , आश्च्योतन , इक्षुरस , उष्णोदक , ओदन आदि विविध कल्पनाओं का उल्लेख मिलता है।

3. मध्यकाल या रसशास्त्रीय काल : -

इस काल में खनिज द्रव्यों की भैषज्य कल्पना का विकास हुआ। जिसमें खनिज द्रव्यों का शोधन , मारण , सत्त्वपातन , द्रुति , पारद के विभिन्न संस्कार तथा अनेक औषधीय कल्पनाओं का विकास हुआ। इस काल में चिकित्सा की दृष्टि से खनिज द्रव्यों की भस्में , सत्त्वपातन , द्रुति , सत्त्व भस्म , रससिन्दूर आदि कूपीपक्व रसायनों का निर्माण प्रारम्भ हो गया था।

(i) चक्रदत्त : -

- आचार्य चक्रपाणि द्वारा लिखित इस ग्रन्थ में पूर्ववर्ती संहिताओं का सार देखने को मिलता है।
- पर्पटी कल्पना का सर्वप्रथम वर्णन प्राप्त होता है।

(ii) शार्ङ्गधर संहिता : -

- भैषज्य कल्पना का उत्कृष्ट या आधारभूत ग्रन्थ शारंधर संहिता है।
- आचार्य शार्ङ्गधर मिश्र द्वारा 14 वी शताब्दी में इस ग्रन्थ को लिखा गया है। इस ग्रन्थ के मध्यम खण्ड में स्वरस , क्वाथ , फाण्ट , हिम , कल्क , चूर्ण , वटक , अवलेह , घृत , तैल , आसवारिष्ट आदि का पृथक् - पृथक् अध्यायों में वर्णन है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4. आधुनिक काल : -

- 16 वीं शताब्दी के पश्चात् आधुनिक काल माना जाता है।
- भारतीय आयुर्वेद योग संग्रह (Ayurvedic formulary of India - AFI) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ है , जिसमें कल्पनाओं के अनुसार प्रधान योगों का वर्णन किया गया है।
- वर्तमान में औषधिनिर्माता कम्पनियाँ विभिन्न प्रकार के चूर्ण , वटी , कैप्सूल , अवलेह, शैम्पू , क्रीम , आयन्टमेंट (Ointment) आदि कल्पनाओं को वर्तमान समय के अनुसार निर्माण कर विक्रय कर रही है।

औषध एवं भेषज

औषध एव भेषज दोनों का प्रयोजन रोग को दूर करना है। इसलिए औषध एवं भेषज पर्यायवाची है। आचार्य चरक ने भेषज एवं औषध को पर्याय माना है।

" चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम्। प्रायश्चितं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम्॥ " (च.चि 1/1/3)

अर्थात् चिकित्सित, व्याधिहर, पथ्य, साधन, औषध, प्रायश्चित, प्रशमन, प्रकृतिस्थापन और हित ये 9 पर्याय भेषज के हैं।

आचार्य काश्यप द्वारा औषध तथा भेषज में अन्तर

औषध	भेषज
1) दीपन , पाचन आदि द्रव्यों का संयोग करके रोगों का शमन किया जाता है , उसे औषध कहते हैं।	1) बलि, होम , व्रत , तप , शांतिकर्म द्वारा रोगों को शमन करना भेषज कहलाता हैया।
2) चरक के अनुसार यह युक्तिव्यपाश्रय चिकित्सा है।	2) चरक के अनुसार यह दैवव्यपाश्रय चिकित्सा है।
3) यह द्रव्यभूत एवं प्रत्यक्ष चिकित्सा है।	3) यह अद्रव्यभूत (अप्रत्यक्ष) एवं नैष्ठिकी चिकित्सा है।
4) औषधी मानसिक एवं शारीरिक दोनों व्याधियों को दूर करती है।	4) भेषज केवल मानसिक रोगों को दूर करती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

भैषज्य कल्पना के आधारभूत सिद्धान्त

औषध निर्माण के लिए प्राचीन आचार्यों ने कुछ सिद्धान्तों का निरूपण किया है। जिनको भैषज्य कल्पना के आधारभूत सिद्धान्त कहा जाता है।

- चिकित्सक वनौषधियों का संग्रह करके द्रव्यों के कटु तिक्त , कषाय आदि अरुचिकर स्वाद का परिवर्तन कर रुचिकर एवं सुगमता से सेवन योग्य बनाता है
- औषध को चिरस्थायी बनाने के लिए विविध प्रक्रियाओं के बाद कल्पनाओं के रूप में शरीर के लिए उपयोगी बनाता है।
- गुणवत्ता में वृद्धि ।

औषधियों की इसी तरह कल्पनाओं के निर्माण के लिए ही भैषज्य कल्पना के निम्नलिखित **आधारभूत सिद्धान्तों** की जानकारी रखना अत्यन्त आवश्यक होता है।

- परिभाषा एवं मान
- अनुक्त या विशेषोक्त ग्रहण
- औषधि द्रव्य की विशिष्टता
- पञ्चविध कषाय कल्पना
- द्रव्य स्थिति रस , गुण , वीर्य , विपाक तथा प्रभाव
- संस्कार (गुणान्तराधान)
- औषध योगों का नामकरण

Ayurvedic Formulation

1. परिभाषा एवं मान

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" अव्यक्तानुक्त लेशोक्तसंदिग्धार्थ प्रकाशिकाः । परिभाषा : प्रकथ्यन्ते दीपीभूताः सुनिश्चिताः ।। "

अर्थात् स्पष्ट रूप से नहीं कहना , बिना कहे हुए , संक्षिप्त में कहे हुए और संदिग्धार्थ आदि को परिभाषा के ज्ञान के द्वारा एक निश्चित अर्थ की जानकारी हो जाती है। जो दीपक की तरह ग्रन्थ के सभी विषयों पर प्रकाश डालती है। परिभाषा के द्वारा वाक्यों का संक्षिप्त में संकेत (Terminology) का ज्ञान जाता है। यथा –

- त्रिफला शब्द से ही हरीतकी , बिभीतकी , आमलकी तीनों द्रव्यों का ज्ञान हो जाता है।
- दशमूल से बिल्ब , अग्निमंथ , श्योनाक , पाटला , गम्भारी , शालिपर्णी , पृश्निपर्णी , बृहती , कण्टकारी एवं गोक्षुर।

" मीयतेऽनेनेति ' मानम् "

अर्थात् जिसके द्वारा पदार्थ को मापा या तोला जाये , उसे मान कहा जाता है।

" न मानेन बिना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित्। अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ॥ "

अर्थात् मान के ज्ञान के बिना रोगग्रस्त एवं स्वस्थ शरीर पर द्रव्यों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि औषध एवं आहार द्रव्यों की विभिन्न मात्राओं की कल्पना एक निश्चित मान में ही की जाती है तथा औषध के विभिन्न योगों में द्रव्यों का संयोग भी एक निश्चित मात्रा में होता है। अतः चिकित्सा में औषध एवं पथ्य के प्रयोग के लिए तथा औषध योग के निर्माण के लिए मान का ज्ञान अत्यावश्यक होता है। यथा : -

यदि सितोपलादि चूर्ण का प्रयोग 2-4 रत्ती की मात्रा में किया जाय तो उसका शरीर पर यथेष्ट प्रभाव नहीं हो पाता है। उसी प्रकार यदि लक्ष्मीविलास रस , समीरपन्नग रस का प्रयोग एक ग्राम से अधिक मात्रा में किया जाय जो इसका शरीर पर हानिकारक प्रभाव होता है।

2. अनुक्त या विशेषोक्त

भैषज्य कल्पना में अनुक्त या विशेषोक्त शब्दों का विशेष महत्व है , इसके लिए आचार्य शार्ङ्गधर में एक विशेष नियम निर्धारित किया है-

Ayurvedic Formulation

कालेऽनुक्ते प्रभातं स्यादङ्गेऽनुक्ते जटा भवेत्। भागेऽनुक्ते तु साम्यं स्यात्पात्रेऽनुक्ते मृन्मयम्।

द्रवेऽनुक्ते जलं ग्राह्यं तैलेऽनुक्ते तिलोद्भवम् ।। एकमप्यौषधं योगे यस्मिन्यत्पुनरूच्यते।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

मानतो द्विगुणं कार्यं तद्द्रव्यं तत्त्वदर्शिभिः ।। चूर्णस्नेहासवा लेहाः प्रायशश्चन्दनान्विताः।

+91 - 8319811628 , 8962265728

कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम् ॥

- औषध सेवन के समय का निर्देश नहीं होने पर **प्रातःकाल** ,
- द्रव्य के अङ्गविशेष का निर्देश नहीं होने पर **वनस्पति की जटा** ,
- औषधनिर्माण में औषधि की मात्रा का निर्देश नहीं होने पर वहाँ पर प्रत्येक औषधि को **समभाग** ,
- पात्रविशेष का निर्देश नहीं होने पर **मिट्टी का पात्र** ,
- भावना आदि के लिए द्रव द्रव्य का निर्देश नहीं होने पर **जल**,

- अनुक्त तैल के स्थान पर सामान्य नियमानुसार **तिल तैल** का ग्रहण करना चाहिए,
- इसके अतिरिक्त जिन औषधि योगों में एक औषध दो बार लिखी हुई हो तो उसे **दुगुनी मात्रा** में लेना चाहिए,
- चूर्ण , स्नेह , आसव एवं लेह में चन्दन का निर्देश होने पर **श्वेत चन्दन** तथा क्वाथ लेपादि के लिए चन्दन का निर्देश होने पर **रक्तचन्दन** का ग्रहण करना चाहिए ,
- इसी प्रकार मूत्र , घृत एवं दूध का स्पष्ट निर्देश नहीं होने पर **गोमूत्र , गोघृत एंव गोदुग्ध** का ग्रहण करना चाहिए ,
- लवण का स्पष्ट निर्देश नहीं होने पर **सैन्धव लवण** का ग्रहण करना चाहिए।

विशेषोक्त के क्रम में **" पञ्चकोल "** से पिप्पली , पिप्पलीमूल , चव्य , चित्रक और सोंठ - इन पाँच द्रव्यों की **एक - एक कोल** की मात्रा का ज्ञान हो जाता है।

3. औषधि द्रव्य की विशिष्टता

" बहुता तत्र योग्यत्वमनेकविध कल्पना। संपच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते ।। "

- औषधियाँ प्रभूतमात्रा में उपलब्ध ,
- औषधियों की रोगनाश में समर्थता ,
- एक औषधि में अनेक प्रकार की कल्पना की योग्यता होना
- औषधियों का रस , गुण आदि से युक्त होने पर ही भैषज्य निर्माण के लिए लिया जाना चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4. पञ्चविध कषाय कल्पना

कषाय

" कण्ठस्य कषणात् प्रायो रोगाणां वाऽपि कर्षणात्। कषायशब्दः प्राधान्यात् सर्वयोगेषु कल्प्यते ।। "

अर्थात् कण्ठ में लगने अथवा अवरोध पैदा करने से और रोगों का नाश करने के कारण सभी योगों में प्रधान रूप से कषाय शब्द का प्रयोग किया है। कषाय कल्पना औषध द्रव्य को नष्ट करने के बाद ही प्राप्त होती है। इन कषाय कल्पनाओं द्वारा ही औषधियों को सेवन योग्य बनाया जाता है।

भैषज्य कल्पना का मूल आधार स्वरस , कल्क , क्वाथ , हिम एवं फाण्ट (पंचविधकषाय कल्पना) है।

" पंचविधं कषायकल्पनमिति तद्यथा - स्वरसः कल्कः शृतः शीत : फाण्टः कषाय इति। तेषां यथापूर्व बलाधिक्यम् अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापेक्षिणी। "

कषाय कल्पनायें यथापूर्व बलवान् होती हैं अर्थात् फाण्ट से हिम , हिम से क्वाथ , क्वाथ से कल्क और कल्क से स्वरस बलवान् और गुरु होता है। ये कषाय कल्पनायें व्याधि और रोगी के बल पर निर्भर करती है। क्योंकि सभी कषाय कल्पनायें सभी रोगों में समान रूप से लाभकारी नहीं होती है। इस प्रकार भैषज्य कल्पना में पञ्चविध कषाय कल्पनायें ही मौलिक हैं। इनसे ही अन्य सभी कल्पनाओं का निर्माण किया जाता है।

5. द्रव्य स्थित रस , गुण , वीर्य , विपाक तथा प्रभाव

भैषज्य कल्पना का विकास वानस्पतिक द्रव्यों के साथ ही हुआ है। जिनके रस , गुण , वीर्य , विपाक और प्रभाव सिद्धान्त भैषज्य कल्पना के लिए अत्यन् महत्वपूर्ण है।

" द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च। पदार्थाः पञ्चतिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च ।। "

अर्थात् द्रव्य स्थित रस , गुण , वीर्य , विपाक और प्रभाव ये पाँचों ही द्रव्य में रहकर अपने - अपने कर्मों को करते हैं। यथा –

- मधुर अम्ल , लवण का कार्य वात दोष नाशक ,
- तिक्त , कटु , कषाय कफनाशक,
- कषाय , तिक्त पित्त का नाश करते हैं
- रूक्ष , लघु एवं शीत गुण वात वर्धक है ,
- तीक्ष्ण , उष्ण एवं लघु गुण पित्त वर्धक गए आदि

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

6. संस्कार (गुणान्तराधान)

" संस्कारो हि नाम गुणान्तराधानमुच्यते। ते गुणास्तोयाग्निसन्निकर्षशौचमन्थनदेशकालवासनभाव नादिभिः कालप्रकर्षभाजनादिभिश्चाधीयन्ते ।। "

संस्कार के द्वारा द्रव्यों में गुणान्तराधान अथवा अन्य गुणों की उत्पत्ति होती है। वहीं संस्कार द्रव्यों को शरीरोपयोगी एवं रोगनाशक बनाने में कारण है। द्रव्यों में विशिष्ट क्रियाओं के द्वारा गुणान्तराधान किया जाता है ,यथा : -

1) तोयसन्निकर्ष
2) अग्निसन्निकर्ष
3) शौच (शोधन)
4) मन्थन
5) देश
6) काल
7) वासन
8) भावना
9) कालप्रकर्ष
10) भाजन

7. औषध योगों का नामकरण

जिस औषध योग में सर्वप्रथम जिस द्रव्य का नाम होता है। वह औषध योग उसी द्रव्य के नाम से कहा गया है। यथा –

- द्रव्यानुसार - पुनर्नवादिमण्डूर , चित्रकादि वटीं
- कालानुसार - पुष्यानुग चूर्ण
- मात्रानुसार - क्षीरषट्पल घृत
- गुण एवं प्रभावानुसार - चन्द्रप्रभा वटी , आरोग्यवर्धिनी वटी

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मान प्रकरण (Concept Of Measurement)

मान की निरुक्ति

" मीयतेऽनेनेति मानम् "

अर्थात् जिसके द्वारा पदार्थ को मापा या तोला जाये , उसे मान कहा जाता है।

मान का प्रयोजन

" न मानेन बिना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित्। अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ॥ "

अर्थात् मान के ज्ञान के बिना रोगग्रस्त एवं स्वस्थ शरीर पर द्रव्यों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि औषध एवं आहार द्रव्यों की विभिन्न मात्राओं की कल्पना एक निश्चित मान में ही की जाती है तथा औषध के विभिन्न योगों में द्रव्यों का संयोग भी एक निश्चित मात्रा में होता है। अतः चिकित्सा में औषध एवं पथ्य के प्रयोग के लिए तथा औषध योग के निर्माण के लिए मान का ज्ञान अत्यावश्यक होता है। यथा : -

- यदि सितोपलादि चूर्ण का प्रयोग 2-4 रत्ती की मात्रा में किया जाय तो उसका शरीर पर यथेष्ट प्रभाव नहीं हो पाता है।
- यदि लक्ष्मीविलास रस , समीरपन्नग रस का प्रयोग एक ग्राम से अधिक मात्रा में किया जाय जो इसका शरीर पर हानिकारक प्रभाव होता है।

Ayurvedic Formulation

मान का वर्गीकरण

" मानं च द्विविधं प्राहुः कालिङ्गं मागधं तथा। कालिङ्गान्मागधं श्रेष्ठमेवं मानविदो विदुः ॥ "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91-8319811628 , 8962265728

अर्थात् **आचार्य शारंगधर** के अनुसार कालिङ्गमान और मागधमान भेद से मान को **दो प्रकार** का माना है , जिसमें कालिङ्गमान से मागधमान को सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया है।

मागधमान	कालिङ्गमान
➢ चरक के मान से समानता ➢ मागध (बिहार) प्रदेश मे अधिक प्रचलित ➢ चरकोक्त योगों के निर्माण मे अधिक प्रायोगिक ➢ कालिंग की तुलना मे श्रेष्ठ	➢ सुश्रुत के मान से समानता ➢ कालिंग (ओडिसा) प्रदेश मे अधिक प्रचलित ➢ सुश्रुत योगों के निर्माण मे अधिक प्रायोगिक

वैजंती कोशकार के अनुसार मान के **3 प्रकार** माने गए है –

पौतव मान	द्रुवय मान	पाय्य मान
➢ Measurement Of Weight ➢ For Solid Objects	➢ Measurement Of Capacity / Volume ➢ For Liquid Objects	➢ Measurement of Length ➢ For other Things (Distance)

पौतव मान

6 ध्वंशी = 1 मरीचि	**2 शुक्ति = 1 पल**
6 मरीचि = 1 रक्तसर्षप	**2 पल = 1 प्रसृति**
8 रक्तसर्षप = 1 तण्डुल	**2 प्रसृति = 1 कुडव**
2 तण्डुल = 1 धान्यमाष	**2 कुडव = 1 मानिका**
2 धान्यमाष = 1 यव	**2 मानिका = 1 प्रस्थ**
2 यव = 1 गुञ्जा (रत्ती)	**4 प्रस्थ = 1 आढ़क**
4 यव = 1 अण्डिका	**4 आढ़क = 1 द्रोण**
4 अण्डिका = 1 माषक	2 द्रोण = 1 शूर्प
3 माषक = 1 शाण	2 शूर्प = 1 खारी
2 शाण = 1 कोल	32 शूर्प = 1 वाह
2 कोल = 1 कर्ष (तोला)	**100 पल = 1 तुला**
2 कर्ष = 1 शुक्ति	

द्रुवय मान

8 बिन्दु = 1 शाण

32 बिन्दु = 1 शुक्ति

64 बिन्दु = 1 पाणि शुक्ति

शार्ङ्गधरोक्त चतुर्गुण सूत्र

" माषटङ्का क्षबिल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणी खारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य शार्ङ्गधर ने मागध मान को सामान्य रूप से समझने के लिए चतुर्गुण सूत्र का निर्देश किया है –

4 माष = 1 टङ्क (शाण)	4 प्रस्थ = 1 आढ़क
4 टङ्क = 1 अक्ष (कर्ष)	4 आढ़क = 1 राशि (द्रोण)
4 अक्ष = 1 बिल्व (पल)	4 राशि = 1 गोणी
4 बिल्व = 1 कुड़व (अञ्जलि)	4 द्रोणी = 1 खारी (गोणी)
4 कुड़व = 1 प्रस्थ	

शार्ङ्गधर के अनुसार मानों के पर्यायवाची शब्द

मान	शा . के अनुसार पर्याय
माषक	हेंम , धान्यक
शाण	टंक ,कला , निष्क , धरण
कोल	वटक
कर्ष / तोला	पाणि , पाणितल , अक्ष , पिचु , विडालपदक
शुक्ति	अर्धपल , अष्टमिका
पल	मुष्टि , प्रकुञ्च , षोडशी , बिल्व
कुडव	अर्धशराव , अष्टमान , अंजलि
मानिका	शराव , अष्टपल

सामान्य उपयोगी मान के परस्पर सम्बन्ध

मान	परस्पर सम्बन्ध
1 रत्ति	125 मिलीग्राम
12 माशा	1 तोला
1 तोला	12 ग्राम
5 तोला	1 छटाक
4 छटाक	1 पाव
4 पाव	1 सेर
2 कोल	1 तोला
1 पल	4 तोला
1 प्रसृत	8 तोला
1 प्रष्थ	64 तोला
1 आढ़क	256 तोला
1 द्रोण	4 आढ़क
1 तुला	100 पल

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Modern Metric System Of Measurements

- 1 Ounce = 28 Gram
- 1 Grain = 60 Mili Gram
- 1 Gram = 16 Grain (1 Masha)
- 1 Pound = 454 Gram (2.2 Pound = 1 KG).
- 1 Decagram = 10 Gram
- 1 Hectogram = 100 Gram
- 1 Kilogram = 1000 Gram
- 1 Quintal = 1000 Kg
- 1 Metric ton = 10 Quintal

Modern Metric System Of Measurements

- 1 Meter = 39.37 Inch
- 1 Inch = 2.5 Cm
- 1 Foot = 30 Cm/ 12 Inch
- 1 Yard = 3 Foot
- 1 Phalang = 220 yard
- 8 Phalang = 1 Mile
- 1 Mile = 1.609 Km
- 1 Kilometer = 1000 Meter
- 1 Pint = 0.6 Liter
- 1 Gallon = 4.5 Liter

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

शुष्क एवं आर्द्र द्रव्य ग्राह्य नियम

" शुष्कद्रव्यस्य या मात्रा आर्द्रस्य द्विगुणा हि सा। शुष्कस्य गुरुतीक्ष्णत्वात्तस्मादर्धं प्रयोजयेत्॥ "

अर्थात् औषध निर्माण में द्रव्य शुष्क एवं नवीन ही लेना उपयोगी रहता है किन्तु जहाँ पर आर्द्र एवं ताजा द्रव्य के प्रयोग से औषध निर्माण करना हो तो वहाँ पर आर्द्र द्रव्य शुष्क द्रव्य से दुगुनी मात्रा में लेना चाहिए। क्योंकि शुष्क द्रव्य गुरु एवं तीक्ष्ण वीर्य बहुल होते है।

इस नियम के **अपवाद** स्वरूप ग्रन्थों में कुछ ऐसे द्रव्य भी बताये हैं , जिन्हें हमेशा आर्द्र ही ग्रहण करना चाहिए , किन्तु उन्हें द्विगुण मात्रा में नहीं लेना चाहिए। यथा –

सामान्य नियम के विरूद्ध गुडूची , कुटज , वासा , कूष्माण्ड , शतावरी , अश्वगंधा , हरीतकी , पुनर्ववा , विदारी , इन्द्रवारूणी , पलङ्कषा , छत्रा , केतकी , मांस , गुग्गुलु , हिङ्गु , आर्द्रक , ईक्षुगण , घृतकुमारी , अतिबला , पलाश , महाबला , गोरखमुण्डी , चौलाई आदि द्रव्यों को हमेशा ताजा लेने एवं द्विगुण मात्रा में नहीं लेने का विधान आचार्यों ने किया है।

शार्ङ्गधर संहिता में आर्द्र एवं द्रव द्रव्य को द्विगुण लेने में विशेष नियम प्रतिपादित किया है। यथा –

- **एक रत्ती से कुडव तक** सभी द्रव , आर्द्र या शुष्क द्रव्यों का मान निर्दिष्ट मात्रा के अनुसार ही लेना चाहिए अर्थात् किसी औषध योग में किसी द्रव्य की मात्रा गुञ्जा , माषा , शाण , कोल , कर्ष , पल , या कुडव में तो उनको **निर्दिष्ट मात्रा** में ही ग्रहण करना चाहिए।
- यदि द्रव्य **प्रस्थादि मान से तुला के पूर्व तक** के मान में निर्दिष्ट हो तो द्रव्य (द्रव द्रव्य हो या आर्द्र द्रव्य हो) को **द्विगुण मात्रा** में लेना चाहिए।

नवीन एवं पुरातन द्रव्य ग्राह्य नियम

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" सर्वाण्येव चाभिनवानि अन्यत्र मधुघृतगुड़पिप्पलीविडङ्गेभ्यः॥ " (सु . सू . 36/7)

अर्थात् आचार्य सुश्रुत एवं शार्ङ्गधर ने सम्पूर्ण प्रकार के द्रव्यों को नवीन ही लेने का निर्देश दिया है। किन्तु विड़ङ्ग , पिप्पली , गुड़ , मधु और घी को पुरातन ही लेने का स्पष्ट निर्देश किया है।

औषध द्रव्यों की ग्राह्यग्राह्यता

ग्राह्य द्रव्य	अग्राह्य द्रव्य
1) द्रव्य के जिस अङ्ग (भाग) में वीर्य होता है , उसी अङ्गविशेष का ग्रहण कर चिकित्सा में प्रयोग करना चाहिए। ➢ सभी आर्द्र एवं नवीन द्रव्य वीर्यवान् होते हैं ➢ सभी शुष्क औषध द्रव्य मध्यम वीर्य ➢ सभी जीर्ण औषध द्रव्य निर्वीर्य या निष्फल होते हैं।	**1)** द्रव्य के जिस अङ्ग (भाग) में वीर्य नहीं होता है , उस अङ्गविशेष का ग्रहण चिकित्सा में नहीं करना चाहिए।
2) जो औषध द्रव्य विकृत गन्ध वाला नहीं हो एवं स्वाभाविक रस गुण आदि से परिपूर्ण हो , तो वह द्रव्य नवीन या पुरातन कैसा भी हो उसको ग्रहण कर लेना चाहिए।	**2)** दुर्गन्धित एवं निर्वीर्य औषध द्रव्यों का चिकित्सा में कभी भी प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।
3) चिकित्सक द्वारा औषध द्रव्यों के गण में कहे गए द्रव्य के नहीं होने पर भी यदि रोगशमन में उपयोगी हो तो उस द्रव्य का ग्रहण कर लेना चाहिए।	**3)** चिकित्सक द्वारा औषध द्रव्यों के गण में कहे गए द्रव्य जो रोगी का रोग शमन करने में अनुपयुक्त हो उस द्रव्य का भी ग्रहण नहीं करना चाहिए।
4) देवालय , कुँआ , मार्ग एवं श्मशान भूमि में उत्पन्न ना हो, सही काल मे उत्पन्न हो , एवं वृक्ष के मूल के पास उसके सामान्य आकार मे जल , अग्नि उपलब्ध हो एवं कीड़े आदि से खराब ना हुई हो उन औषधियों का ग्रहण करना चाहिए।	**4)** देवालय , कुँआ , मार्ग एवं श्मशान भूमि में उत्पन्न , अकाल एवं वृक्ष के मूल के पास उत्पन्न अपने सामान्य आकार से कम या अधिक , जल , अग्नि एवं कीड़े आदि से खराब हुई औषधियों का ग्रहण नहीं करना चाहिए।
5) साधारण देश की उत्तरदिशा में उत्पन्न औषध द्रव्य का ग्रहण करना चाहिए क्योंकि वहाँ पर उत्पन्न औषध द्रव्य विशेष रूप से अपने गुणों से परिपूर्ण होते हैं।	**5)** साधारण देश के अतिरिक्त औषध द्रव्य का ग्रहण करने से वह औषध द्रव्य विशेष रूप से अपने गुणों से परिपूर्ण नहीं होती हैं।
6) प्राणिज द्रव्य रक्त , केश , नख , अस्थि , मांस , वसा और शुक्र द्रव्य युवा पशुओं के शरीर से ग्रहण करने चाहिए।	**6)** प्राणिज द्रव्य रक्त , केश , नख , अस्थि , मांस , वसा और शुक्र द्रव्य युवा पशुओं के शरीर के अतिरिक्त से ग्रहण करने से उपरोक्त गुणयुक्त नहीं होती है।
7) दूध , मूत्र , मल इन द्रव्यों को पशुओं का आहार पच जाने पर ग्रहण करना चाहिए।	**7)** दूध , मूत्र , मल इन द्रव्यों को पशुओं का आहार पचने के पूर्व या पश्चात ग्रहण करने से उपरोक्त दोषों से युक्त होती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सवीर्यता अवधि (Shelf Life)

INTRODUCTION –

- Ayurvedic therapeutic system includes various types of dosage forms , depending upon the consistency and shelf life , such as vati , churna **(as solid dosage forms)** ; Swarasa , asava ,arishta, kashaya , hima **(as liquid dosage form)** and kalka , avaleha **(as semi- solid dosage form)** .
- In Ayurvedic literatures , **Saviryata avadhi '** term is mentioned in context of the time period during which the virya guna of any drug remains unaffected due to environmental / microbial deterioration .
- Acharya Sharangadhara , first mentioned about Saviryata Avadhi of various formulations that is known as **Shelf life , expiry date or stability in the modern system of medicine** .
- Saviryata avadhi of a formulation depends upon three main things i.e.
  - **Ingredients ,**
  - **Preparation &**
  - **Form**

सिद्ध आषाधया का काल व्यतीत हो जाने पर गुणहीनता -

गुणहीनं मासद्वयात्तथा भवेद्वर्षाव चूर्ण तद्रूपमौषधम् । मासद्वयात्तथा भवेद्वर्षाव चूर्ण हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ॥५१ ॥

हीनत्वं गुटिकालेही लभेते वत्सरात्परम् । हीना : स्युर्घृततलाद्याश्चतुर्मासाधिकात्तथा ॥५२ ॥

ओषध्यो लघुपाका: स्युर्निर्वीर्या वस्तरात्परम् । पुराणा : स्युर्गुणर्युक्ता आसवा धातवो रसा: ॥ ५३ ॥

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- जंगल से लाई काष्ठौषधियां (Medicinal recipes) एक वर्ष के बाद गुणहीन हो जाती हैं ,
- दो माह बीतने पर चूर्ण (Powder) हीनवीर्य अर्थात् गुण में न्यून (Less) हो जाता है ,
- गुटिका (गोली) (Pills) और लेह (confections) एक वर्ष के बाद गुण में कम हो जाते हैं ,
- घृत और तेल (oil) १६ मास (Month) के बाद गुणहीन हो जाते हैं ,
- जिन द्रव्यों (गेहूं , जौ , चना आदि) के दाने खेत में अच्छी तरह नहीं पकते हैं वे एक वर्ष के बाद तत्वविहीन हो जाते हैं,
- किन्तु आसव (Fermented Liquors) , धातु (Metal) एवं रस (Mineralrecipes) औषधियां जितनी पुराने होते जाते हैं , उतने ही उत्तम (more Potent) हो जाते हैं ।

आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार विभिन्न कल्पनाओ की सवीर्येता अवधि

कल्पना का नाम	सवीर्यता अवधि
स्वरस , वस्ति , फांट	सद्य : प्रयोग
कल्क , क्वाथ , कवल , हिम , पेया , विलेपि , यवागू , लेप , क्षीर , तक्र , दधि	1 दिन
लाक्षारस	1 सप्ताह
सक्तु	1 माह
चूर्ण / मंजन	2 माह
शाकर / खण्ड कल्पना	4 माह
अम्ल / कांजी कल्पना	6 माह
क्षार कल्पना/ क्षार सूत्र	4-6 माह / 01 साल
घृत पाक	16 माह
तैल पाक	16 माह
वटी , मोदक , गुग्गुलु , अवलेह , रसक्रिया , अर्क , अंजन , लवण , सत्व , लघु पाक ,औषधि	01 वर्ष / सवत्सर
आसव आरिष्ट , पर्पटी , पोटली , भस्म , रस औषधि (वर्तमान समय में अधिकतम 10 साल API के अनुसार)	**पुराणा : स्युगुणरयुक्ता** (जितनी पुरानी उतनी गुणवान)

Shelf Life of Different Dosage Forms of Ayurveda as Per Gazette of India 2016

कल्पना का नाम	सवीर्यता अवधि
चूर्ण , क्वाथ चूर्ण , लेप चूर्ण	2 साल
घृत , दन्त मंजन पाउडर / पेस्ट , वर्ती , श्वेतपर्पटी	2 साल
Ear nasal drops	2 साल
खण्ड (Granules) , धूपन (Inhallles)	2 साल
अर्क कल्पना	1 साल
अवलेह (चवनप्राश), तेल (बला तेल आदि)	3 साल
Capsules with Soft gel / hard gel containing Kastha - aushadhi and Rasa Bhasma	3 साल
Syrup oral and liquid forms	3 साल
Tablets / Pills (गुटिका / वटी) Containing only Kastha aushadhi	3 साल
Tablets / Pills (गुटिका / वटी) Containing Kastha aushadhi and Rasa / Bhasma / Guggulu	5 साल
Tablets / Pills (गुटिका / वटी) Containing only Rasa / Bhasma except Naga / Vanga / Tamra	10 साल
लवण	5 साल

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

क्षार	5 साल
घन वटी (गिलोय घन वटी)	5 साल
नाग / वंग / ताम्र भस्म (lead / Tin / Cupper Bhasma)	5 साल
आसव आरिष्ट	10 साल
कपिपक्व रसायन , पर्पटी , पोटली , भस्म , मंडूर , लौह आदि	10 साल
समस्त रस औषधि / भस्म / पिष्ठी , (स्वर्ण , रजत , अभ्रक आदि केवल नाग / वंग / ताम्र भस्म को)	10 साल

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

औषध द्रव्य संग्रह

आचार्य चरक के अनुसार संग्राह्य द्रव्य का स्वरूप सामान्यतः इस प्रकार होना चाहिए -

- **' यानि कालजातानि ' -** जो द्रव्य अपने काल में समय से उत्पन्न हुए हो।
- **' आगतसम्पूर्णरसप्रमाणगन्धानि ' -** जिनमें पूर्ण रसागम हो गया हो , पूरे आकार प्रकार और मोटाई में आ गया हो , सम्पूर्ण गन्ध से युक्त हो।
- **' कालातपाग्निसलिलपवनजन्तुभिरनुपहतम् ' -** काल , आतप , अग्नि , जल , पवन , जन्तु आदि के द्वारा नष्ट न हो।
- **' गन्धवर्णरसस्पर्शप्रभावाणि प्रत्यग्राणि -** गंध , वर्ण , रस , स्पर्श प्रमाणवत् उपस्थित हो।
- **' उदीच्यां दिशि स्थितानि'-** पूर्वमुख या उत्तरमुख होकर ग्रहण करना चाहिए।

औषध संग्रह विधि

आचार्य शारंगधार अनुसार :-

सभी प्रकार की औषधियाँ चिकित्सक द्वारा प्रसन्न चित्त होकर , मनसा - वाचा पवित्र होकर , प्रातःकाल , शुभ दिन , सूर्य की ओर मुख करके मौनधारण कर और हृदय में भगवान शिव को प्रणाम कर संग्रहण करनी चाहिए।

आचार्य चरक अनुसार:-

" मङ्गलाचारः शुचिः शुक्लवासा सम्पूज्य देवहा आश्विनौ गोब्राह्मणांश्च प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा गृहणीयात् ॥ "

अर्थात् मंगलाचार करते हुए , पवित्र होकर , शुक्लपक्ष , देवता - अश्विनीकुमार , गाय , ब्राह्मण की पूजा करके पूर्व या उत्तर दिशा में मुख करके औषधियों को संग्रहण हेतु उखाड़ना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कारण :-

- उत्तर दिशा हिमालय की ओर संकेत करती है तथा उत्तर दिशा के दिक्पाल चन्द्रमा को बताया गया है जो औषधि के अधिपति माने गये हैं।
- पूर्व दिशा के स्वामी सूर्य है जो औषधि में शक्तिसंचार करते हैं।

द्रव्य संग्रहकाल

जिन औषधिद्रव्य का प्रयोग किया जाता है उनके प्रयोज्य अंग , ऋतु , वीर्यता आदि का विचार करके निश्चित काल में द्रव्यों का संग्रह करते हैं।

(1) प्रयोज्य अङ्गानुसार द्रव्य संग्रह :-

द्रव्यों के विभिन्न प्रयोज्य अंग का चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। जिस समय वह अङ्ग पूर्ण परिपाक तथा विकास की चरम सीमा पर हो तभी उस अङ्ग का अहण करना चाहिए। **आचार्य चरक** ने निम्न द्रव्यों के संग्रह का काल बताया है :-

प्रयोज्य अंग	ऋतुकाल
त्वक् , कन्द , क्षीर	शरद् (TKKS)
मूल	ग्रीष्म , शिशिर (जब पत्र झड़ गये हों अथवा गिर कर नये निकले हों) (MGS)
शाखा , पत्र	वर्षा ,वसंत (जब विकास की प्रौढ़ावस्था में हो) (SPVV)
सारभाग	हेमन्त ऋतु
पुष्प , फल	यथाऋतु (जिस ऋतु में पुष्प खिलें तथा फल परिपक्व हों उसमें)

(2) वीर्य नुसार द्रव्य संग्रह :-

1) **आग्नेय (उष्णवीर्य) :-**
   - द्रव्य आग्नेय ऋतुओं (आदानकाल) में तथा आग्नेय भूमि चाहिए।
   - इससे उनमें कटु , रूक्ष , उष्ण आदि गुण अधिक होते हैं।
   - उष्णवीर्य द्रव्य विन्ध्यप्रदेश से लेना चाहिए।

2) **सौम्य (शीतवीर्य):-**
   - ओषधियाँ सौम्य ऋतुओं (विसर्गकाल) तथा सौम्य भूमि में उत्पन्न लेनी चाहिए।
   - ऐसो लेने से इनमें मधुर , स्निग्ध , शीत आदि गुण विशिष्ट होते हैं।
   - शीतवीर्य द्रव्य हिमालय प्रदेश से लेना चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

(3) कर्म अनुसार द्रव्य संग्रह :-

1) सर्व कर्म के लिए - **शरद् ऋतु**
2) वमन कर्म - **वसन्त ऋतु**
3) विरेचन कर्म - **वसन्त ऋतु**

4) द्रव्यों के अवयवों का संग्रहण :-

1) फल : - त्रिफला , दाडिम , सुपारी , मरिच , पिप्पली , विडंग , मदनफल।
2) कन्द : - हरिद्रा , आर्द्रक ,
3) पत्र : - तालीश , रास्ना , सनाय , तुलसी , पटोल , वासा , तेजपत्र।
4) क्षीर :- अर्कक्षीर , स्नुहीक्षीर , वटक्षीर।

औषध द्रव्य संरक्षण (Preservation of Aushadhi dravya)

(1) शुष्क विधि (Dry preservation)

- संग्रहीत द्रव्यों को जलशोषक पेपर (Blotting paper) के बीच दबाकर खा जाता है जिससे उनका जलीयांश शोषित हो जाता है किन्तु आकार वैसे ही रहता है। इस प्रकार द्रव्य चिरकाल तक रहते हैं और उससे द्रव्य का परिचय (Identification) प्राप्त हो सकता है।
- इस प्रकार से यदि अच्छी तरह न सूखे तथा जलीयांश उसमें रह गया हो तब थोड़ी देर धूप में सुखा लेना चाहिए , पूर्णत: सूख जाने के बाद पृथक् कागज पर लगाकर चिपकाकर प्लास्टिक की थैली में काच की फ्रेम बनाकर सुरक्षित रखना चाहिए (Herbarium sheets) .

(2) आद्र विधि (Wet preservation)

- औषधि को पूर्णरूप में पञ्चाङ्ग सहित फार्मेलन के 5- 10 विलयन में रखकर काच के आच्छादित पात्र में रख दिया जाता है। इससे द्रव्य सालों तक बिगड़ने नहीं पाते। आवश्यकतानुसार विलयन बदलते रहना चाहिए।
- ग्लीसरीन में औषधिद्रव्य रखने से मूल रंग में वे वर्षों तक रहते हैं।
- यह संरक्षण केवल प्रदर्शन प्रयोजनार्थ और संग्रहालय में संग्रह हेतु- परिचय हेतु ही उपयोगी है , क्योंकि इन औषधियों का शरीर पर प्रयोग नहीं हो सकता।
- आभ्यंतर प्रयोगार्थ द्रव्यों को सुरक्षित रखना है तो मधु , तैल , घृत एवं कॉजी में पूर्णतया दुबोकर रखना चाहिए।
- आजकल Air tight इब्बों में सुरक्षित रखा जाता है।

Ayurvedic Formulation

भेषजागार

द्रव्यों का संग्रह करने के बाद उनका संरक्षण विधिपूर्वक होना चाहिए अन्यथा दूषित होने के कारण वह प्रयोग के योग्य नहीं रहेंगे इसीलिए औषधिद्रव्य का संग्रह करने के बाद उनका व्यवस्थित संरक्षण करने के लिए एक स्वतन्त्र भेषजागार की आवश्यकता होती है तथा संग्रहीत किये हुए द्रव्य योग्य पात्र में रखकर भेषजागार में रखना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91-8319811628 , 8962265728

{ **Note -** योग्य पात्र में रखने का कारण यह है कि धातु के पात्र की रासायनिक क्रिया इसमें न हो। मिट्टी या काँच के पात्र में औषधिद्रव्य रखनी चाहिए। }

1) भेषजागार पूर्व और उत्तर की ओर द्वारवाला होना चाहिए।
2) वायु का संचार अनुकूल हो , अधिक झोंका न आता हो।
3) निरंतर पुष्पोपहार , गंध , धूप , बलिकर्मादि से उसकी शुद्धि होती रहनी चाहिए।
4) अग्नि , वर्षा , धूप , जन्तु , चूहे , चौपाये आदि प्राणियों का प्रवेश अथवा सम्पर्क न हो।
5) निम्बपत्र के समान जन्तुनाशक एव कृमिघ्न द्रव्य से आच्छादन करके स्वच्छ पात्र में द्रव्य रखने चाहिए।

औषध मात्रा

औषध का प्रयोग उचित मात्रा में करने पर ही चिकित्सा में सफलता प्राप्त की जा सकती है। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में औषध की मात्रा रोगी के बल , काल , अग्नि , आयु प्रकृति , देश एवं दोषों का विचार कर निर्धारित करने का निर्देश किया है।

शार्ङ्गधर संहिता में औषधि की मात्रा का निर्देश करते हुए कहा गया है :-

- 16 से 70 वर्ष तक - पूर्ण मात्रा (16 माशा)
- 4 वर्ष के बालक के लिए – ¼ मात्रा (4 माशा)
- 8 वर्ष के बालक के लिए - ½ मात्रा (8 माशा)
- 12 वर्ष के बालक के लिए – ¾ मात्रा (12 माशा)

शिशुओं में औषधियों की मात्रा : -

एक महीने के शिशु को - **1 रत्ती** (125mg) मधु , दूध , मिश्री या घृत के साथ चटानी चाहिए , फिर **प्रत्येक माह एक - एक रत्ती** बढ़ाते हुए **1 साल** के शिशु को **12 रत्ती** (1.5 g) तक औषध चटानी चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

औषध सेवन काल

औषधियों को सेवन कराने से पूर्व चिकित्सक को रोग , रोगी एवं औषध द्रव्य के बलाबल के आधार पर औषध सेवन काल का ज्ञान रखना अत्यन्त आवश्यक होता है, क्योंकि रोगी का रोग निवारण करने के लिए उचित समय पर औषध का प्रयोग करने पर ही लाभ मिलता है।

- **अभक्त** – प्रातः काल सूर्योदय के समय भूखे पेट औषध का सेवन करना
- **प्राग्भक्त** – औषध खिलाकर बाद मे अन्न का सेवन करना
- **अधोभाकत** – भोजन के तुरंत बाद औषध सेवन
- **मध्यभक्त** – आधा भोजन करके औषध सेवन बाद मे फिर आधा भोजन
- **अंतराभक्त** – प्रातः काल मे भोजन के जीर्ण हो जाने पर दोपहर मे औषध सेवन
- **सभक्त** – औषध को पके हुए अन्न या अन्न के साथ पकाकर दि जाए
- **सामुद्र** – भोजन के प्रारंभ एवं अंत मे
- **मुहुर्मुहु** – औषध को भोजन के लेने या न लेने (खाली पेट) पर बार – बार
- **सग्रास** – प्रत्येक ग्रास या कुछ ग्रास के साथ
- **ग्रासान्तर** – औषध को दो ग्रासो के मध्य मे सेवन
- **निशि** – औषध को रात्रि मे सोते समय सेवन करना

आचार्य सुश्रुत ने औषध सेवन के दश कालों का निर्देश दिया है –

Ayurvedic Formulation

" तत्राभक्तं प्राग्भक्तमधोभक्तं मध्येभक्तमन्तराभक्तं सभक्तं सामुद्द्रं मुहुर्मुहुर्ग्रासं ग्रासान्तरं चेति दशौषधकालाः ॥"

अभक्त	प्राग्भक्त	अधोभक्त	मध्येभक्त
अन्तराभक्त	सभक्त	सामुद्र	मुहुर्मुहु
सग्रास	ग्रासान्तर		

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य शार्ङ्गधर ने औषध सेवन के पाँच कालों का निर्देश दिया है –

1) सूर्योदय के समय
2) दिन के भोजन के समय
3) सायंकाल के भोजन के समय
4) पुनः पुनः औषध सेवन
5) रात्रि के समय

आचार्य चरक ने औषध सेवन के दश कालों का निर्देश दिया है –

1) **बलवान रोगी** में निरन्न **प्रातः काल** एवं दुर्बल रोगी को लघु तथा पथ्य अन्न में मिलाकर प्रातः काल
2) **अपानवायु** विकार में **भोजन के पूर्व**
3) **समानवायु** विकार में **भोजन के मध्य**
4) **व्यान वायु** विकार में **प्रातः भोजन के बाद**
5) **उदान वायु** विकार में **सायं भोजन के बाद**
6) **प्राण वायु** विकार में **ग्रास के साथ**
7) **प्राणवायु** विकार में **ग्रासान्तर सेवन**
8) **श्वास , कास पिपासा में बार - बार**
9) **हिक्का विकार** में भोजन से पूर्व एवं भोजन के अन्त में अर्थात् **सामुद्ग**
10) **अरुचि** विकार में विविध प्रकार के विचित्र आहार **द्रव्यों के साथ** हितकर

क्र .	आचार्य चरक (10)	आचार्य सुश्रुत (10)	अष्टांग संग्रह (11)	अष्टांग हृदय (10)
1.	अभक्त	अभक्त	अभक्त	अभक्त (अनन्न)
2.	प्राग्भक्त	प्राग्भक्त	प्राग्भक्त	प्राग्भक्त (अन्नादौ)
3.	प्रातः अधोभक्त सायं अधोभक्त	अधोभक्त	अधोभक्त	अधोभक्त (अन्न अंते)
4.	मध्येभक्त	मध्येभक्त	मध्येभक्त	मध्येभक्त (अन्न मध्ये)
5.	-	अन्तराभक्त	अन्तराभक्त	-
6.	सभक्त	सभक्त	सभक्त	सभक्त (सन्नम्)
7.	सामुद्ग	सामुद्ग	सामुद्ग	सामुद्ग
8.	मुहुर्मुहु	मुहुर्मुहु	मुहुर्मुहु	मुहुर्मुहु
9.	सग्रास	सग्रास	सग्रास	सग्रास (ग्रासे ग्रासे)
10.	ग्रासान्तर	ग्रासान्तर	ग्रासान्तर	ग्रासान्तर (कवलान्तर)
11.			निशि (रात्रि)	निशि (रात्रि)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अनुपान

परिभाषा :- **" अनु - पश्चात् सह वा पीयते इति अनुपानम् ।। "**

अर्थात् औषध एवं आहार के साथ अथवा उसके सेवन के पश्चात् जिस द्रव पदार्थ का पान किया जाता है , उसको अनुपान कहते हैं तथा चिकित्सक द्वारा रोगोक्त अनुपान के साथ प्रयोग करने पर औषधियाँ अत्यधिक गुणवान हो जाती है।

अनुपान प्रयोजन :-

" यथा तैलं जले क्षिप्तं क्षणेनैव प्रसर्पति। अनुपान बलादङ्गे तथा सर्पति भेषजम् ।। "

अर्थात् जिस प्रकार जल के ऊपर तैल की बूँद डालने पर अतिशीघ्र फैल जाती है। उसी प्रकार औषधि का सेवन अनुपान के साथ करने पर शीघ्रता से शरीर में फैलकर बल प्रदान करती है।

अनुपान की उपयोगिता :-

" अनुपानं हितं युक्तं तर्पयत्याशु मानवम्। सुखं पचति चाहारमायुषे च बलाय च ।। "

सम्यक् रूप से अनुपान का सेवन करने से औषध एवं आहार का पाचन होकर मनुष्य तृप्त हो जाता है। जिससे बल एवं आयु की वृद्धि हो जाती है।

अनुपान के लाभ :-

1) **तर्पयति -** तृप्ति
2) **प्रीणयति -** शारीरिक धातुओं का प्रीणन
3) **ऊर्जयति -** ऊर्जा की प्राप्ति
4) **बृहयति -** बृहण
5) **भुक्तमवसादयति** - खाये हुए अन्नादि पदार्थ को आमाशय से नीचे धकेलना ,
6) **अन्नसंघात भिनत्ति** - अन्नसंघात
7) **मार्दवमा पादयति** - भोजन में मृदुता
8) **क्लेदयति -** क्लेदन
9) **जरयति** - पचाना
10) **सुखपरिणामिताशुव्यवायितां -** भोजन पचने के पश्चात् शीघ्र चारों तरफ फैलने योग्य बनाना।

जो द्रव पदार्थ औषध एवं आहार द्रव्यों के गुणों से विपरीत गुण वाला हो , किन्तु वह धातुओं का विरोधी नहीं हो , वह औषध एवं आहार द्रव्यों का उचित अनुपान होता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+ 91 - 8319811628 , 8962265728

उत्तम अनुपान :-

- **वातज विकारों -** स्निग्ध - उष्ण ,
- **पित्तज विकारों -** मधुर - शीतल ,
- **कफज विकारों -** रूक्ष - उष्ण
- **धातु क्षयज विकारों -** मांसरस
- **कृश व्यक्तियों -** सुरा
- **स्थूल व्यक्तियों -** मधुमिश्रितजल
- **मन्दाग्नि , अनिद्रा , तन्द्रा , शोक , भय -** मद्य

अनुपान मात्रा :- चूर्ण , अवलेह , गुटिका और कल्कों का अनुपान –

1) **वातरोग में -** तीन पल।
2) **पित्तरोग में -** दो पल।
3) **कफरोग में -** एक पल।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पंचविधकषाय कल्पना

पंचविधकषाय कल्पना ⟶ **पंचविध** + **कषाय** + **कल्पना**

- **पंचविध -** पाँच तरह की
- **कषाय - कण्ठस्य कषणात् प्रायो रोगाणां वाऽपि कर्षणात्। कषायशब्दः प्राधान्यात् सर्वयोगेषु कल्प्यते॥**

  अर्थात् कण्ठ में लगने अथवा अवरोध पैदा करने से और रोगों का नाश करने के कारण सभी योगों में प्रधान रूप से कषाय शब्द का प्रयोग किया है। कषाय कल्पना औषध द्रव्य को नष्ट करने के बाद ही प्राप्त होती है। इन कषाय कल्पनाओं द्वारा ही औषधियों को सेवन योग्य बनाया जाता है।
- **कल्पना** - इसका अर्थ उस प्रक्रिया से लिया जाता है जिसके द्वारा किसी द्रव्य या वस्तु में विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने के लिए शक्ति उत्पन्न की जाती है, उसे कल्प या कल्पना कहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- चरक सूत्रस्थान - 4
- शा. स.मध्य.खंड.1

" पञ्चविधं कषायकल्पनमिति तद्यथा - स्वरसः , कल्कः , शृतः , शीतः , फाण्टः कषाय इति। तेषां यथापूर्वम् बलाधिक्यम् अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापे क्षिणी न त्वेवं सर्वाणि सर्वत्रोपयोगिनी भवन्ति॥ "

अर्थात् स्वरस , कल्क , शृत (क्वाथ) , शीत (हिम) और फाण्ट पाँच प्रकार की कषाय कल्पनाएँ होती हैं तथा ये कषाय कल्पनाएँ यथापूर्व गुरु होती है। अतः इन कषाय कल्पनाओं का प्रयोग व्याधि एवं रोगी के बल पर निर्भर करता है, क्योंकि पञ्चविध कषाय कल्पनाएँ सम्पूर्ण रोगों में समान रूप से उपयोगी नहीं होती है।

चरक अनुसार - स्वरस > कल्क > क्वाथ > हिम > फाण्ट

सुश्रुत अनुसार - क्षीर > स्वरस > कल्क > क्वाथ > हिम > फाण्ट

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91- 8319811628 , 8962265728

क्र.	कषाय कल्पना	आचार्य	भेद
1.	पंचविध (5)	चरक, वाग्भट्ट, शांगर्धर	स्वरस, कल्क श्रृत, शीत, फाण्टा
2.	षडविध **(6)**	**सुश्रुत**	स्वरस, कल्क, श्रृत, शीत, फाण्ट + **क्षीर**
3.	सप्तविध **(7)**	**काश्यप**	स्वरस, कल्क, क्वाथ, शीत फाण्ट + **चूर्ण, अभिसव**

द्रव्यों के वीर्यानुसार कल्पना -

(1) **जलीयांश** की अधिकता होने पर - **स्वरस / क्वाथ** कल्पना

(2) **पार्थिवांश** की अधिकता होने पर - **चूर्ण** कल्पना

(3) **पार्थिव** + **जलीयांश** की अधिकता होने पर - **कल्क** कल्पना

(4) **सुगन्धि द्रव्य** के होने पर – कल्क , हिम , फाण्ट , चूर्ण ,वाटी आदि **(क्वाथ नहीं)**

पञ्चकषाय योनियाँ -

" पञ्चकषाययोनय इति मधुरकषायोऽम्लकषायः कटुकषायस्तिक्त कषायः कषायकषायश्चेति तन्त्रे संज्ञा "

पञ्च कषाय योनियों से पञ्चविध कषाय कल्पनाओं की उत्पत्ति मानी गयी है यथा -

1) मधुरकषाय योनि ,
2) अम्लकषाय योनि ,
3) कटुकषाय योनि ,
4) तिक्तकषाय योनि ,
5) कषायकषाय योनि

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

{ **Note -** लवण रस को छठी कषाय योनि नहीं मानी गयी है क्योंकि लवण रस पूर्ण रूप से जल मे मिल जाता है। }

स्वरस कल्पना (Expressed Juice)

पर्याय - **रस , स्वरस, निर्यास**

- यह कल्पना पंचविधकषाय कल्पना के अन्तर्गत **प्रथम** कल्पना है।
- **गुरु और बलवान** कल्पना है तथा इसकी **सवीर्यता अवधि - तत्काल** (सद्:) है।

परिभाषा -

" यन्त्रनिष्पीडिताद् द्रव्याद्रसः स्वरस उच्यते। " (च . सू . 4/7)

निर्माण विधि - अर्थात् द्रव्य को यन्त्र में निष्पीडन (दबाकर) कर निचोड़ने से जो रस निकलता है , उसे स्वरस कहते हैं।

1. **सामान्य विधि -** तुरन्त उखाड़ कर लाई हुई औषधि को कूटकर कपड़े से निष्पीडन (दबाकर) कर निचोड़ने से जो रस निकलता है , उसको स्वरस कहते हैं।

   उदाहरण - तुलसी पत्र स्वरस , आर्द्रक स्वरस

2. **अनुकल्प विधि -** शुष्क द्रव्य के चूर्ण को समानभाग / द्विगुण जल में डालकर अहोरात्र (24 घंटे) भिगोकर रखने व मसलकर वस्त्र से छान लेने से उत्तम रस प्राप्त होता है। इस विधि हेतु 24 घंटे की आवश्यकता होती है।

   उदाहरण - ब्राह्मी स्वरस

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3. **पुटपाक विधि -** कुछ ऐसे भी द्रव्य है , जिनके आर्द्र एवं ताजा होने पर भी कूटने पीसने से स्वरस नहीं निकलता है या कम निकलता है।

   उदाहरण - निम्बपत्र , वासापत्र , बिल्वपत्र , कुटज पत्र आदि।

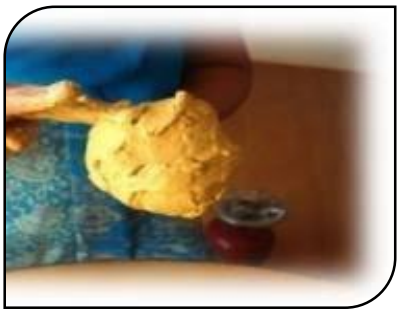

यदि द्रव्य आर्द्र हो तो उसको शिला पर पीसकर कल्क **(पिण्ड जैसा गोला)** बनाना चाहिए , यदि शुष्क द्रव्य है तो कपड़छान (महीन) चूर्ण कर उसमें थोड़ा जल मिलाकर पिण्ड जैसा गोला बना लेना चाहिए।

↓

अब उस गोल पिण्ड (कल्क) पर **वटपत्र , गम्भारी पत्र या जम्बूपत्रादि लपेटकर धागे से बाँध** देना चाहिए।

↓

फिर उस पर **गोधूम** (गेहूँ) के गूंथे हुए आटे का **एक अंगुल मोटा लेप** करे ,
फिर उस पर गीली चिकनी मिट्टी **(मुल्तानी मिट्टी)** का **दो अंगुल मोटा लेप** करना चाहिए।

↓

कुछ देर सुखाने के बाद वन्योपल (गोमयाग्नि) की **अग्नि में लालवर्ण** (अंगारवर्ण) होने तक **पाक** करें।

↓

तत्पश्चात् तुरन्त उस गोले को अग्नि से निकालकर मिट्टी , आटे एवं पत्र आदि को हटाकर गर्म कल्क को वस्त्र से निचोड़ने से स्वरस निकल आता है। पुट में (वन्योपल से) पकाये जाने पर ही स्वरस निकलता है , इसलिए इसे **पुटपाक विधि** कहते हैं।

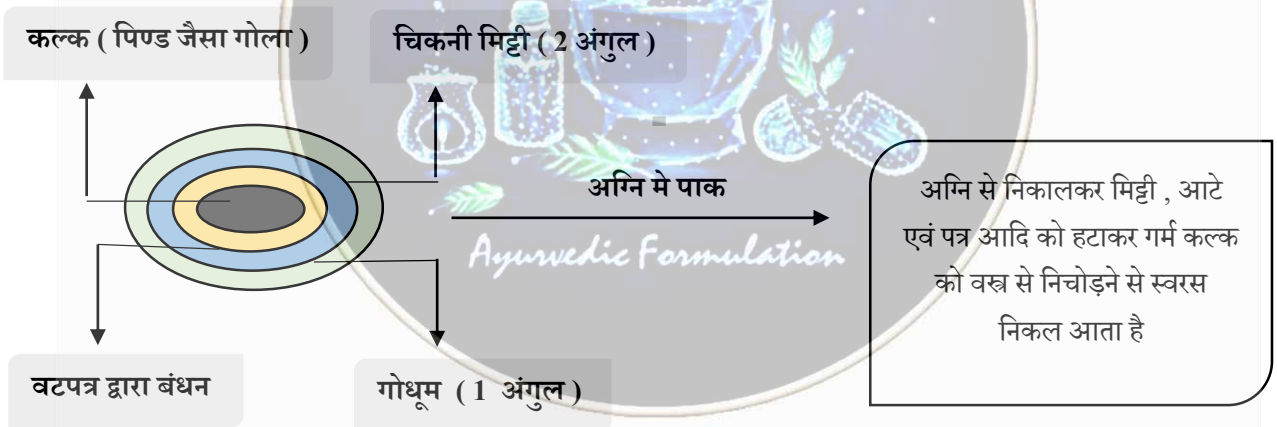

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्वरस मात्रा -

क्र .	स्वरस प्रकार	ग्रंथों के अनुसार मात्रा	आधुनिक मात्रा
1.	सामान्य स्वरस	अर्ध पल / दो तोला	24 ML
2.	अनुकल्प स्वरस	1 पल / चार तोला	48 ML
3.	अग्निसिद्ध स्वरस	1 पल / चार तोला	48 ML
4.	पुटपाक स्वरस	1 पल / चार तोला	48 ML

स्वरस कल्पना का चिकित्सीय महत्व -

स्वरस	चिकित्सीय महत्व
आर्द्रकस्वरस	आर्द्रक का स्वरस मधु (शहद) मिलाकर पीने से वृषणगत वात , श्वास , कास , अरुचि और प्रतिश्याय को नष्ट करता है।
तुलसी स्वरस	तुलसीपत्र का स्वरस या द्रोणपुष्पी का स्वरस मरिच चूर्ण मिलाकर पीने से विषमज्वरों को नष्ट करता है।
वासा पुटपाक स्वरस	पुटपाकविधि से निर्मित वासापत्र स्वरस मधु मिलाकर पीने से रक्तपित्त , कास , ज्वर और क्षय को जीतता है।

स्वरस में प्रक्षेप द्रव्यों का मान -

- स्वरस में मधु , शर्करा , गुड , क्षार , जीरक , लवण , घृत , तैल एवं चूर्ण आदि डालने हो तो - **एक कोल (6 ग्राम)**
- पुटपाक विधि से निर्मित स्वरस में मधु - **एक कर्ष**

स्वरस के स्वाद मे परिवर्तन (स्वादिस्त बनाने), अधिक प्रभावकारी बनाने , शीघ्र कार्यकारी बनाने के लिए प्रक्षेप द्रव्यओ को मिलाया जाता है।

स्वरस का उपयोग -

1) स्वरस गुरु एवं बलवान होने से रोग तथा **रोगी के बलवान** होने पर प्रयोग किया जाता है।
2) औषध के **गुणों में वृद्धि** के लिए चूर्ण में उसी द्रव्य के स्वरस की भावना दी जाती है। यथाः - आमलकी रसायन।
3) औषधियों के **दोषों का निवारण** करने के लिए स्वरस की भावना दी जाती है। जैसेः - अश्वकंचुकी रस में जयपाल की विषाक्तता दूर करने के लिए भृंगराज स्वरस की भावना दी जाती है।
4) **धातुओं का शोधन** और **भस्म निर्माण** करने के लिए वनस्पतियों के स्वरस की भावना दी जाती है।
5) निरीन्द्रिय द्रव्यों में **सेन्द्रियता उत्पन्न** करने के लिए वानस्पतिक द्रव्यों के रसों की भावना दी जाती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कल्क कल्पना (Paste)

पर्याय - **प्रक्षेप , आवप , पिष्टी ।**

- यह पंचविधकषाय कल्पना के अन्तर्गत **दूसरी** कल्पना है एवं **सवीर्यता अवधि - 1दिन (24hr)**
- पत्थर की शिला पर बारीक पीसे हुए चटनी या लुगदी जैसे औषधद्रव्य को कल्क कहते हैं ।

परिभाषा -

" य पिण्डो रसपिष्टानां स कल्कः प्रकीर्तितः । "(च . सू . 4/7)

अर्थात् द्रव्य को रस सहित पीसकर पिण्ड बना लेना कल्क कहलाता है ।

" द्रव्यमार्द्र शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत् । प्रक्षेपावापकल्कास्ते तन्मानं कर्षसंमितम् ॥"

अर्थात् आर्द्रद्रव्य को शिला पर पीसकर या शुष्क द्रव्य के चूर्ण में जल मिलाकर शिला पर पीसकर जो पिण्ड , चटनी या लुगदी बनाई जाती है , उसे कल्क कहते हैं ।

स्वरस में प्रक्षेप द्रव्यों का मान -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **मधु , घृत , तैल** - कल्क से **द्विगुण** मात्रा मे
- **शर्करा , गुड** - कल्क से **समान भाग** मे
- **जल , द्रव पदार्थ** - कल्क से **चतुर्गुण** मात्रा मे

{ Note } - स्वरस में द्रव्य का केवल तरल सारभाग ही लिया जाता है और काष्ठभाग फेंक दिया जाता है , परन्तु कल्क में सारभाग और काष्ठभाग दोनों लिये जाते हैं , इसलिए स्वरस की अपेक्षा कल्क लघु होता है ।

कल्क कल्पना का चिकित्सीय महत्व -

कल्क	चिकित्सीय महत्व
निम्बकल्क	निम्बपत्र का कल्क लगाने से व्रण का शोधन एवं रोपण करता है। इसके सेवन से वमन , कुष्ठ , पित्तविकार , कफविकार और कृमि नष्ट होते हैं।
रसोनकल्क	शुद्ध (छिलका निकला हुआ) रसोन का कल्क तिलतैल मिलावर खाने से भीषण वातरोग (अपतन्त्रक , पक्षाघात , अर्दित आदि) तथा विषम ज्वरों का नष्ट करता है।

कल्क की उपयोग -

1) कल्क **औषध रूप** में खाया जाता है।
2) **प्रलेप** एवं **प्रदेह** के रूप में कल्क का प्रयोग किया जाता है।
3) **व्रणों को शुद्ध** करने एवं **शोथ को दूर** करने के लिए कल्क का प्रयोग होता है।
4) **प्रमथ्या निर्माण** कल्क डालकर किया जाता है।
5) **स्नेहपाक और स्नेहमूर्च्छना** में कल्क डालकर **भर्जन** किया जाता है।

कल्क की मात्रा -

एक कर्ष (12 ग्राम)

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

क्वाथ कल्पना (Decoction)

पर्याय -

शृत , क्वाथ , निर्यूह , कषाय

- यह पंचविधकषाय कल्पना के अन्तर्गत **तृतीय** कल्पना है।
- शुष्क अथवा द्रव्य को यवकुट (यव के बराबर टुकड़े) करके जल के साथ उबालकर छानने के जो द्रव प्राप्त होता है , उसे क्वाथ कहते हैं तथा इसकी **सवीर्यता अवधि 1 दिन (24hr)** है।

परिभाषा -

वह्नौ तु क्वथितं द्रव्यं शृतमाहुश्चिकित्सकाः ।। (च . सू . 4/7)

अर्थात् द्रव्य को जल के साथ अग्नि पर उबालकर जो द्रव प्राप्त होता है , उसे शृत (क्वाथ) कहते हैं।

क्वाथ मे जल का प्रमाण -

Ayurvedic Formulation

1. आचार्य शारंगधर के अनुसार -

1 पल यवकुट द्रव्य × **16 गुना** जल मिलाकर —(मंद अग्नि पाक)→ **1/8 शेष** रहने पर उतारकर छान लें

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2. चक्रपाणि के अनुसार -

1 पल यवकुट द्रव्य × **16 गुना** जल मिलाकर —(मंद अग्नि पाक)→ **1/4 शेष** रहने पर उतारकर छान लें

3. आचार्य सुश्रुत के अनुसार -

1 पल यवकुट द्रव्य × **4 या 16 गुना** जल मिलाकर —(मंद अग्नि पाक)→ **1/4 शेष** रहने पर उतारकर छान लें

4. यादव जी के अनुसार -

1. संघात अनुसार (According To Consistency) -

- **मृदु** द्रव्य - **4** गुना जल
- **मध्यम** द्रव्य - **8** गुना जल
- **कठिन द्रव्य** - **16** गुना जल

मंद अग्नि पाक → **1/4 शेष** रहने पर उतारकर छान लें

2. द्रव्य की मात्रानुसार (According To Amount Of Drug) -

- **1 कर्ष (12 ग्राम)** से **1 पल (48 ग्राम)** तक द्रव्य क्वाथ - **16** गुना जल
- **1 पल** से **1 कुडव (192) ग्राम)** तक द्रव्य का क्वाथ - **8** गुना जल
- **1 कुडव** से ऊपर तक का क्वाथ - **4** गुना जल

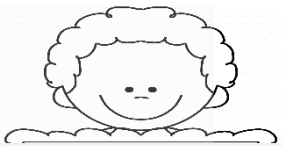

द्रव्य की मात्रा कम होने पर जल अधिक लेने का कारण यह है कि द्रव्य का सारभाग जल में सम्यक् रूप मे आ जाये।

क्वाथ, हिम एवं फाण्ट मे प्रक्षेप द्रव्य की मात्रा

	वात	पित्त	कफ
शर्करा	1/4	1/8	1/16
मधु	1/16	1/8	1/4

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- क्वाथ में जीरक , गुग्गुलु क्षार , लवण , शिलाजतु , हींग , त्रिकटु चूर्ण डालना - **एक शाण (3 ग्राम)**
- क्वाथ में दधृत , गुड , तैल , मूत्र या अन्य द्रव तथा कल्क , चूर्णादि का प्रक्षेप मिलाना - **एक कर्ष (12 ग्राम)**

क्वाथ की मात्रा - 2 पल

क्वाथ कल्पना का चिकित्सीय महत्व -

क्वाथ कल्पना	घटक द्रव्य	चिकित्सीय महत्व
पुनर्नवाष्टक क्वाथ **(पुनर्नवादि क्वाथ)**	**(Trick)** **पुनः हरी गुड्डू और पटोल, शुण्ठी और कटु निम्ब के साथ दारू पीते है** **पुनः** - पुनर्नवा , **हरी** - हरीतकी , **गुड्डू** - गुडूची , **पटोल** - पटोलपत्र , **शुण्ठी** - शुण्ठी , **कटु** - कटुकी , **निम्ब** - निम्ब , **दारू** – दारुहरिद्रा	पुनर्नवाष्टक क्वाथ को गोमूत्र मिलाकर पीने से पाण्डु , कास , उदररोग , श्वास , शूल तथा सर्वाङ्गशोथ को नष्ट करता है।
रास्नासप्तक क्वाथ	रास्ना , गोक्षुर , एरण्ड , देवदारू , पुनर्नवा , गुडूची , आरग्वध	रास्नासप्तक क्वाथ शुण्ठी चूर्ण मिलाकर पीने से जंघाग्रह , कटिग्रह , पार्श्वपीड़ा , पृष्ठपीड़ा, उरुपीड़ा तथा दुःसाध्य **आमवात** को नष्ट करता है।
कुलत्थ क्वाथ	कुलत्थ बीज - 1 कुडव (192 ग्राम) जल - (3.072 लीटर)	विरेचन या वमन होने से उत्पन्न शीत ज्वर का नाशक है। कृमिरोग , मूत्ररोग , अश्मरी , आर्तवरोग में उपयोगी है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

हिम कल्पना (Cold Infusion)

पर्याय - **शीत , कषाय , हिम**

- यह पंचविधकल्पना के अन्तर्गत **चतुर्थ** कल्पना है।
- यवकुट द्रव्य को रातभर शीतल जल में भिगोकर प्रातःकाल मसलकर छान लेने पर प्राप्त द्रव को हिम या **शीत** कल्पना कहते हैं तथा इसकी **सवीर्यता अवधि 1दिन (24hr)** है।

परिभाषा -

क्षुण्णं द्रव्यपलं सम्यक् षड्भिर्नीरपलैः प्लुतम्। निशोषितं हिमः स स्यात् तथा शीतकषायकः ॥

अर्थात् **1 पल द्रव्य** को भली - भांति कूट पीसकर **6 पल जल** में **रात्रिभर** भिगोकर प्रातः काल मसलकर छान लेने से **हिम** (शीतकषाय) कल्पना बनती है।

1 पल द्रव्य × **6 पल** जल मिलाकर रात्री भर भिगोकर रखे → तत्पश्चात उसे भली - भाँति मसलकर कपड़े से छानकर पीते है

हिम की मात्रा - 2 पल (98ml)

हिम कल्पना का चिकित्सीय महत्व -

हिम कल्पना	चिकित्सीय महत्व
धान्यक हिम	शर्करा के साथ मिलाकर प्रातःकाल पीने से अन्तर्दाह एवं तृष्णा का शमन करता है तथा स्रोतो का शोधन करता है।
सारिवादि हिम	रक्तविकार, पित्तजव्याधि, पाण्डु, कण्डु, हस्तपाददाह, अम्लपित्त, , पुराणज्वर।
पित्तप्रमाथी हिम	कामला रोग मे अत्यधिक लाभदायक है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91-8319811628 , 8962265728

फाण्ट कल्पना (Infusion)

पर्याय - **उष्ण कषाय , ' चूर्णद्रव्य '**

- यह पंचविधकषाय कल्पना के अन्तर्गत **पञ्चम एवं अन्तिम** कल्पना है।
- इस कल्पना में औषध द्रव्य को कूटकर उष्ण जल में भिगोया जाता है। इससे औषध का सारभाग (गुण) उष्ण जल के कारण जल्दी आ जाता है तथा इसकी **सवीर्यता अवधि तत्काल (सद्द:)** है।
- जिन औषध द्रव्यों के गुण हिमकल्पना में सम्पूर्ण रूप से नहीं आ पाते हैं और क्वाथ कल्पना में नष्ट होने का भय रहता है। इस प्रकार के द्रव्यों के लिए यह कल्पना उत्तम है जैसे - **अमलतास का गूदा (फल मज्जा)** उष्ण जल में घोलकर देने से अधिक लाभ करता है।

परिभाषा -

क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितं तत् फाण्टमभिधीयते ।। (च . सू . 4/7)

अर्थात् औषध द्रव्य को यवकुट करके उष्ण जल में मिलाकर एवं हाथ से मसलकर वस्त्र से छान लेने से प्राप्त द्रव को फाण्ट कहते हैं।

1 पल द्रव्य × **4 पल उष्ण** जल मिलाते है ⟶ तत्पश्चात उसे भली - भाँति मसलकर कपड़े से छानकर पीते है

मिट्टी के पात्र में **एक पल (48 ग्राम) औषध द्रव्य** के यवकुट चूर्ण तथा **1 कुडव (192 ग्राम)** उबलता हुआ **उष्ण जल** मिलाकर उस पात्र को ढ़क दें। जब जल कुछ गुनगुना रह जाये तब उसको हाथ से मसलकर वस्त्र से छान ले। इस प्रकार प्राप्त द्रव को **फाण्ट** और चूर्णद्रव कहते हैं।

फाण्ट की मात्रा - 2 पल (96 मि.ली.)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

फाण्ट कल्पना का चिकित्सीय महत्व -

फाण्ट कल्पना	चिकित्सीय महत्व
पञ्चकोल फाण्ट	कफज्वर , वातज्वर एवं प्रतिश्याय आदि रोगनाशक है तथा दीपन , पाचन गुणों से युक्त है।
यस्टिमधु फाण्ट	दाहशामक , पित्तशामक , केश्य , वेदनास्थापन , शोणितस्थापन , कण्डूघ्न , चक्षुष्य , बल्य एवं मेध्य रसायन है।

चूर्ण (Powder)

पर्याय -

रजः और क्षोद

चूर्ण कल्पना कल्क कल्पना के अन्तर्गत आती है तथा इसकी **सविर्यता अवधि 6 माह** है।

परिभाषा -

अत्यन्तशुष्कं यद् द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम्। तत्स्याच्चूर्ण रजः क्षोदस्तन्मात्रा कर्षसम्मिता ।।

अर्थात् अत्यन्त शुष्क द्रव्य को अच्छी तरह पीसकर वस्त्र से छान लेने पर चूर्ण बनता है।

चूर्ण की मात्रा -

1 कर्ष (12 ग्राम) , आजकल चूर्ण की सामान्य मात्रा 3 से 6 ग्राम प्रचलित है।

चूर्ण में प्रक्षेप द्रव्यों का मान -

- **गुड़ -** समभाग ,
- **शर्करा , घृत , तैल या शहद -** द्विगुण
- **द्रव (जल , दुग्ध , तक्र , गोमूत्र आदि)** – चतुर्गुण
- हींग मिलानी हो तो भर्जित (घृत भर्जित) करके डालनी चाहिए , जिससे वह उत्क्लेद (जी मिचलाना) नहीं करे।

चूर्ण की प्रकार -

1. **साधारण चूर्ण या एकौषध चूर्ण (Simple Powder) :-** यह चूर्ण एकल औषधि से बनाया जाता है।
2. **मिश्र चूर्ण (Compound Powder) :-** मिश्र चूर्ण दो या दो से अधिक द्रव्यों से बनाया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चुर्णादि का अनुपान की मात्रा -

चूर्ण , अवलेह , गुटिका , कल्क का अनुपान (**वात** रोगों - **3 पल)** , (**पित्त** रोगों - **2 पल)** , (**कफ** रोगों **- 1 पल)** लेना चाहिए।

निर्माण विधि -

शुष्क द्रव्य को सर्वप्रथम उदूखल यन्त्र (इमामदस्ता) में डालकर एवं कूटपीसकर बारीक वस्त्र से छान लेते हैं। मृदु द्रव्यों का चूर्ण पत्थर की शिला या खरल में पीसकर बनाया जाता है , किन्तु कठिन द्रव्यों को इमामदस्ते में कूटकर ही चूर्ण बनाया जा सकता है।

वर्तमान समय मे (Disintegrator , Pulverizer, Grinding machine) आदि मशीनों से शीघ्रता से एवं अधिक मात्रा मे चूर्ण बनाया जाता है।

सितोपलादि चूर्ण

" सितोपलां तुगाक्षीरीं पिप्पलीं बहुलां त्वचम् । अन्त्यादूर्ध्वं द्विगुणितं लेहयेन्मधुसर्पिषा ।।

चूर्णितं प्राशयेद्वा तच्छवासकासकफातुरम् । सुप्तजिह्वारोचकिनमल्पाग्नि पार्श्वशूलिनम् ।। "

सि + तो + प + ला + दि

- **सि -** सितोपला (मिश्री) - **16 भाग**
- **तो** - तुगाक्षीरी (वंशलोचन) - **8 भाग**
- **प** - पिप्पली - **4 भाग**
- **ला -** एला (बहुला) - **2 भाग**
- **दि -** दालचीनी (त्वक) - **1 भाग**

निर्माण विधि - उपरोक्त सभी द्रव्यों को पृथक् - पृथक् इमामदस्ते में कूटकर वस्त्रपूत सूक्ष्म चूर्ण करें और फिर सभी को अच्छी तरह मिलाकर काँच के जार में सुरक्षित रखें।

मात्रा - 3 से 6 ग्राम **अनुपान : -** मधु और घृत

मुख्य उपयोग : - कास , श्वास , प्रतिश्याय , पार्श्वशूल , राजयक्ष्मा , ज्वर , अग्निमान्द्य , अरुचि।

Ayurvedic Formulation

हिंग्वष्टक चूर्ण

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" त्रिकटुकमजमोदा सैन्धवं जीरके द्वे, समधरणधृतानामष्टमो हिङ्गुभागः ।

प्रथमकवलभुक्तं सर्पिषश्चूर्णमेत ज्जनयति जठराग्निं वातरोगांश्च हन्ति ।। "

शुण्ठी - 1 भाग	**सैन्धवलवण-** 1 भाग
पिप्पली- 1 भाग	**श्वेतजीरक-** 1 भाग
मरिच- 1 भाग	**कृष्णजीरक-** 1 भाग
अजमोदा- 1 भाग	शुद्ध हींग- 1 भाग

निर्माण विधि :- उपरोक्त सभी द्रव्यों का पृथक्पृथक् सूक्ष्म चूर्ण करें। फिर सभी को अच्छी तरह मिलाकर काँच के जार में सुरक्षित रखें।

मात्रा :- 1 से 4 ग्राम

अनुपान एवं प्रयोग काल :- प्रथम ग्रास में घृत के साथ। इसके अतिरिक्त में मात्रा उष्ण जल, तक्र आदि से भी प्रयोग किया जा सकता है।

उपयोग :- जठराग्निप्रदीपक, वातरोगनाशक, प्रवाहिका, गुल्म, उदावर्त, आनाह, अग्निमांद्य, उदरशूल, अरुचि, वातगुल्म आदि रोगों का नाश करता है।

तालीशादि चूर्ण

" तालीशपत्रं मरिचं नागरं पिप्पली शुभा । यथोत्तरं भागवृद्धयो प्रदिष्टा त्वगले चार्द्धमागिके ।।

पिप्पल्यष्टगुणा चात्र पदेया सितशर्करा। श्वासकासारूचिहरं तच्चूर्ण दीपनं परम् ।।

हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहशीथज्वरापहम् । "

TRICK

इलु वंश पिया ताली मार नगर दाल शर्करा लेने गए

इलु - इलाइची (छोटी इलायची) - **25** ग्राम	**मार** - मरिच - **100** ग्राम
वंश - वंशलोचन (शुभा) - **250** ग्राम	**नगर**- शुंठी (नागर) - **150** ग्राम
पिया- पिप्पली- **200** ग्राम	**दाल**- दालचीनी - **25** ग्राम
ताली- तालीस - **50** ग्राम	**शर्करा** - सितशर्करा (चीनी) - **1600** ग्राम

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

निर्माण विधि - सभी आठों द्रव्यों को सूक्ष्म चूर्णकर वस्त्रपूत कर शीशे की जार में रख लें।

मात्रा -1 से 3 माशे तक **अनुपान :-** मधु, घृत।

उपयोग :- श्वास-कास अरूचिनाशक है, दीपन-पाचन है, पाण्डु-ग्रहणी, प्लीहा, शोष, ज्वर, हृद्रोग, छर्दि, अतिसार, शूलरोग नाशक है।

वटी कल्पना

पर्याय - वटक, वटिका, गुटिका, चक्रिका, मोदक, पिण्ड, पिण्डी, गुड और वर्ति कहा जाता है

निर्माण विधि - वटी निर्माण की तीन विधियाँ है -

- गुड अथवा शर्करा अथवा शुद्ध गुग्गुलु को अग्नि पर चढ़ाकर लेहवत् पाक करके उसमें चूर्ण डालकर वटी बना लेते हैं।
- कभी-कभी बिना अग्निसंयोग के गुग्गुलु के साथ औषधचूर्ण को मिलाकर वटी बना लेते हैं।
- औषध चूर्ण में द्रव (क्वाथ, स्वरस, गोमूत्र, आदि), मधु आदि की भावना देकर भी वटी बना ली जाती है।

प्रक्षेप द्रव्य :-

- **शर्करा** डालनी हो तो चूर्ण से **चतुर्गुण,**
- **गुड** डालना हो तो **द्विगुण**,
- **द्रव** (जल, स्वरस, गोमूत्र, क्वाथ आदि) चूर्ण से **द्विगुण** मिलाना चाहिए ,
- **गुग्गुलु और मधु** चूर्ण के **समान मात्रा** में मिलाना चाहिए।

वटी कल्पना का प्रयोजन :-

वटी कल्क और चूर्ण कल्पना का ही विकसित स्वरूप है। जो द्रव्य **अप्रिय रस** या **अप्रिय गन्ध** वाले होते हैं, उनको आसानी से निगलने के लिए, साथ ही **निश्चित मात्रा** में प्रयोग हेतु तथा औषध के **गुण-वीर्य** अधिक समय तक सुरक्षित रहे . इस उद्देश्य से वटी बनायी जाती है।

वटी की मात्रा :- वटी की सामान्य मात्रा **एक कर्ष (12 ग्राम)** हैं, किन्तु रोग, रोगी एवं औषधियों के बलाबल का विचार करके वटी की मात्रा निर्धारित करनी चाहिए।

अनुपान :- वटियाँ प्रायः किसी द्रव (जल, दुग्ध, स्वरस, क्वाथ, शार्कर आदि) के अनुपान से ली जाती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वटी निर्माण में सावधानियाँ:-

- **सूक्ष्मचूर्ण** से ही वटी बनानी चाहिए
- वटी **न** अधिक **कठिन** और न अधिक **मृदु** बनानी चाहिए।
- वटी उतने ही **प्रमाण** में बनानी चाहिए, जो सरलतापूर्वक निगली जा सके।
- वटी बनाते समय हाथ या मशीन आदि में **स्नेहांश (घृत)** लगा लेना चाहिए।
- वटी ऐसे द्रव्यों से बनानी चाहिए जो आमाशय में जाकर **शीघ्र घुल** जाए।

चित्रकादि वटी

" चित्रकं पिप्पलीमूलं द्वौ क्षारो लवणानि च। व्योषं हिंग्वजमोदाच्च चव्यं चैकत्र चूर्णयेत्॥

गुटिका मातुलुङ्गस्य दाडिमस्य रसेन वा। कृता विपाचयत्यामं दीपयत्याशु चानलम्॥ "

TRICK

चचि ने आज पिकर त्रिकटु क्षार लवण को हिचक दिया

च- चव्य - **1** भाग	**त्रिकटु-** शुण्ठी, पिप्पली, मरिच- **1** भाग
चि- चित्रक - **1** भाग	**क्षार -** यवक्षार , स्वर्जिक्षार- **1** भाग
आज - अजमोदा- **1** भाग	**लवण-** सैधव, विड, सौवर्चल, सामुद्र, औद्भिद- **1** भाग
पि- पिप्पली - **1** भाग	**हि-** हिंगु- **1** भाग

भावना द्रव्य :- मातुलुङ्ग स्वरस अथवा दाडिमफल स्वरस-यथावश्यक

निर्माण विधि :- उपरोक्त सभी द्रव्यों को पृथक्-पृथक् सूक्ष्म चूर्ण एवं खरल में डालकर मातुलुङ्ग नींबू या दाडिम स्वरस की भावना देकर मर्दन करें। 4-4 रत्ती की गोलियाँ बना सुखाकर काँच के जार में सुरक्षित रखें।

मात्रा :- 4 रत्ती **अनुपान -** उष्ण जल, तक्र **मुख्य उपयोग:-** अग्निमान्द्य, आमदोष, ग्रहणी

Ayurvedic Formulation

अर्कवटी

" सौवर्चलं सादरमर्कपुष्पं मरीचमेकत्र समं विमर्छ। गुञ्जा प्रमाणा गुटिका विधेया कर्षन्ति कायें क्रमशः कृशानोः॥"

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91-8319811628 , 8962265728

घटक द्रव्य -

- सौवर्चल लवण - **1** भाग
- अर्कपुष्प - **1** भाग
- शु. नवसादर - **1** भाग
- मरिच - **1** भाग

निर्माण विधि:- सर्वप्रथम अर्कपुष्प को छोड़कर सभी द्रव्यों को इमामदस्ते में डालकर सूक्ष्म चूर्ण का निर्माण करें। फिर खरल में आर्द्र अर्कपुष्प डालकर धीरे-धीरे चूर्ण को मिलाते हुए मर्दन करें। अन्त में 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनाकर एवं छाया में सुखाकर काँच पात्र में सुरक्षित रखें।

मात्रा:- 500 मि.ग्रा. **अनुपान:-** जल मुख्य **उपयोग:-** कफज अग्निमांद्य, गुल्म, अजीर्ण

संजीवनी वटी

" विडङ्गं नागरं कृष्णा पथ्यामलबिभीतकम्।। वचा गुडूची भल्लातं सविषं चात्र योजयेत्।

एतानि समभागानि गोमूत्रेणैव पेषयेत्।। गुञ्जाभा गुटिका कार्या दद्यादाकजै रसैः।

एकामजीर्णगुल्मेषु द्वे विसूच्यां प्रदापयेत्।। तिम्रश्च सर्पदष्टे तु चतस्रः सान्निपातिके ।। "

TRICK

संजीवनी त्रिवा पिकर नगर को भगि

त्रि – त्रिफला - **1** भाग	**नगर** - शुण्ठी (नागर) - **1** भाग
त्रि/3 वा- विडंग , वचा, वत्सनाभ - **1** भाग	**भ** – भल्लातक - **1** भाग
पि- पिप्पली - **1** भाग	**गि** – गिलोय - **1** भाग

भावना द्रव्य :- गोमूत्र यथावश्यक **अनुपान :-** आर्द्रक स्वरस

निर्माण विधि:- उपरोक्त सभी द्रव्यों को पृथक्-पृथक् इमामदस्ते में डालकर वस्त्रपूत सूक्ष्म चूर्ण करें। फिर खरल में डालकर गोमूत्र की भावना देते हुए मर्दन करें। बाद में जब वर्ति बनने लग जाये तब 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर और सुखा कर काँच के जार में सुरक्षित रखें।

मात्रा:-

- अजीर्ण और गुल्म - **1** रत्ती
- विसूचिका - **2** रत्ती
- सर्पदंश - **3** रत्ती
- सन्निपात ज्वर - **4** रत्ती

Ayurvedic Formulation

लवङ्गादि वटी

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

घटक द्रव्य: -

1) लवङ्ग - 1 भाग
2) मरिच - 1 भाग
3) बिभीतक फलत्वक् -1 भाग
4) **खदिरसार (कत्था) - 1 भाग**

भावना द्रव्य :- बब्बूल वृक्षत्वक् क्वाथ-यथावश्यक

निर्माण विधि:- उपरोक्त द्रव्यों का इमामदस्ते में पृथक्-पृथक् सूक्ष्म चूर्ण बना खरल में डालकर बब्बूलवृक्षत्वक् स्वरस या क्वाथ की भावना देकर भली भाँति मर्दन काके 4-4 रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर काँच के जार में सुरक्षित रखें।

मात्रा :- 4 रत्ती की वटी चूषणार्थ। **मुख्य उपयोग:-** कास, श्वास

वर्ति कल्पना

वर्ति कल्पना **वटी कल्पना** के अन्तर्गत आती है। वर्ति प्रायः दोनों किनारों पर पतली और बीच में थोड़ी मोटी **यवाकृति** (जौ के समान आकृति) के समान होती है। कभी-कभी एक समान लम्बी आकृति की गोलाकर भी होती है। इन वर्तियों के प्रयोग से वात का अनुलोमन तथा सञ्चित दोषों (मल-मूत्र-कफ-रक्त आदि) का निष्कासन हो जाता है। वर्ति रोग, रोगी, स्थान, दोष एवं कर्म आदि के भेद से अनेक प्रकार की होती है। यथाः-

1. गुदवर्ति या फलवर्ति
2. योनिवर्ति
3. शिश्नवर्ति
4. नेत्रवर्ति
5. नासावर्ति
6. व्रणवर्ति
7. धूमवर्ति

फलवर्ती

घटकद्रव्य :-

- यवक्षार - 10 ग्राम
- गुड - आवश्यकतानुसार
- मदनफल - 10 ग्राम
- पिप्पली - 10 ग्राम
- श्वेत सर्षप - 10 ग्राम
- कुष्ठ - 10 ग्राम
- वचा - 10 ग्राम

निर्माण विधि :- सर्वप्रथम क्र.सं. 1 से 5 तक के द्रव्यों का पृथक्-पृथक् सूक्ष्म चूर्ण कर लें। फिर गुड में थोड़ा जल मिलाकर अग्नि पर चढ़ाकर गुडपाक करें। गुडपाक होने पर उतारकर उपरोक्त औषधियों तथा यवक्षार का चूर्ण मिलाकर अंगूठे के समान (अङ्गुष्ठसन्निभा) आकृति की वर्ति बनाकर शुष्क कर लें। थोड़ा सा घी भी इन पर लगा लेना चाहिए।

प्रयोग :- उदावर्त रोग में गुदवर्ति के रूप में स्थानीय प्रयोग किया जाता है।

चन्द्रोदया वर्ती

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91-8319811628 , 8962265728

घटक द्रव्यः -

- बिभीतक मज्जा - 1 भाग
- हरीतकी - 1 भाग
- पिप्पली - 1 भाग
- मरिच - 1 भाग
- शंखनाभि - 1 भाग
- शुद्ध मनःशिला - 1 भाग
- कुष्ठमूल - 1 भाग
- वचा - 1 भाग

भावना द्रव्य :- अजा दुग्ध-यथावश्यक

निर्माण विधिः- उपरोक्त सभी द्रव्यों का पृथक्-पृथक् सूक्ष्म चूर्ण कर ख़रल में डालकर अजादुग्ध से मर्दन करें। जब गोली बनाने जैसा चिकना हो जाये तब यवाकृति वर्ति बनायें। फिर इसे छाया शुष्क कर सुरक्षित रखें। आवश्यकतानुसार इस वर्ति को साफ एवं चिकने पत्थर पर शहद या जल के साथ घिसकर नेत्रों में अञ्जन करें।

प्रमुख उपयोगः- तिमिर, मांसवृद्धि, काच, पटल, अर्बद, अधिमांस, रात्र्यन्ध

गुग्गुलु कल्पना

- गुग्गुलु कल्पना भी **वटी कल्पना** के अन्तर्गत आती है ,
- गुग्गुल कल्पना का वर्णन **सर्वप्रथम** आचार्य **सुश्रुत** जी ने किया
- गुग्गुलुकल्पा में गुग्गुलु के साथ सामान्यतः त्रिफला एवं त्रिकटु आदि घटक होते है

गुग्गुलु निर्माण विधि -

1. शुष्क गुग्गुलु विधि -

शुद्ध गुग्गुलु को इमामदस्ते में रखकर कूटते जाते हैं। कूटने से पहले इमामदस्ते में थोड़ा घृत लगा लेते है तथा गुग्गुलु कूटते समय थोड़ा - थोड़ा घृत मिलाते रहते है

⇩

कूटते - कूटते जब गुग्गुलु मृदु हो जाये तब उसमें थोड़ी - थोड़ी मात्रा में चूर्ण मिलाते रहते है तथा पुनः कूटते जाते है , जब सम्पूर्ण चूर्ण में मिल जाये तथा वटी बनने योग्य मृद गुग्गुलु हो जाये ,

⇩

तो उसकी उचित गुग्गुलु परिमाण व आकार की वटियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लेते है

Ayurvedic Formulation

2. गुग्गुलुपाक विधि : -

शुद्ध गुग्गुलु में थोड़ा जल (लगभग) चतुर्थांश मिलाकर अग्नि पर चढ़ाकर लेहवत् पाक करते हैं ,

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

⇩

फिर उसमें औषधद्रव्यों का चूर्ण मिलाकर उचित परिमाण व आकार की वटियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लेते है

⇩

गुग्गलू को त्रिफला क्वाथ में घोलकर वस्त्र से छान लेते हैं और पुनः अग्नि पर या गुग्गुलु चढ़ाकर लेहवत् पाक करके चूर्ण मिलाकर वटी बना लेते हैं

⇩

गुग्गुलु पाक के लक्षण गुडपाक के समान होते हैं , किन्तु गुग्गुलुपाक में रस और गन्ध भिन्न होती है

मात्रा - 3 ग्राम **अनुपान -** शहद , गर्म जल

प्रयोग -

1) गुग्गुलु कल्पना उत्तम वेदनानाशक तथा शोथहर है
2) जो मुख्यतः वातरोगों (सन्धिवात , वातरक्त , आमवात आदि) , नाड़ी रोगों में प्रयुक्त होती है

गुग्गुलु कल्पना	घटक द्रव्य	रोगाधिकार
योगराज गुग्गुलु	षड्षण , त्रिफला , त्रिमद , त्रिजात	सन्धिवात , आमवात
सिंहनाद गुग्गुलु	त्रिफला , एरण्डतैल , गंधक , गुग्गुलु	आमवात
कैशोर गुग्गुलु	त्रिफला , गुडूची , गुग्गुलु	वातरक्त
त्रिफला गुग्गुलु	त्रिफला , (3 पल) , गुग्गुलु , पिप्पली)1 पल(	अर्श , व्रण

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

क्वाथ कल्पना की उपकल्पनाएँ

प्रमथ्या

- यह क्वाथ कल्पना का ही एक प्रकार है।
- द्रव्य का कल्क बनाकर क्वाथ करने से प्रमथ्या बनती है।
- यह दीपन पाचन कषाय विशेष है , जिसका प्रयोग दोषों की मध्यमावस्था में किया जाता है।
- प्रमथ्या " दीपन - पाचन " कषाय शब्द के लिए प्रयुक्त होता है

1 पल कल्क द्रव्य × **8 गुना** जल मिलाकर → मंद अग्नि पाक → **1/4 शेष** रहने पर उतारकर छान लें

मात्रा - 2 पल (96 मि .ली)

सवीर्यता अवधि - 24 hr

प्रयोग - मध्यम रूप से बढ़े हुए दोषों में दीपन पाचन औषधों से युक्त क्वाथ देते हैं , उसे प्रमथ्या कहते हैं।

क्वाथ एवं प्रमथ्या में अन्तर

क्वाथ	प्रमथ्या
1) क्वाथ के निर्माण में औषध द्रव्य को यवकुट करके षोडश गुण जल में पकाकर अष्टमांश शेष रखते हैं	1) प्रमथ्या में कल्क बनाकर अष्टगुण जल में पकाकर चतुर्थांश शेष रखते हैं।
2) क्वाथ में औषध द्रव्य का क्वथन (उबालना) किया जाता है	2) प्रमथ्या में प्रकर्षण क्वथन किया जाता है।
3) क्वाथ अकृतयूष , है	3) प्रमथ्या को कृतयूष कहा गया है।
4) क्वाथ का प्रयोग दोषों की सभी अवस्था में तथा संशोधन , संशमन , दीपन , पाचन आदि विभिन्न प्रयोजनों से किया जाता है	4) प्रमथ्या का प्रयोग दोषों की मध्यम अवस्था तथा दीपन , पाचन कषाय के रूप में किया जाता है।
5) क्वाथ एक मुख्य औषध कल्पना है	5) प्रमथ्या एक पथ्य कल्पना है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रमथ्या का चिकित्सीय महत्व -

प्रमथ्या	घटक द्रव्य	मात्रा	चिकित्सीय महत्व
मुस्तादि प्रमथ्या	नागरमोथा एवं इंद्रयव	2 पल	रक्त अतिसार

औषध सिद्धपानीय

1 पल यवकुट द्रव्य × **64 पल** जल मिलाकर ⟶ **1/2 शेष (32 पल)** रहने पर छान लें

मंद अग्नि पाक

प्रयोग - जल पीने तथा भात , पेया , यूष , यवागू आदि पथ्य कल्पना के निर्माण में प्रयोग किया जाता है ।

उदाहरण -

षडङ्गपानीय

मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः I शृतशीतं जलं दद्यात् पिपासाज्वरशान्तये ॥

अर्थात् नागरमोथा , पर्पट , उशीर , रक्तचन्दन , सुगन्धबाला , शुण्ठी इन छः द्रव्यों के 1 कर्ष यवकुट चूर्ण को 64 कर्ष जल में डालकर अर्धशेष (32 कर्ष) रहने तक उबालकर छान ले । यह षडङ्गपानीय है ।

उपयोग : - ज्वर तथा ज्वरजन्य पिपासा , दाह के शमनार्थ शीतल करके थोड़ा - थोड़ा 4 से 6 बार पिलावें ।

उष्णोदक

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अर्थात् जल को अग्नि पर उबालकर अष्टमांश **(1/8)**, चतुर्थांश **(1/4)** , अर्धांश **(1/2)** शेष रहने अथवा क्वथित (अच्छी प्रकार उबाल लेना) होने पर उतार लेना चाहिए , इसे उष्णोदक (सिद्ध उष्णोदक) कहते हैं ।

उष्णोदक के गुण - " श्लेष्मामवातमेदोघ्नं बस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरहरं पीतमुष्णोदकं निशि ॥ "

अर्थात् रात्रि के समय उष्णोदक पीने से कफ , आमवात , मेदोरोग , कास , श्वास , ज्वर को नष्ट करता है , बस्ति का शोधन करता है और अग्निदीपन है ।

सत्त्व कल्पना

किसी द्रव्य का **सारभाग (Extract)** सत्त्व कहा जाता है, भैषज्य कल्पना में सत्त्व **दो प्रकार** से निर्मित किये जाते हैं -

1. घनसत्त्व कल्पना :-

पहले औषधद्रव्य का क्वाथ बनाकर फिर घन बनाया जाता है तथा सम्पूर्ण क्रिया **अग्नि से सम्पन्न** होती है , केवल अंतिम शुष्कीकरण के लिए धूप में सुखाया जाता है। घनसत्त्व में औषधद्रव्य के जल में **घुलनशील तत्त्व** (Water soluble extract) होते है जैसे :- **गुडूची घनवटी**

2. सत्त्व कल्पना : -

यह कल्पना **अग्नि के बिना** निर्मित की जाती है। इसमें औषधद्रव्य के जल में **अघुलनशील तत्त्व** (Water Insoluble extract) आते हैं ,जिन औषध द्रव्यों में स्टार्च की मात्रा अधिक होती है , उनका सत्त्व निकाला जाता है यथा - **अमृता सत्त्व**

गुडूचीसत्त्व (अमृता सत्त्व)

1. अंगूठे जितनी मोटी , ताजी हरी गुडूची काण्ड को जल से धोकर छोटे - छोटे टुकड़े कर लें , फिर इमामदस्ते में रखकर अच्छी तरह कूट लें।
2. फिर स्टेनलेस स्टील के पात्र में डालकर चार गुना पानी मिलाकर हाथों से अच्छी तरह मर्दन करें। पानी में खूब फेन आयेंगे। इस प्रकार गुडूचीकाण्ड का सारा स्टार्च वाला अंश फेनरूप में जल में घुल जायेगा। अब इन गुडूचीखण्डों को निचोड़कर फेक दें।
3. कुछ देर बाद जल को स्वच्छ वस्त्र से दूसरे पात्र में छानकर ले।
4. अब इसे रात्रिपर्यन्त (12 घंटे) रख दें।
5. इससे गुडूची का सत्त्व जल से पृथक् होकर तल में एकत्र हो जायेगा। दूसरे दिन पात्र को हिलाये बिना धीरे - धीरे ऊपर के जल को निथार लें और तल में एकत्र मैदा जैसा पदार्थ (गुडूची सत्त्व) को सुखाकर वस्त्र से छानकर रख लें। यही गुडूची सत्त्व है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मात्रा व अनुपान : - 2 से 4 रत्ती (250 मि . ग्रा . से 500 मि . ग्रा .) शहद से।

गुण : - यह पित्तशामक , बल्य , वृष्य एवं शुक्रल है। ज्वर , जीर्णज्वर , रक्तपित्त , राजयक्ष्मा , रक्तप्रदर , दाह , मूर्च्छा , अपस्मार , कण्डू , कुष्ठ , रक्तविकृति , मूत्रकृच्छ्रू , मूत्रप्रदाह नाशक है।

नोट : - निथारे हुए जल को मंद अग्नि पर पकाकर , उसका घन बनाकर संशमनी वटी बना लें।

लाक्षारस

1 पल लाक्षा × **6 पल** षड्गुण जल —**दोलायन्त्र स्वेदन**, मंद अग्नि पाक→ **1/4 शेष** रहने पर उतारकर छान लें (चतुर्थांश शेष)

(पीपल की लाख)

अपद्रव्यों (मिट्टी , लकड़ी , कंकड़ आदि) को पृथक् कर लें

वस्त्र से 21 बार छानने के बाद प्राप्त द्रव को लाक्षारस कहते हैं

प्रयोग - उरः क्षत एवं अस्थिभग्न आदि में सन्धानार्थ। लाक्षादि तैल निर्माण लाक्षारस से किया जाता है।

मात्रा : - एक पल

मांस रस

वेसवार (मांस का मसाला)
उचित जल व लवण
बकरे का अस्थि रहित मांस
हल्दी व हिंगु
घृत एवं तैल

- किसी भी स्टेनलेस स्टील के पात्र में घी या तैल को गर्म करे
- फिर उसमें हिङ्गु एवं हरिद्रा का चूर्ण एवं बकरे के निरस्थि मांस को डालकर भूना जाता है।
- इसके बाद यथावश्यक मात्रा में जल एवं लवण को डालकर पाक किया जाता है।
- फिर सिद्ध जल से ही वेसवार (मांस के मसालों) को पीसकर एवं मिलाकर पुनः पाक किया जाता है, इसे **मांसरस** कहते हैं।

Ayurvedic Formulation

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91 - 8319811628 , 8962265728

मांस भेद	मांस मात्रा	जल मात्रा
घन मांसरस	**8 पल** (384 ग्राम)	16 पल (768 मिली)
मध्यम मांसरस	**6 पल** (288 ग्राम)	16 पल (768 मिली)
पतला मांसरस	**4 पल** (192 ग्राम)	16 पल (768 मिली)

वेसवार :- किसी भी स्टेनलेस स्टील के साफ **पात्र** में अस्थिरहित **बकरे के मांस** के टुकड़ो को **चतुर्गुण जल** के साथ मध्यमाग्नि पर पकाया जाता है। मांस पक जाने पर पात्र को नीचे उतारकर मांस के **टुकड़ो** को पीसकर **बारीक** किया जाता है। फिर उसी पात्र में घी डालकर गर्म करके **सैंधव लवण , पिप्पली चूर्ण , शुण्ठीचूर्ण , मरिच चूर्ण एवं गुड** डालकर पकाया जाता है। जब मांस भली भाँति सिद्ध हो जाय , तो उसे **वेसवार** कहते हैं। यह गुरु , स्निग्ध , बल्य और वातरोगनाशक होता है।

क्षीरपाक

रसोन , भल्लातक , अर्जुन आदि औषध द्रव्यों के **वीर्य की तीक्ष्णता को कम करने** एवं उनके **गुणों में उचित वृद्धि लाने** के लिए औषध द्रव्यों को क्वाधविधि से क्षीर (दुग्ध) के साथ पकाया जाता है। इसके अलावा दूध को लघुपाकी बनाने के लिए भी शुण्ठी आदि द्रव्यों के साथ क्षीरपाक किया जाता है।

क्षीरपाक निर्माण विधि -

" क्षीरमष्टगुणं द्रव्यात् क्षीरान्नीरं चतुर्गुणम् । क्षीरावशेष तत्पीतं शूलमामोद्भवं जयेत् । । "

अर्थात् औषध द्रव्य से 8 गुना दुग्ध तथा दुग्ध से चार गुना जल मिलाकर पकाना चाहिए। दुग्ध मात्र शेष रहने पर वस्त्र से छान ले। यह क्षीरपाक विधि आमजन्य शूल में प्रयोग करना चाहिए।

1. **अर्जुन क्षीरपाक -** अर्जुन त्वक् 20 ग्राम को यवकुट करके 160 मि.ली. दुग्ध एवं 640 मि.ली. जल को स्टेनलेस स्टील के पात्र में डालकर मन्दाग्नि पर पाक करें। जब दुग्ध मात्र शेष रह जाये तो उतारकर वस्त्र से छान लें और मिश्री मिलाकर पिलावें।

   प्रयोग – हृद्रोग **मात्रा -** 50 मि.ली.

2. **रसोन क्षीरपाक –** **" साधयेच्छुद्धशुष्कस्य लशुनस्य चतुष्पलम् । क्षीरोदकेष्टगुणिते क्षीरशेषञ्च पाययेत् ।। "**

   अर्थात् निस्तुष लशुन 4 पल (192 ग्राम), दुग्ध 768 मि.ली. तथा जल 768 मि.ली.लें। सर्वप्रथम लशुन को पीसकर स्टेनलेस स्टील के पात्र में दूध और जल के साथ मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। दुग्धमात्र शेष रहने पर छानकर रोगी को पिलावें।

   प्रयोग – गुल्म , गृध्रसी , विषमज्वर **मात्रा -** 100 मि.ली.

विमर्श - क्षीरपाक विधि के अनुसार लशुन से दुग्ध 8 गुना तथा दुग्ध से जल 4 गुना लेना चाहिए। किन्तु इस श्लोक के अनुसार लशुन से दुग्ध और जल की मिलित मात्रा 8 गुना (1.536 लीटर) बताई है।

3. **शुण्ठी क्षीरपाक -** 1 तोला शुण्ठी के यवकुट चूर्ण को 8 तोला गोदुग्ध तथा 32 तोला जल में जीर्ण मिलाकर मंदाग्नि पर पाक करें। क्षीर मात्र शेष रहने पर वस्त्र से छानकर प्रयोग करें।

   प्रयोग - अरोचक, आमवात, अजीर्ण आदि **मात्रा -** 1 तोला

अर्जुन क्षीरपाक (50 ml) - अर्जुन त्वक (20 GM) + क्षीर (160 ML) + जल (640 ML)

रसोन क्षीरपाक (100 ml) - निस्तुष लसुन (192 CM) + क्षीर (768 ML) + जल (767 ML)

शुण्ठी क्षीरपाक (1 तोला) – शुठी (1 तीला) + क्षीर (8 तोला) + जल (32 तोला)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91- 8319811628 , 8962265728

क्षार कल्पना

" क्षरणात् क्षणनाद्वा क्षारः । "

- अर्थात् क्षरणकर्म या क्षणनकर्म करने वाले द्रव्य को क्षार कहा जाता है।
- दूषित मांस आदि को काटने **(क्षरण)** के कारण अथवा त्वचा मास आदि का विनाश **(क्षणन)** हिंसा करने के कारण क्षार कहलाता है।
- क्षार **स्पर्श में शीत , विसंगधी , श्वेत वर्ण** (दर्शनेन्दिय से ग्राह्य) **कटु एवं लवण आदि रस** (रसनेन्द्रिय से होता है। यह संस्कार या साधन द्वारा उत्पन्न होता है।

" छित्त्वा छित्वाऽऽशयात् क्षारः क्षरत्वात् क्षारयत्यधः । " (च.चि.5/58)

क्षरण स्वभाव होने के कारण आशय से मांसादि (गुल्म) को काट काट कर अधोमार्ग से बाहर निकालता है, वह क्षार होता है।

प्राप्ति के आधार पर क्षार के भेद -

(1) खनिज :- प्राकृतिक रूप में प्राप्त होने वाले क्षार, **जैसे – टंकण, सज्जीक्षार**

(2) वानस्पतिक क्षार :- ये क्षार वनस्पतियों से बनाये जाते हैं, **जैसे - यवक्षार, अपामार्गक्षार**

प्रयोग के आधार पर क्षार के भेद -

(1) प्रतिसारणीय क्षार :- त्वग्रोगों में बाह्य प्रयोग किया जाता है।

(2) पानीय क्षार : - अग्निमांद्य , अरुचि मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात में पानीयक्षार का आभ्यन्तर प्रयोग किया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) **क्षारद्वय** - स्वर्जिक्षार,यवक्षार
2) **क्षारत्रय** - स्वर्जिक्षार यवक्षार एवं टंकण
3) **क्षारपञ्चक** - मुष्ककक्षार, यवक्षार पलाशक्षार, स्वर्जिक्षार एवं तिलनालक्षार

" सुधापलाशशिखिरचिञ्चार्कतिलनालजाः । स्वर्जिका यावशूकश्च क्षाराष्टकमुदाह्यतम् ।। "

4) **क्षाराष्टक** - सुधाक्षार पलाशक्षार, अपामार्गक्षार, चिंचाक्षार (इमली क्षार) अर्कक्षार तिलनालक्षार, स्वर्जिक्षार एवं यवक्षार

क्षार निर्माण विधि -

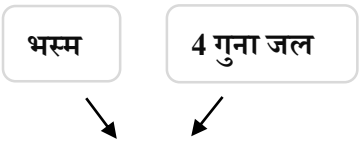

जिस काष्ठौषधि क्षार प्रधान वनस्पति का क्षार बनाना हो उसकी काष्ठ (या **पञ्चाङ्ग** - काण्ड काष्ठ मूल, त्वक् पत्र पुष्प फल) लेकर अच्छी तरह से सुखाकर **स्वच्छ कड़ाही में जलाकर भस्म (श्वेताभ राख)** बना ले।

↓

बाद मे उस **भस्म** को **मिट्टी के पात्र** में डालकर **चार गुना जल** मिलाकर हाथ से मसलकर **पात्र को ढ़ककर रात भर रखें**, दूसरे दिन राख घुले जल (स्वच्छ जल) को **निथारकर वस्त्र से छान लें**, पात्र तल में अवशिष्ट भाग को फेंक दें।

↓

इसी तरह उक्त **जल को 3-4 बार छान लें**, फिर उस जल को मन्दाग्नि पर पका कर गाढ़ा कर लें। जब **पंकवत् (कीचड़ जैसा हो जाये तो उसे धूप में सुखा लें** , यही **क्षार है** जो श्वेत वर्ण का चूर्ण रूप में प्राप्त होता है।

क्षार मात्रा -

क्षारों की सामान्य मात्रा **2 से 8 रत्ती** (250 मि.ग्रा.से1 ग्राम)

क्षारनिर्माण में सावधानियाँ -

1) द्रव्य पूर्ण रूप से शुष्क होना चाहिए।
2) द्रव्य को अच्छी प्रकार जलाकर भस्म (राख) बना लेनी चाहिए। इसमें कोयले (कार्बन) का अंश न रहे।
3) जल को सावधानी पूर्वक निथारना चाहिए। यदि किसी कारणवश द्रव हिल जाये तो द्रव्य की भस्म को नीचे बैठने दें. उसके बाद रजत जन स्वस्त हो जाये तत्व निधारना चाहिए।
4) जल को मन्दाग्नि पर पाक करना चाहिए।
5) जल जब गाढ़ा होने लगे तब उसे जल अवगाह (WATER BATH) या धूप में सुखाना चाहिए।
6) जब जल पूर्ण रूप से सुख जाये तो क्षार को कॉच पात्र (बोतल) में भरक कार्क (ढक्कन) लगा देना चाहिए ताकि वायु प्रवेश न कर सके। यदि क्षार वायु के सम्पर्क में आ जाता है तो क्षार गीला होकर खराब हो जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

क्षार के गुण -

" नातितीक्ष्णमृदुः श्लक्ष्णः पिच्छिलः शीघ्रगः सितः । शिखरी सुखनिर्वाप्य न विष्यन्दी न चातिरुक् ॥ "

आचार्य वाग्भट्ट (अष्टांग हृदय) के अनुसार क्षार नातितीक्ष्णमृदु श्लक्ष्ण पिच्छिल, शीघ्रकारी सित: (श्वेत), शिखरी सुखनिर्वाप्य, अविष्यन्दी, नातिरूक, होता है।

क्षार कल्पना का चिकित्सीय महत्व -

क्षार कल्पना	निर्माण विधि	चिकित्सीय महत्व
अपामार्ग क्षार	अपामार्ग के शुष्क पंचांग 1 कि.ग्रा. लेकर लोहे की कड़ाही में रखकर जलाकर भस्म (राख) बना ले। अपामार्ग भस्म (राख) को 4 लीटर या 6 लीटर जल में घोलकर रात्रिभर रख दें। ↓ दूसरे दिन प्रातः काल स्वच्छ जल को निधार कर वस्त्र से 3-4 बार छानकर दूसरे पात्र में रखें। इसके बाद स्वच्छ जल (क्षारोदक) को कड़ाही में डालकर पकावें और पंकवत गाढ़ा हो जाने पर धूप में सुखा लें। ↓ जल पूर्णतः सूख जाने पर कड़ाही के तल में स्थित श्वेतवर्ण के क्षार को निकाल लें। लें यह अपामार्ग क्षार होता है। अपामार्ग क्षार को **मयूरक्षार, किणिक्षार और खरमञ्जरिकाक्षार** भी कहा जाता है।	अपामार्ग क्षार तीक्ष्ण होता है। इसका प्रयोग से श्वास गुल्म , शूल आदि रोगों का नाश करता है। यह बाधिर्य नाशक है बधिरता में अपामार्गक्षार से सिद्ध तैल का कर्ण में बाह्य प्रयोग।
स्नुहीक्षार	स्नुही के डंठल (काण्ड) को बीच में फाड़कर एवं काटकर सुखा कर क्षार निर्माण की सामान्य विधि के अनुसार जलाकर एवं भस्म को 4 या 6 गुना जल में घोलकर एवं पकाकर क्षार प्राप्त किया जाता है।	स्नुहीक्षार तीक्ष्ण और सर्व उदररोगनाशक है, अग्निदीपक है, गुल्म शोध विसूचिका, अजीर्ण, शूल, यकृद्दोष तथा श्वासरोग नाशक है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

क्षारसूत्र

क्षारसूत्र का सर्वप्रथम वर्णन चक्रदत्त में उपलब्ध होता है। यद्यपि सुश्रुत संहिता में क्षार के लेखन कर्त्तन आदि की का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है, किन्तु क्षारसूत्र का वर्णन नहीं मिलता है।

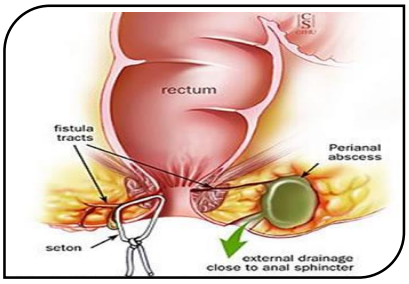

क्षार निर्माण विधि -

" क्षारसूत्र भावितं रजनीचूर्णः स्नुहीक्षीरे पुनः पुनः। बन्धनात् सुदृढं सूत्र भिनत्त्यर्थो भगन्दरम् ।। "

एक स्वच्छ काँच पात्र में स्नुहीक्षीर तथा हरिद्रा चूर्ण समान मात्रा में मिलाकर रखें। फिर एक नातिस्थूल दृढ़ कार्पास सूत्र (THREAD) को स्नुहीक्षीर और हरिद्रा चूर्ण मिश्रित घोल में 24 घंटे तक डुबोकर बाद में छाया शुष्क कर लें। सूख जाने पर पुनः स्नुहीक्षीर और हरिद्रा चूर्ण के नवीन घोल में भिगो दें। इस प्रकार सात बार भावित कर छाया शुष्क करें। इसके बाद विसंक्रमित सूत्र (क्षार सूत्र) को स्वच्छ TEST TUBE में कार्क लगाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा - आवश्कतानुसार

उपयोग - अर्श, भगन्दर नाडीव्रण एवं अर्बुद को काटने के लिए क्षारसूत्र का प्रयोग किया जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- भगन्दर व्रण में एक से अधिक मुख होते हैं। व्रण मुखों में क्षारसूत्र डालकर उसमें ग्रंथि (गाँठ) लगा देते हैं। क्षार सूत्र से धीरे-धीरे व्रण कटता रहता है और भरता रहता है। इस प्रकार आसानी से भगन्दर व्रण कटकर भर जाता है।
- अर्श (PILES) में अर्शमूल में क्षारसूत्र बाँधते हैं। जिससे अर्श (मस्से कट जाते हैं।
- दुर्बल, कृश, शस्त्रकर्म से डरने वाले तथा मर्म स्थान में स्थित व्रण- अर्बुद शस्त्रकर्म निषिद्ध हैं। अर्श,भगन्दर आदि सद्यः प्राण हर मर्म (गुदा) में आश्रित होते हैं अतः ऐसे स्थान पर क्षारसूत्र का प्रयोग करना चाहिए।

क्वाथ की विभिन्न व्युत्पन्न कल्पना

कल्पना	द्रव्य मात्रा
वेशवार	मांस रस : जल **(1 : 4)**
गुडूची सत्व	गुडूची कल्क : जल **(1 : 4)**
लाक्षा रस	लाक्षा : जल **(1 : 6)**
क्षार	दग्ध पंचांग : जल **(1 : 6)**
प्रमथ्या	द्रव्य : जल **(1 : 8)**
क्षीर पाक	द्रव्य : क्षीर : जल **(1 : 8 : 32)**
औषधसिद्ध पानीय	औषध : जल **(1 : 64)**
चूर्णोदक	चूना : जल **(1 : 240)**

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

हिम कल्पना/ शीत कल्पना की उपकल्पनाएँ

तण्डुलोदक

1 पल निस्तुष एवं कुटे हुए चावल × **8 गुना जल** —6 घंटे पश्चात→ मसलकर छान ले, इसे **तण्डुलोदक** (तण्डुल जल) कहते हैं

प्रयोग - श्वेतप्रदर , रक्तप्रदर आदि में प्रयुक्त औषध के अनुपान के रूप में करते हैं

मात्रा - 4 से 8 तोला

पानक

आम , इमली , अनार आदि के अपक्व , अर्धपक्व या पूर्ण पक्व फलों को अग्नि में भूनकर × **16 गुना शीतल जल** → हाथ से मसलकर स्वच्छ वस्त्र से छान लें, इसे **पानक** कहते हैं

उसमें पीने वाले के रुचि के अनुसार शर्करा , मिश्री , मरिच , इलायची आदि का चूर्ण मिलाते है तथा पानक **शीतल जल** में फलों को मिलाकर बनाया जाता है , इसलिए इसे **हिम कल्पना के अन्तर्गत** रखा जाता है

उदाहरण - चंदन पानक , चिंचा पानक

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

शार्कर

परिभाषा - गुलाबपुष्प , केवड़ा , वेदमुश्क आदि सुगन्धित द्रव्यों के हिम , फाण्ट और अर्क में तथा अन्य द्रव्यों के क्वाथ में दुगुनी शर्करा मिलाकर मन्दाग्नि पर पकाकर वस्त्र से छान ले इसे शार्कर (शर्बत) कहते हैं।

- सामान्य भाषा में इसे शर्बत (Syrup) कहते हैं
- गुलाब पुष्प , केवड़ा पुष्प , चन्दन , बनफ्शा , सौंफ आदि सुगंधित द्रव्यों की शार्कर कल्पना की जाती है
- फालसा (परूषक) , अनार , नींबू आदि फलों के रस से भी शार्कर बनाये जाते हैं

फाण्ट कल्पना की उपकल्पनाएँ

मन्थ

1 पल द्रव्य का चूर्ण × **4 पल शीतल जल** ⟶ मसलकर स्वच्छ वस्त्र से छान लें, इसे **मन्थ** कहते हैं

द्रव्य को शीतल जल में डालकर और मन्थन कर (मथकर) छान लिया जाता है इसलिए मन्थ को **हिम कल्पना में समाविष्ट** करना चाहिए , किन्तु **शार्ङ्गधर संहिता में इसे फाण्ट का भेद** माना है

मात्रा - 2 पल

प्रयोग - तृष्णा , अन्तर्दाह , रक्तपित्त में

उदाहरण - खर्जूरादि मन्थ

{ **Note -** चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता में मन्थ को **सत्तू प्रधान कल्पना** माना है । }

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अर्क कल्पना

अर्क कल्पना के आविष्कारक रावण है , अर्क प्रकाश ग्रन्थ रावण की रचना है

1) सुगन्धि द्रव्य से उडनशील तैल निष्कासन के लिए अर्क यंत्र (Distilation Plant) का प्रयोग किया जाता है उदा . अजमोदा , सौंफ , चंदन , पुर्ननवा
2) कटु एंव सुगन्धित द्रव्य जिनके वीर्य में वायव्य तैजस अंश में होता है उनका क्वाथ नहीं करना चाहिए
3) सर्वप्रथम ' सोढल ' ने 16 वीं शदी में अर्क निर्माण हेतु भभका यन्त्र (Distillation apparatus) एवम तिर्यक पातन विधि का प्रयोग किया।

निर्माण विधि : -

ताजे हरे सुगन्धित द्रव्य को यवकुट कर अथवा शुष्क द्रव्य हो तो **यवकुट चूर्ण** करके **दश गुना जल** में रात्रि में भिगो दें

⇩

प्रातःकाल अर्कयन्त्र **भभका यन्त्र** (Distillation apparatus) में डालकर यन्त्र के पात्रों की संधि को कपड़मिट्टी द्वारा सन्धिबन्धन कर दें

⇩

तब भभका यन्त्र को चूल्हे पर चढ़ा दे तथा भभके के ऊपरी पात्र में बने **आलवाल** में शीतल जल भर दे और यन्त्र की नली के नीचे काँच की बोतल रखें और आलवाल में भरे जल के गर्म हो जाने पर निकालकर शीतल जल भरते रहें

⇩

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

औषध द्रव्य का सुगन्धि तैल एवं उड़नशील कार्यकारी तत्त्व (कार्मुक अंश) वाष्पीभूत होकर ऊपर उठता है और आलवाल में भरे हुए शीतल जल के कारण ठण्डा होकर द्रवीभूत होता है और नली द्वारा बूँद - बूँद निकलकर काँच की शीशी में इकट्ठा होता रहता है

⇩

जब एक शीशी भर जाये तो दूसरी शीशी लगा दें , अंत में वस्त्र से छानकर बोतलों में भरकर कार्क लगाकर पैक कर दें

गुडूचीघन (गुडूची रसक्रिया - संशमनी वटी)

ताजी हरी एवं अंगुली जितनी **मोटी गुडूची** को पानी से धोकर एवं छोटे - छोटे **टुकड़े** करके उदूखल यन्त्र (इमामदस्ता) में **कूट** लेते हैं और इसे **चतुर्गुण जल** में रात्रिपर्यन्त भिगोकर दूसरे दिन अग्नि पर रखकर क्वाथ करते हैं

⇩

चतुर्थांश जल शेष रहने पर छानकर , **पुनः अग्नि पर रखकर पाक** करते हैं , पाक करने पर जब **क्वाथ गाढ़ा** होने लगे तो उसे बार - बार कड़छुल (दर्वी) से चलाते रहते हैं

⇩

पुनः **धूप में सुखा** लेते हैं या **गोली बनाकर** सुखा लेते हैं , आचार्य यादवजी ने इसे **' संशमनी वटी '** कहा है , इसे **' गुडूचीघन वटी '** भी कहते हैं

प्रयोग - ज्वर , जीर्णज्वर , वातरक्त आदि रोगों में लाभकारी है तथा अन्य जीर्ण व्याधियों के शमनार्थ सहायक औषधि के रूप में दिया जाता है।

मात्रा - 500 मि . ग्रा . तक

गुडपाक

परिभाषा - औषध द्रव्यों के क्वाथ या जल में गुड़ की चाशनी बनाकर , उसमें औषध द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर गुडपाक कल्पना बनाई जाती है।

गुडपाक सिद्धि के लक्षण -

1) गुड दर्वी (करछुल) से लिपटने लगता है
2) तन्तु (तार) छूटने लगते है
3) जलपूर्ण पात्र में डालने पर निश्चल बैठ जाये , (फैलना और तैरना नहीं चाहिए)
4) स्पर्श व मर्दन करने पर सुखानुभूति हो अर्थात् स्निग्ध और मृदु होने के कारण हाथ से सुखपूर्वक मसला जाता है।
5) औषध द्रव्यों के सुगन्ध , वर्ण और रस उत्पन्न हो जाते है
6) अंगुलियों से दबाने पर अंगुलियों की रेखायें छप जाती है

मात्रा - 12 ग्राम

प्रयोग - गुडपाक कल्पना विशेषतः भगन्दर व अर्शरोगों की चिकित्सा हेतु प्रयोग की जाती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मसी कल्पना

- सर्वप्रथम सुश्रुत संहिता में वर्णन मिलता है
- मसी का अर्थ - स्याही (स्याह वर्ण की होने के कारण) इसको मसी कहते हैं
- जाङ्गम एवं औद्भिद् द्रव्यों को जलाकर कृष्णवर्ण या स्वाह वर्ण बना लेने को मसी कहते हैं
- द्रव्यों को शरावसम्पुट में पाक करने में कृष्ण वर्ण (कोयले जैसी या स्याह वर्ण) की मसी कल्पना बनती है

1. **त्रिफला मसी -** त्रिफला आमलकी , विभीतकी , हरीतकी का छिलका 50 - 50 ग्राम लेकर

⇩

शराव सम्पुट मे बंद कर लघुपुट मे पाक करे

⇩

स्वांगशीत होने पर सम्पुट खोलकर खरल मे पीसकर वस्त्र से छानकर रख ले

प्रयोग - मञ्जन (दाँत साफ) करने के लिए , रक्तरोधनार्थ भी इसका उपयोग होता है

2. **मयूरपिच्छ मसी -** मयूरपिच्छ का भस्म तथा पिप्पली का चूर्ण मधु मिलाकर चाटने से भयंकर हिक्का तथा प्रबल श्वास रोग को शीघ्र ही नाश करता है

उपयोग - हिक्का , श्वास , छर्दि (यो.र.)

मात्रा - 125 मि.ग्रा . से 250 मि.ग्रा .

अनुपान - मधु , पिप्पली चूर्ण , दशमूल क्वाथ

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लवण कल्पना

लवण कल्पना का वर्णन **सर्वप्रथम " रसतरंगिणी "** में आया है।

सैन्धव लवण को पीसकर अर्कपत्र , नारियल आदि के साथ अग्नि में पाक करने के उपरान्त जो धूसर वर्ण या कृष्णवर्ण का लवण प्राप्त होता है , वह लवण कल्पना कहलाती है।

उपयोग - शूल , गुल्म , यकृत्प्लीहारोग , उदरविकार , उदावर्त , विबन्ध , कोष्ठ काठिन्य आदि में लाभकारी है

मात्रा - 4 रत्ती

1. अर्कलवण -

घटक द्रव्य -

1) सुपक्व अर्कपत्र- 100 ग्राम
2) सैन्धव लवण 100 ग्राम

निर्माण विधि -

सर्वप्रथम शराव में स्वच्छ अर्कपत्र फैला दें

⇩

इन पर सैन्धव लवण चूर्ण की पतली परत फैलाकर पुनः उस पर अर्कपत्र रखें तथा पुनः सैन्धवलवण का चूर्ण फैलाकर , पुनः अर्कपत्र रखें , इस प्रकार **क्रमशः सम्पूर्ण सैन्धवलवण और अर्कपत्र** रखें

⇩

तत्पश्चात् दूसरा **शराव उल्टा** रखकर कपड़मिट्टी से सन्धिबन्धन कर **गजपुट में अन्तर्धूम** पाक करें

⇩

स्वाङ्गशीत होने पर कपड़मिट्टी खोलकर कज्जल वर्ण या धूसर श्वेत वर्ण (राख जैसा) के लवण को निकालकर खरल में बारीक पीसकर रखें , यह अर्कलवण है

मात्रा - 500 मि.ग्रा (4 रत्ती)

अनुपान - उष्ण जल , मस्तु

उपयोग - यकृतरोग , प्लीहा रोग , उदररोग , विबन्ध , ज्वर

विमर्श - अर्कलवण का वर्ण धूसरवर्ण होता है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2. नारिकेल लवण -

घटक द्रव्य -

1) सुपक्व सजल नारियल - 1 नग
2) सैन्धव लवण - 10 तोला (120 ग्राम)

निर्माण विधि - सुपक्व तथा सजल नारियल लेकर उसके छिलके **(जटा) को चाकू से अलग** हटा दें

⇩

अब उस नारियल के **नेत्रभाग में मोटी शलाका से छिद्र** कर उसका जल निकाल लें तथा उसी छिद्र से 10 तोला (120 ग्राम) **सैन्धव लवण** का चूर्ण भर दें

⇩

फिर उस छिद्र को **मुलतानी मिट्टी से बन्द** कर पूरे नारियल पर एक अंगुल मोटा मुलतानी मिट्टी युक्त कपड़ा का **लेप** लगाकर धूप में अच्छी तरह सुखा लें

⇩

फिर **गजपुट या महापुट** में पाक करें एवं स्वाङ्गशीत होने पर उसे निकालकर कपड़मिट्टी हटा दें

⇩

अब उसके ऊपर के कठिन नारियल कपाल को हटाकर नारियल गिरि एवं सैन्धव लवण को निकालकर पीसकर सुखा ले एवं स्वच्छ काँचपात्र में सुरक्षित रख लें , इसे नारिकेल लवण हटे है तथा इसका वर्ण कृष्ण वर्ण (धूसरवर्ण) होता है

मात्रा - 2 रत्ती (250 मि.ग्रा.) से 2 माषा (2 ग्राम) तक

अनुपान - पिप्पली चूर्ण, नवसादर, यवक्षार, जल

उपयोग - पाचक एवं पित्तशामक है , अम्लपित्त, पित्तशोषजशूल (पित्ताशय शूल), उदरशूल, परिणाम शूल नाशक है

Ayurvedic Formulation

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अवलेह (लेह) / रसक्रिया / फाणित / प्राश

रसक्रिया - फाणित अवलेह - प्राश - घन एक ही कल्पना के अवस्थानुसार सूक्ष्म भेद है

आचार्य शार्ङ्गधर ने रसक्रिया के अवलेह और लेह दो पर्याय बताये हैं -

- जो चाटने योग्य हो , उसे लेह या अवलेह कहते हैं
- प्राशन क्रिया की जाने से प्राश कहते हैं
- जो रसक्रिया राव या फाणित के समान मृदु हो , उसको फाणित कहते हैं तथा
- जो रसक्रिया उससे थोड़ी गाढ़ी चाटने योग्य बनती है , उसे अवलेह या लेह और
- उससे भी अधिक गाढ़ी गोली (वटी) बनने योग्य रसक्रिया को घन कहते हैं

" **क्वाथादीनां पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया । सोऽवलेहश्च लेहः स्यात् तन्मात्रा स्यात्पलोन्मिता** || "

लिह आस्वादने' धातु से लेह बना है, जिसका अर्थ है ऐसा भोजन पदार्थ जिसे चाट कर खाया जाये । औषध द्रव्य के क्वाथ, स्वरस आदि को और भी पकाने पर जब गाढ़ा चाटने योग्य हो जाये तो उसे अवलेह कहते हैं ।

अवलेह दो प्रकार को बनाया जाता है -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. प्रथम प्रकार - स्वरस या क्वाथादि को अग्नि पर पुनः पकाकर गाढ़ा कर लिया जाता है और बाद में उसमें चूर्णादि का प्रक्षेप मिलाकर अवलेह तैयार कर लिया जाता है । इसमें शर्करा गुडादि पदार्थ मिलाना आवश्यक नहीं है। इस विधि से निर्मित अवलेह शीघ्र विकृत हो जाता है यथा - **कुटजावलेह**

2. द्वितीय प्रकार - स्वरस या क्वाथादि में शर्करा गुड मिश्री आदि मिलाकर अग्नि पर पाक करते हैं और 2 तार की चाशनी तैयार हो जाने पर चूल्हे से नीचे उतारकर चूर्णादि का प्रक्षेप मिलाकर तैयार कर लिया जाता है। इनमें पाक के समय किसी - किसी में गोघृत भी प्रयुक्त होता है यथा:- **वासावलेह**

इसके अतिरिक्त च्यवनप्राश, ब्राह्मरसायन, कूष्माण्डावलेह आदि की निर्माण विधि भिन्न है। इनमें आमलकी, हरीतकी कूष्माण्ड आदि के फलमज्जा (गूदा) को गोघृत, तिलतैल म् भर्जन करते है और क्वाथ आदि में शर्करा आदि मिलाकर चासनी बनाकर पुर्वोक्त विधि स्व अवलेह बनाया जाता है।

अवलेह की परीक्षा -

" सुपक्वे तन्तुमत्वं स्यादवलेहोऽप्सु मज्जति। खरत्वं पीडिते मुद्रागन्धवर्णरसोद्भवः ।। "

1) **तन्तुमत्त्वं -** अवलेह को दर्वी (करछुल) से उठाने पर तार (तन्तु) बंधकर उठता है।
2) **अप्सु मज्जनं (जले निमज्जन):-** जल में डालने पर डूबकर एक स्थान पर बैठ जाता है, फैलता नहीं है।
3) **खरत्व:-** अंगुलियों से दबाने पर खरत्व (कड़ापन) का अनुभव होता है।
4) **अंगुली मुद्रा :-** अवलेह को अंगुली से दबाने पर अंगुली की आकृति बन जाती है अधिक गाढ़ा अवलेह हो तो रेखायें (मुद्रा) भी अंकित हो जाती है।
5) **गन्धवर्णरसोद्भव-** जिस द्रव्यों का अवलेह बनाया जाता है, उनके गन्ध, वर्ण और रस अवलेह में आ जाते हैं।

अवलेह की मात्रा -

- आचार्य **शार्ङ्गधर** ने अवलेह की मात्रा **1 पल (48) ग्राम)** बताई है
- आचार्य **यादवजी** ने अवलेह की मध्यम मात्रा**1 कर्ष (12 ग्राम)** बताई है
- **वर्तमान** में अवलेह की सामान्य मात्रा **12 से 24 ग्राम (1 से 2 तोला)** उचित है

अनुपान - अवलेह का प्रयोग दुग्ध, इक्षुरस, यूष, पञ्चमूनकषाय रोगानुसार योग्य अनुपान से करना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अवलेह मे प्रक्षेप द्रव्य की मात्रा -

- अवलेह एवं रसक्रिया में प्रक्षेप द्रव्य की मात्रा समान बताई है
- शर्करा चूर्ण - चार गुना
- गुड - दो गुना
- द्रव - चतुर्गुण

वासावलेह

" वासकस्वरसप्रस्थे सितामष्टपलोन्मिताम् । सर्पिषो द्विपलं दत्त्वा पिप्पलीद्विपलं तथा ।।

पचेल्लेहत्वमायाते शीते मधु पलाष्टकम् ।। "

घटक द्रव्य : -

- **वासा स्वरस** - 768 ग्राम,
- **शर्करा**-384 ग्राम,
- **गोघृत** - 96 ग्राम ,
- **पिप्पली** - 96 ग्राम ,
- **मधु**- 384 ग्राम

निर्माण विधि -

सर्वप्रथम वासा स्वरस और शर्करा मिलाकर चासनी करें

↓

जब चासनी हो जायें तो पिप्पली चूर्ण और घृत मिलाकर पात्र को नीचे उतारें

↓

जब अवलेह ठण्डा हो जाये तब मधु मिश्रित कर किसी पात्र में सुरक्षित रखें

प्रयोग - कास.श्वास, ज्वर रक्तपित्त राजयक्ष्मा पार्श्वशूल **मात्रा -** 16 से 12 ग्राम

च्यवनप्राश

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

घटक द्रव्य : -

- **बृहत पंचमूल** - बिल्व , गंभारी, अग्निमंथ , श्योनाक. पाटला
- **लघुपंचमूल** - पृश्नपर्णी , शालपर्णी , बृहत्ती, कंटकारी, गोक्षुर
- **त्रिफला -** हरीतकी, **आमलकी**, तामलकी
- **अष्ट वर्ग -** जीवक, ऋषभक , मेदा , काकोली , ऋद्धि

(TRICK)

गुरु द्राक्षा ने पुनः गुड्डू और चंदन को बल के लिए मागध से जीवन पुष्पर्णी लाने कहा, जहा शटी श्रृंगी मस्त विदारी और उत्पल के सूक्ष्म नासिका मे वास करे।

गुरु - अगुरु	**पर्णी** - (माषपर्णी, मुद्गपर्णी)
द्राक्षा - द्राक्षा	**शटी** - शटी
पुनः - पुनर्नवा	**श्रृंगी** - कर्कटश्रृंगी
गुडूची -गुडूची	**मस्त** - मुस्ता
चंदन - श्वेत चंदन	**विदारी** - विदारीकन्द
बल - बला	**उत्पल** - उत्पल
मगध - मागधी (पिप्पली)	**सूक्ष्म** - सूक्ष्म एला
जीवन - जीवन्ती	**नासिका** - काकनासिका
पुष्प - पुष्कर	**वास** - वासा

मात्रा - 48 ग्राम

- आमलकी - 500 नग
- क्वाथार्थ जल-72 288 लीटर (अवशिष्ट -3.072 लीटर)
- गोघृत -288 ग्राम
- तिलतैल 288 ग्राम
- शर्करा 2.400 कि. ग्रा.
- मध 288 ग्राम,
- त्वक् 48 ग्राम,
- वंशलोचन-192 ग्राम,
- पिप्पली-96 ग्राम
- सूक्ष्मैला 48 ग्राम,
- तेजपत्र 48 ग्राम
- नागकेशर-48 ग्राम

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 8319811628 , 8962265728

निर्माण विधि : -

सुपक्व ताजे **500 नग आँवले** लेकर उनको एक कपड़े की **पोट्टली में बाँध** लेते है और सभी **घटक द्रव्यों** को इमामदस्ते में डालकर **यवकुट चूर्ण** बनाकर एक पात्र में रख देते है अब इस पात्र में एक द्रोण पानी भर दिया जाता है और आँवलों की पोट्टली पात्र में डुबोकर उसे **एक चौथाई अवशेष** रहने तक उबाला जाता है।

↓

फिर आँवलों की पोट्टली को अलग करके क्वाथ को छानकर अलग रख लेते है , उबले हुए आँवलों से **बीजों** को निकालकर **गूदे की पिष्टी** बनाकर उसको कपडा या छननी से चौडे पात्र में **छान** लिया जाता है और इसके **रेशे** निकल जाने के बाद गूदे को **घृत और तैल** से हल्का **भूनकर** नमी दूर कर लेते है।

↓

क्वाथ में **शर्करा** मिलाकर **लेहपाक** की अवस्था तक इसे उबालते हैं और उसी समय भर्जित पिष्टी मिलाकर उसे पुनः गर्म करते है, फिर पात्र को अग्नि से नीचे उतार लेते हैं थोड़ा ठण्डा होने पर उसमें **प्रक्षेप द्रव्यों** के सूक्ष्म चूर्ण को अच्छी तरह मिलाते है, फिर अवलेह ठण्डा होने पर **मधु** मिलाकर सुरक्षित पात्र में रख देते हैं।

मात्रा - 12 से 24 ग्राम

अनुपान - क्षीर मुख्य

प्रयोग - कास, श्वास, स्वरभेद, क्षतक्षीण, हृदयरोग, क्षय, रसायन

प्रक्षेप द्रव्य - जिस चूर्ण का अवलेह बनाना हो उससे शर्करा चार गुना गुड दो गुना तथा द्रव चतुर्गुण डालना चाहिए

Ayurvedic Formulation

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सन्धान कल्पना

- सन्धान कल्पनाओ यथा सुरा, मद्य, आसवादि का **वैदिक काल** में उल्लेख मिलता है।
- चिकित्सा की दृष्टि से **सर्वप्रथम चरक संहिता** में संधान कल्पनाओं का विशेष वर्णन पाया जाता है। इसके पश्चात् सुश्रुत संहिता एवं अन्य संहिता ग्रंथों में वर्णन मिलता है।
- आचार्य शारंगधर ने सन्धान कल्पनाओं के विषय में निम्न उल्लेख किया है कि जल, क्वाथ आदि द्रव पदार्थों में गुड, धातकी पुष्प आदि द्रव्यों को सन्धान काल तक रखा रहने पर सन्धान होकर जो द्रव तैयार होता है, उसे आसव, अरिष्ट आदि कहा जाता है। ये कल्पनाएँ **शीघ्र प्रभावकारी** एवं लम्बे समय तक प्रयोग में ली जा सकती है।

सन्धान प्रक्रिया को गुणयुक्त बनाने के लिए **निम्नांकित घटकों का ज्ञान** रखना **आवश्यक** है -

1. **वानस्पतिक द्रव्य :-** वानस्पतिक औषधियाँ नवीन एवं रस, गुण, , विपाकादि से परिपूर्ण लेनी चाहिए।

2. **क्वाथ निर्माण:-**

क्वाथ द्रव्यों को यत्कुट करके चतुर्गुण या सामान्य नियमानुसार जल डालकर चतुर्थांश अवशेष रखा जाता है। क्वाथ निर्माण में श्रेष्ठ घटकों का उपयोग करने पर ही सन्धान कल्पनाएँ श्रेष्ठ बनती है।

3. **क्वाथार्थ जल:-**

सन्धान कल्पनाओं (आसवारिष्ट) के निर्माण के लिए स्वच्छ पीने योग्य जल का निश्चित मात्रा में प्रयोग किया जाना चाहिए।

4. **सन्धान पात्र**:-

प्राचीन काल में सन्धान कल्पना निर्माण के लिए **मिट्टी** के पात्रों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त सागवान काष्ठ पात्र, स्टेनलेस स्टील पात्र, अच्छे प्लास्टिक पात्र, सीमेंट टैंक, चीनी मिट्टी के बड़े पात्र आदि का आवश्यकतानुसार औषध निर्माता कम्पनियाँ प्रयोग में लेती हैं।

5. **सन्धान योग्य स्थान**:-

प्राचीन संहिताओं में सन्धान पात्र को **भूमि के अन्दर** या धान्य राशि में रखने का उल्लेख मिलता है। किन्तु यह व्यवस्था छोटे पात्रों के लिए ही सम्भव हो सकती है। इस व्यवस्था का प्रधान **उद्देश्य ताप नियन्त्रण** करना होता है। अतः सन्धान कार्य हेतु संधान पात्र को **निर्वात कक्ष** में रखा जाना उपयुक्त रहता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 -8319811628 , 8962265728

6. **सन्धान हेतु अनुकूल वातावरण:-**

सन्धान कल्पना के लिए अनुकूल वातावरण का होना अति आवश्यक है। इसके लिए **30 से 35 डिग्री सेन्टिग्रेड** तापमान तथा **शरद एवं बसन्त ऋतु** को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

7. **क्वाथादि में मधुरादि द्रव्यों का मिश्रण:-**

गुड, शर्करा, मधु आदि का उत्तम गुणवान् होना सन्धान के लिए जरूरी है। क्योंकि अच्छी गुणवत्ता का नहीं होने पर आसवारिष्ट का स्वाद अच्छा नहीं होता है।

8. सुगन्धित द्रव्यों का मिश्रण:-

सन्धान कल्पना में प्रक्षेप द्रव्यों को निर्धारित मात्रा में सन्धान प्रक्रिया पूर्ण होने पर डालना चाहिए।

9. सन्धान काल:-

प्राचीन आचार्यों ने सन्धान प्रक्रिया के **लिए 30 दिन** का समय निर्धारित किया है। किन्तु ऋतुकाल के अनुसार यह समय कम ज्यादा हो सकता है।

10. खनिज द्रव्यों (भस्मों) का मिश्रण एवं सुरामापन:-

आसवारिष्टों में जहाँ पर भस्मों को डालने का प्रावधान हो तो वहाँ पर सन्धान समाप्त होने के बाद **वारितर भस्मों** को डालना चाहिए। आसवारिष्टों में सुरा का प्रतिशत मापने के लिए वर्तमान में **एल्कोहल मीटर** का प्रयोग किया जाता है। इस यन्त्र पर 0 से 100 तक अंक निर्धारित होते हैं। जिसको आसवारिष्ट में डुबोकर एल्कोहल की मात्रा का ज्ञान किया जाता है। सामान्यतः आसवारिष्ट में 5 से 15 प्रतिशत तक एल्कोहल की मात्रा पायी जाती है। औषध प्रसाधन अधिनियम के अनुसार 12% से अधिक एल्कोहाल नहीं होना चाहिए।

11. सन्धान परीक्षण:-

सन्धान पात्र में सभी द्रव्यों को डालकर मुख को बन्द करके निर्वात स्थान पर रख दिया जाता है। तब **सात दिन** के पश्चात् **किण्वीकरण** की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। इस समय सन्धान पात्र में **सुन्-सुन् की आवाज** प्रारम्भ हो जाती है एवं कार्बनडाईऑक्साइड गैस का निर्माण शुरू हो जाता है। यह आवाज कान लगाकर सुन सकते हैं। और **जलती तीली** को पात्र के बीच में ले जाने पर **बुझ** जाती है। इसका यह मतलब होता है कि सन्धान प्रक्रिया जारी है। जब किण्वीकरण की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है, तब पात्र में सुन्-सुन् की आवाज बन्द हो जाती है और सन्धान पात्र के बीच में माचिस की जलती तीली ले जाने पर जलती रहती है। जो ऑक्सीजन गैस की उपस्थिति की पहचान है। इस प्रकार आसवारिष्ट निर्माण की परीक्षा की जाती है।

माचिस की जलती तीली ले जाने पर जलती रहती है तब यह मान लेना चाहिए की संधान प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है।

पात्र मे कान लगाकर सुनने पर यादि सुन् - सुन् की आवाज बंद हो जाए तब यह मान लेना चाहिए की संधान प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Lime Water Test:-

सन्धान प्रक्रिया में उत्पन्न CO_2 gas हेतु यह किया जाता है। यह Test परीक्षा करने के लिए सन्धान पात्र के मुख में एक काँच की नली जोड देते है, जिसका दूसरा सिरा **चूर्णोदक** में रखते है। सन्धान क्रिया में जब ग्लूकोज ऑक्सीकृत होकर मद्य (Alcohol) में परिवर्तित होता है तब कार्बन डाई ऑक्साइड गैस नली से होती हुई चूर्णोदक में पहुँचकर **बुलबुले** उत्पन्न करती है तथा जल का **रंग दूधिया (Milky white)** हो जाता है। जब सन्धान प्रक्रिया चल रही होती है, तब यह परीक्षा सकारात्मक होती है। सन्धान प्रक्रिया पूर्ण हो जाने पर चूर्णोदक के रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

आसव

आसव निरुक्ति :- **" षुञ् अभिषवे " धातु से "आसूय निष्पाद्यते' ।**

इससे आसव शब्द की निष्पत्ति हुई है, अर्थात् जिसे संधान करके बनाया जाता है, उसे आसव कहते है
अथवा संधान क्रिया द्वारा निर्मित होने के कारण इसे आसव कहते हैं ।

आसव परिभाषा :- **" यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः । " (शा. सं. म. ख. 10/2)**

अर्थात् अपक्व औषध एवं जल के संयोग से संधान क्रिया द्वारा तैयार मद्य को आसव कहते हैं।

आसव योनियाँ :-

" धान्यफलमूलसारपुष्पकाण्ड पत्रत्वचो भवन्त्यासव योनयोऽग्निवेश! संग्रहेणाष्टौ शर्करानवमीकाः। "

अर्थात् धान्य, फल, मूल, सार, पुष्प, काण्ड, पत्र, त्वक् और शर्करा ये नौ आसव की योनियाँ चरकाचार्य ने मानी है।

आसव संख्या :- चरक संहिता में हितकर **84 आसवों** का उल्लेख किया है ।

Trick - शेर पुत्र तुम काहे घबराते हो, पुष्प मेरे साथ फल खाती है

शेर - शर्करासव - **1**	**पुष्पा** - पुष्पासव - **10**
पुत्र - पत्रासव - **2**	**मेरे** - मूलासव - **11**
तुम - त्वगासव - **4**	**साथ** - सारासव - **20**
काहे - काण्डासव - **4**	**फल** - फलासव - **26**
घबराते - धान्यासव - **6**	

आसव गुण :-

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

"मनः शरीराग्निबलप्रदानामस्वप्नशोकारुचिनाशनानाम् । संहर्षणानां प्रवरासवानामशीतिरूक्ता चतुरूत्तरैषा ।।"

अर्थात् मन , शरीर एवं अग्नि के लिए बलवर्द्धक , शोक एवं अरुचि का नाशक और मन को प्रसन्न करने वाला होता है ।

अरिष्ट

अरिष्ट परिभाषा :- **" न रिष्यते इति अरिष्टः " ।**

अर्थात् जो चिरकाल तक नष्ट (खराब) नहीं हो , उसे अरिष्ट कहते हैं तथा औषधियों का क्वाथ निर्माण कर सन्धान करने पर अरिष्ट का निर्माण होता है।

अरिष्ट के गुण :-

" शोषार्शोग्रहणीदोषपाण्डुरोगारुचिज्वरान् I हन्त्यरिष्टः कफकृतान् रोगान् दीपनपाचनः ।। "

अरिष्ट का सेवन करने पर शूल , शोष , अर्श , ग्रहणी , पाण्डु , अरुचि , ज्वर , दीपक , पाचक , कफवातहर , दोषशामक होता है।

आसवारिष्ट निर्माण विधि :-

वानस्पतिक द्रव्यों के क्वाथ , स्वरस आदि में गुड , शर्करा या मधु मिलाकर सन्धान पात्र में रखकर उसमें किण्व एवं सुगन्धित एवं अन्य औषध द्रव्यों का चूर्ण या यवकुट चूर्ण मिलाकर शरावसम्पुट कर निर्वात स्थान में 20-25 दिनों के लिए रखें। फिर मद्य के निष्पन्न होने पर परीक्षा करके छानकर पुनः उस पात्र को मांसी , मरिच , अगरू से प्रलिप्त या धूपित करके सन्धान पात्र का मुख बन्द कर कुछ दिन तक रखा रहने दे। फिर छानकर सुरक्षित पात्र में रखा जाता है। इस प्रकार विद्वान् लोग इसे आसवारिष्ट कहते हैं।

आसवारिष्टों में जल , गुड , मधु एवं प्रक्षेप का मान :-

- **जल :-** 1 द्रोण (12.288 लीटर) मे
- **गुड :-** 1 तुला (4.800 किग्रा .) ,
- **मधु :-** 1/2 तुला (2.400 किग्रा) ,
- **प्रक्षेप द्रव्य :-** 480 ग्राम

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आसवारिष्ट सेवन मात्रा :- **तयोर्मानं पलोन्मित्** - एक पल

आसवारिष्ट अनुपान :- भोजनोत्तर समान भाग जल के साथ।

आसव एवं अरिष्ट मे अंतर

आसव	अरिष्ट
1) संधान क्रिया द्वारा निर्मित होने के कारण इसे आसव कहते हैं (किसी सन्धान पात्र में **जल स्वरस** हिम में मुड शर्करा मधु एव सुगन्धित प्रक्षेप द्रव्या का चूर्ण धातकी पुष्प किण्वादि निर्धारित मात्रा में मिश्रित कर 15 से 30 दिनों तक सन्धान हेतु निश्चित स्थान पर रखा जाता है। इस प्रकार जो मद्य तैयार हो जाता है उसे **आसव** कहते हैं)	1) औषधियों का **क्वाथ निर्माण** कर सन्धान करने पर अरिष्ट का निर्माण होता है योगोत औषधि द्रव्यों का क्वाथ बनाकर उसमें गुड शर्करा मधु एवं सुगन्धित प्रक्षेप द्रव्यों का चूर्ण धातकी पुष्प किण्वादि निर्धारित मात्रा में सन्धाःमें मिश्रित कर से दिनों तक सन्धान हेतु निक्षित स्थान पर रखा जाता है। इस प्रकार जो मा तैयार हो जाता है उसे **अरिष्ट** कहते हैं।
2) आसव अपक्व जल एवं औषध से बनाया जाता है।	2) अरिष्ट पक्व जल एवं औषधादि से बनाया जाता है।
3) आसव अरिष्ट से कम गुणवान् होता है।	3) विविध द्रव्यों के संयोग एवं संस्कार से लघुपाकी होने के कारण अरिष्ट आसव से अधिक गुणवान् होता है।
4) मन शरीर एवं अग्नि के लिए बलवर्द्धक शोक एवं अरुचि का नाशक। ।	4) दीपक पाचक कफवातहर दोषशामक पित्तवृद्धिकर होता है। अरिष्ट का सेवन करने पर शूल शोष अर्श ग्रहणी पाण्डु अरुचि ज्वर आध्मान उदररोग प्लीहा अजीर्ण अर्श विबन्ध आदि रोगों को दूर करता है।
5) **प्रचलित आसव -** द्राक्षासव कुमार्यासव, चन्दनासव अरिष्ट	5) **प्रचलित अरिष्ट -** अश्वगंधारिष्ट,अशोकारिष्ट,अमृतारिष्ट, द्राक्षारिष्ट।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सुरा कल्पना

" परिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नां सुरां जगुः । "

अर्थात् यव , चावल आदि अन्न को पकाकर सन्धान करने के बाद मध्यमार द्वारा स्रवण (Distilation) करके प्राप्त होने वाले द्रव को सुरा कहते हैं।

सुरा के गुण : - **" कृशानां रक्तमूत्राणां ग्रहण्यशविकारिणाम् । सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेषु च ॥ "**

अर्थात् सुरा का उचित मात्रा में सेवन करने पर कास , अर्श , ग्रहणीरोग एवं मूत्राघात को नष्ट करती है। यह वातहर , दूध , रक्तक्षय में हितकर , बृंहण एवं अग्निदीपन होती है।

सुरा के भेदः - सुरा के ये **पांचों** स्तर **प्रसन्ना , कादम्बरी , जगल , मैदक** और **वक्कस (सुराबीज)** होते हैं।

1) सुरा के ऊपर का स्वच्छ मण्ड भाग को प्रसन्ना ,
2) प्रसन्ना की अपेक्षा नीचे के गाढ़े भाग की कादम्बरी ,
3) कादम्बरी से भी नीचे के गाढ़े भाग को जगल ,
4) जंगल से नीचे के गाढ़े भाग को मेदक,
5) सुरापात्र में अवशिष्ट निःसार घन भाग को सुराबाज , बक्कस , किण्व या सुकिल्क कहते है।

ऊपर से नीचे का स्तर **गुणों में भी न्यूनता** होती जाती है। **क्रमश : गाढ़ा** होता चला जाता है , **मद्य** (Alcohol) की **मात्रा कम** होती जाती है।

Trick - प्रसन्न कादम्बरी जंगल मेंढक वनो

" छर्धरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दनी ।
प्रसन्ना कफवातार्शोविबन्धानाहनाशिनी ॥ "

प्रसन्ना से कुछ अल्प गुण कादम्बरी के होते हैं।

प्रसन्ना
कादम्बरी
जगल
मेदक
वक्कस (सुराबीज)

जगल का उचित मात्रा में सेवन करने पर ग्राही , हृद्य , उष्ण , पाचक एवं रूक्ष होता है।

इसमें जगल से अल्प गुण होते हैं।

सुराबीज (वक्कस) निःसार होने से सेवन करने पर विष्टम्भी , वातकोपक , अग्निदीपक , सृष्टविण्मूत्र , विशद , गुरु एवं अल्प मद को उत्पन्न करता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मैरेयक

आसव एवं सुरा को समान मात्रा में पात्र में डालकर सन्धान करने पर प्राप्त द्रव को मैरेय कहते हैं। सुश्रुत संहिता में इसे ही सुरासव कहा है।

मैरेय के गुण :- यह तीक्ष्ण , कषाय , मदकारी , मधुर और गुरू होता है। यह अर्श , कफ , गुल्म , कृमि , मेद और वातनाशक होता है।

सुरासव

जिस मद्य के सन्धान में जल के स्थान पर सुरा का ही प्रयोग किया जाए उसे सुरासव कहते है।

सुरासव के गुण :- " सुरासवः तीक्ष्णमदो वातघ्नो वदनप्रियः। छेदी मध्वासवस्तीक्ष्णो मैरेयो मधुर गुरुः ।। "

सुरासव मधुर , गुरु , तीक्ष्ण , हृद्य , मूत्रल , कफवातनाशक , मुख के लिए प्रिय और तीव्र एवं स्थिर नशा उत्पन्न करने वाला होता है।

वारुणी (ताड़ी/ नीरा)

ताड़ , खर्जूर आदि तने के अग्रभाग पर चीरा लगाकर पात्र लगाने से एकत्र रस 2-3 दिन में मद्य रूप में परिवर्तित हो जाता है।

वारुणी के गुण :- वारूणी लघु , तीक्ष्ण , हृद्य , शूल , कास , छर्दि , श्वास , विबन्ध , आध्यान एवं पीनस आदि रोगों को नष्ट करती है। इस प्रकार वारुणी भी सुरा जैसी ही गणुवान् होती है।

Ayurvedic Formulation

सीधु

इक्षुरस आदि मधुर द्रवों के संधान से निर्मित मद्य को सीधु (सिरका) कहते है। सीधु **दो प्रकार** का होता है :-

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. अपक्व रस सीधु -

- ईक्षु रस आदि मधुर द्रवों को बिना अग्नि पर पकाये सन्धान करके तैयार किए हुए मद्य को अपक्वरस सीधु कहते हैं
- अपक्व रस सीधु आहार को पचाने वाला , स्वर एवं वर्ण को शुद्ध करने वाला , लेखन , कर्शन करने वाला और शोथ , उदर , अर्श एवं विबन्ध को नष्ट करता है।

2. पक्वरस सीधु -

- पकाये हुए मधुर द्रवों के द्वारा सन्धान करके तैयार किए हुए मद्य को पक्वरस सीधु कहते हैं।
- अर्थात् पक्वरस सीधु भोजन के प्रति रुचि उत्पन्न करने वाला , अग्निदीपक , हृद्य , वर्ण्य , बल्य , सर , मेद एवं कफज रोगों को नष्ट करने वाला और शोष , शोध , अर्श आदि रोगों को नष्ट करके शरीर के लिए हितकारी होता है।

मद्य कल्पना

सन्धान प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न होने वाली कल्पना को मद्य कल्पना कहते हैं। इस मद्य कल्पना के अन्तर्गत आसव , अरिष्ट , सुरा , प्रसन्ना , कादम्बरी , मेदक , जगल , सीधु , मैरेय , कोहल , वारूणी आदि सम्मिलित होते हैं।

मद्य निरुक्ति :- **" बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते। तमोगुणप्रधानं च यथा मद्यं सुरादिकम्॥ "**

जिस द्रव द्रव्य के सेवन करने पर बुद्धि का लोप हो जाय और शरीर एवं मन में नशा उत्पन्न हो जाय और तमोगुण की प्रधानता का आभास हो तो उसे मद्य कहते हैं।

पर्याय:- सीधु , मैरेय , इरा , मदिरा , सुरा , कादम्बरी , वारुणी , हाला , बलवल्लभ , अरिष्ट , आसव , प्रसन्ना , जगल , कोहल , मेदक और सुरासव।

मद्य के गुण :- **" हिक्काश्वासप्रतिश्यायकासवग्रहारुचौ। वम्यानाहविबन्धेषु वातघ्नी मदिरा हिता॥ "**

मद्य का सेवन करने पर कास , श्वास हिक्का , प्रतिश्याय , विबन्ध , आनाह , अरुचि , वमन , ग्रहणी , अर्श आदि रोगों को नष्ट करते हैं।

मद्य के दोष :- **" सान्द्रं विदाही दुर्गन्धं विरसं कृमिलं गुरु। अहृद्यं तरुणं तीक्ष्णमुष्णं दुर्भाजनस्थितम्॥**

अल्पौषधं पर्युषितमत्यच्छं पिच्छिल च यत्। तद्द्वर्ज्यं सर्वथा मद्यं किञ्चिच्छेषं च यद्भवेत्॥ "

अर्थात् जो मद्य गाढ़ा , विदाही , दुर्गन्धित , विकृत रस , कृमियुक्त , गुरु , हृदय के प्रतिकूल , नवीन , तीक्ष्ण , उष्ण , मलिन पात्र स्थित , अल्प औषधियों से निर्मित , बासी , जलयुक्त , पिच्छिल और पात्र में तल छट युक्त हो , इस प्रकार के मद्य को पीने पर क्रमशः कफ , पित्त एवं वात दोषों को बढ़ाता है। अतः दोषयुक्त मद्य का सेवन नहीं करना चाहिए।

Ayurvedic Formulation

शुक्तकल्पना

संधान के समय ठीक से मद्य न बने व अम्लता आ जाये उसे शुक्त / सिरका कहते हैं। सूरण आदि कन्द , मूली , गाजर आदि मूल , लौकी , सेम आदि फल , राई तथा तैल के पकोड़े एवं लवणों को जल या ईक्षुरस में डालकर किए जाने वाले सन्धान को शुक्त कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

शुक्त के गुण :- शुक्त, रक्तपित्तकर , छेदक , पाचक , स्वरविकृतिकारक , आमदोषहार , कफ , पाण्डु , कृमिहर , लघु , तीक्ष्ण , उष्ण , मूत्रल , हृद्य , कफनाशक और होता है। इस प्रकार सन्धानित मद्य विशेषकर रुचि उत्पन्न करने वाले होते हैं।

काञ्जिक

उबाले हुए गेहूँ , चना आदि (कुल्माष) , चावल , यव आदि धान्यों के मण्ड तथा राई , नमक , हरिद्रा आदि को मिश्रित कर सन्धान करने पर प्राप्त अम्ल द्रव को काञ्जिक कहते हैं **अथवा** शालि चावल को सिद्ध कर पात्र में डालकर त्रिगुण पानी मिश्रित कर सन्धान करने के उपरान्त प्राप्त द्रव को काञ्जि कहते हैं। आरनाल और धान्याम्ल भी काजिक को ही कहा गया है।

काजिक के गुण :- काजिक स्पर्श से दाहज्वरहर , पीने से वातकफविकार नाशक , दीपन , मलमूत्रसारक , विबन्ध नाशक , तृषानाशक एवं लघु है।

सौवीरक एवं तुषोदक

तुष रहित पक्व यव कासन्धान करने पर प्राप्त द्रव को सौवीरक कहते हैं। कच्चे यव के टुकड़ों द्वारा सन्धान करने पर प्राप्त द्रव को तुषोदक कहते हैं।

सौवीकर एवं तुषौदक के गुण :- सौवीरक एवं तुषोदक अग्निदीपक , पाचक , मलभेदक , हृद्य , पाण्डु , कृमिरोग , ग्रहणी और अर्श रोगों के लिए हितकारी होते हैं।

चुक्र

मद्य अथवा इक्षु आदि मधुरद्रव जब अम्ल रस युक्त हो जाता है , तो उसे विनष्ट (मर गया है या बिगड़ गया है) कहते हैं। पुनः इसका सन्धान करने पर जो अम्ल पदार्थ प्राप्त होता है , उसे चुक्र कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अशोकारिष्ट

घटक द्रव्य :- **(TRICK)**

अशोक ने नगर से चंदन व नीलधातु पुष्प लेकर वाशु जी के द्वार गया और वहा त्रिफला, आम, गुड खाया

अशोक - अशोकत्वक	**वा** - वासा
नगर - नागरमोथा	**जी** - (श्वेत जीरक , कृष्ण जीरक)
चंदन - रक्तचंदन	**द्वार** - दारूहल्दी
नील - नीलकमलपुष्प	**त्रिफला** - (आमलकी, विभितकी, हरीतकी)
धातु - धातकीपुष्प	**आम** - आम की गुठली

- अशोकत्वक - **4.8 Kg**
- गुड - **9.6 Kg**
- धातकीपुष्प- **768 gm**
- शेष द्रव्य - **48 gm**

निर्माण विधि-

गुड **प्रक्षेप द्रव्य**

क्वाथ

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सर्वप्रथम एक बड़े पात्र में अशोक की छाल को यवकुट कर जल के साथ मिलाकर मध्यमाग्नि द्वारा चतुर्थांश अवशेष **क्वाथ** का निर्माण किया जाता है।

इसके बाद सन्धान पात्र में **क्वाथ** डालकर **गुड** को घोला जाता है। अब **प्रक्षेप द्रव्यों** का यवकुट चूर्ण करके पात्र में डालकर सन्धान पात्र को **ढक्कन से ढक** दिया जाता है।

फिर सन्धान पात्र को **निर्वात स्थान** पर एक माह तक सुरक्षित रखा जाता है। तत्पश्चात **संधान परीक्षा** करके अशोकारिष्ट को छानकर काँच की **शीशियों** में भरकर सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है।

मात्रा :- 20-30 मि.ली. दिन में प्रातः एवं सायम्

अनुपान :- भोजनोत्तर समानमात्रा में जल के साथ

मुख्य उपयोग :- रक्त प्रदर , श्वेतप्रदर , कष्टार्तव , योनिरोग, ज्वर, रक्तपित्त , अर्श मन्दाग्नि, अरोचक, प्रमेह शोथ आदि रोगनाशक

तक्रारिष्ट

घटक द्रव्य :- **(TRICK)**

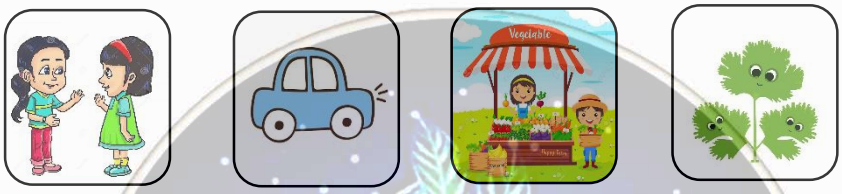

हर्षा हुमा जी कार से आज बाजार जाकर 3 पाव धनिया मूल लेने गई

हर्षा - हपुषा - **48** ग्राम	**आज**- अजमोदा, अजवायन- **48** ग्राम
हुमा - मगरैल- **48** ग्राम	**3 पाव**- पिप्पली, पिप्पलीमूल, गज पिप्पली- **48** ग्राम
जी- कृष्ण जीरक , श्वेत जीरक- **48** ग्राम	**धनिया** - धनिया- **48** ग्राम
कार- कचूर- **48** ग्राम	**मूल** - चित्रक मूल- **48** ग्राम

Ayurvedic Formulation

निर्माण विधि:-

सभी वानस्पतिक द्रव्यों का यवकुट चूर्ण कर घृतभावित मिट्टी के पात्र में तक्र के साथ मिश्रित करके मुख बन्द कर धान्य राशि में रखें। आठवें दिन सन्धान का परीक्षण करने पर यदि उचित सन्धान हो गया हो तो छानकर काँच की शीशियों में भरकर सुरक्षित रखा जाना चाहिए, अम्ल, कटु और स्वादु प्रतीत होने पर इसका सिद्धि लक्षण मानना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 -8319811628 , 8962265728

मात्रा:- 20-30 मि. ली. दिन में प्रातः एवं सायम्।

अनुपान:- भोजनोत्तर समानमात्रा में जल के साथ।

मुख्य उपयोग:- दीपक, पाचक, वर्ण्य, बल्य, रुच्य, कफ एवं वात का अनुलोमक, तृष्णा, शोथ, कण्डू, वेदनानाशक।

दशमूलारिष्ट

घटक द्रव्य :- **(Total 54 घटक द्रव्य)**

दशमूल के द्रव्य -

- **बृहतपंचमूल** - पाटला, अग्निमन्थ, श्योनाक, बिल्व, गंभारी
- **लघुपंचमूल** - कण्टकारि, बृहती, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, गोक्षुर

अष्टवर्ग- जीवक , ऋषभक , मेदा , महामेदा , काकोली , क्षीरकाकोली , ऋद्धि और वृद्धि

पंचकोल - पिप्पली , पिप्पलीमूल , चव्य , चित्रक ,शुण्ठी

त्रिफला - आमलकी, विभीतकी, हरीतकी

त्रिमद - नागरमोथा , विडंग , चित्रकमूल

त्रिवृत्त - त्रिवृत्त

(TRICK)

विजय | रेणु - इन्द्र देव, सरिवा - हरि देव, रास्ना - जटा जी | मंदिर | प्रसाद → गुड, सुपारी, यव, मधू और शत भाग लोध्र | पुष्प → प्रिय पुष्प और पद्म | प्रार्थना | 3 का पुनः झगड़ा ना हो

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विजय के साथ रेणु(इंद्र देव), सारिवा(हरि) और रास्ना (जटा जी) के मंदिर जाति है, वहां प्रसाद (गुड, सुपारी, यव, मधु और शत भाग लोध्र) और प्रिय, पुष्प, पद्म, खरीदती है और प्रार्थना करती है कि 3 का पुनः झगड़ा न हो।

विजय- विजयसार	**यव -** यवासव
रेणु - रेणुका	**मधु -** यष्टिमधु
इंद्र - इंद्रयव	**शत -** शतपुष्पा
देव - देवदारू	**भाग -** भारंगी
सारिवा - सारिवा	**लोध्र -** लोधृत्वक
हरि - हरिद्रा	**प्रिय -** प्रियंगु

रास्ना - रास्ना	**पुष्प** - पुष्करमूल
जटा - जटामांसी	**पद्म** - पद्मकाष्ठ
जी - कृष्ण जीरक	**खरीदती** - खदिरकाष्ठ
मंदिर - मंजिष्ठा	**3 का** - कुष्ठ, कचूर, कपित्थ
गुड - गुडूची	**पुनः** - पुनर्नवा
सुपारी - सुपारी	**न** - नागकेशर

- दशमूल - **240 ग्राम**
- चित्रकमूल , पुष्करमूल - **1.2 kg**
- आमलकी - **768 ग्राम**
- लोध्रत्वक, गुडूची - **960 ग्राम**
- खदिरकाष्ठ , हरीतकी , विजयसार - 384 ग्राम
- यवासक - **576 ग्राम** , शेष द्रव्य - **96 ग्राम**

निर्माणविधिः-

सर्वप्रथम क्रम संख्या 1 से 54 तक के क्वाथ द्रव्यों का यवकुट चूर्ण करके अष्टगुण जल के साथ किसी बड़े पात्र में डालकर मध्यमाग्नि द्वारा पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ का निर्माण किया जाता है। फिर अन्य पात्र में द्राक्षा को भी चतुर्गुण जल में पकाकर त्रिपाद शेष क्वाथ बनाया जाता है।

अब किसी उपयुक्त सन्धान पात्र में दोनों क्वाथों को डालकर उसमें गुड को घोलकर मिश्रित किया जाता है। फिर शेष प्रक्षेप द्रव्यों का यवकुट चूर्ण करके सन्धान पात्र में डाल दिया जाता है और पात्र को ढक्कन से ढक दिया जाता है।

फिर सन्धान पात्र को **निर्वात स्थान** पर एक माह तक सुरक्षित रखा जाता है। तत्पश्चात **संधान परीक्षा** करके अशोकारिष्ट को छानकर काँच की **शीशियों** में भरकर सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मात्राः- 20-30 मि. ली. दिन में दो बार प्रातः एवं सायम्।

अनुपानः- भोजनोत्तर समान मात्रा में जल के साथ।

मुख्य उपयोगः- वृष्य, पुष्टिकर, बल्य, शुक्रल, बृंहण, गर्भप्रद, धातुक्षयनाशक, ग्रहणी, अरुचि, श्वास, कास, गुल्म, भगन्दर, वातव्याधि, क्षय, छर्दि, पाण्डु, कामला, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदररोग, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र।

द्राक्षाअरिष्ट

घटक द्रव्य -

(TRICK)

प्रियंगु इला को नाग के डंक से बचाने के लिए पीला पुष्प द्राक्षा व पत्र में चीनी मरीच दिया।

प्रिय - प्रियंगु	**पुष्प** - धातकी पुष्प
गु - गुड़	**द्राक्षा** - द्राक्षा
इला - इलायची	**पत्र** - तेजपत्र
नाग - नागकेसर	**चीनी** - दालचीनी
डंक - विडंग	**मरीच** - मरीच
पीला - पिप्पली	

- द्राक्षा - **2.4 kg**
- गुड - **9.6 kg**
- धातकी पुष्प - **240 ग्राम**
- शेष द्रव - **48 ग्राम**
- जल - **24.576 लिटर**

निर्माण विधि-

गुड **प्रक्षेप द्रव्य**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सर्वप्रथम एक बड़े पात्र में द्राक्षा (मुनक्का) एवं जल की डालकर मध्यमाग्नि युक्त चूल्हे पर चढ़ाकर चतुर्थांश अवशेष क्वाथ का निर्माण किया जाता है

फिर क्वाथ को शीतल होने पर मुनक्का को मसलकर और छानकर सन्धान पात्र में रखे फिर 9.600 किग्रा गुड डालकर अच्छी तरह घोल दें। अन्त में घातकी पुष्प और प्रक्षेप द्रव्यों के यवकुट चूर्ण को डालकर सन्धान पात्र पर ढक्कन रखकरकपड़मिट्टी कर दें।

अब सन्धान पात्र को निर्वात स्थान पर सुरक्षित एक माह तक रखा रहने दिया जाता है। तत्पश्चात् सन्धान परीक्षा कान लगाकर सुनने पर सुन् - सुन् की आवाज बन्द होना एवं जलती माचिस की तीली पात्र के मध्य में ले जाने पर जलती ही रहना द्वारा की जाती है। सन्धान द्रव्य को छानकर शीशियों में पैक कर लेबलिंग लगाकर सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है।

मात्रा : - 20-30 मिली . दिन में दो बार प्रातः एवं सायम्।

अनुपान : - भोजनोपरान्त समान मात्रा में जल के साथ।

मुख्य उपयोग : - उरःक्षत , क्षय , कास , श्वास एवं कण्ठरोगनाशक , दीपक , पाचक , बल्य , मलशोधक।

कुमार्यासव

घटक द्रव्य -

- **षड्षण -** पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक, शुण्ठी, मरिच
- **चतुर्जात -** दालचीनी, एला, तेजपत्र, नागकेशर
- **त्रिफला -** हरीतकी, विभीतकी, आमलकी
- **त्रिमद -** विडंग, मुस्ता, चित्रक

(TRICK)

PM TB होगया, मधु कुमारी गो को धनिया रास्ना से बल प्राप्त कराकर, हरिदेव के मंदिर में हिंग लवंग और सुपारी देकर पुनः गजहपुषा स्लो (Slow) मूवी देखकर गुड खाती है।

Ayurvedic Formulation

P - पुष्प (शतपुष्पा)	**मंदिर -** मंजिष्ठा
M - मूल (पुष्करमूल, धातकीमूल, दंतीमूल)	**हिंग -** हिंगपत्री
T - त्वक (लोध्रत्वक)	**लवंग -** लवंग
B - बीज (कौंचबीज, उटिंगणबीज)	**सुपारी -** सुपारी
मधु - मधु	**पुनः -** (श्वेत पुनर्नवा, रक्त पुनर्नवा)
कुमारी - घृतकुमारी	**गज -** गजपिप्पली
गो - गोक्षुर	**हपुषा -** हपुषा
धनिया - धनिया	**स्लो -** (स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म)
रास्ना - रास्ना	**मूवी -** मूर्वा
बल - (बला, अतिबला)	**गुड -** गुड, गुडूची
कराकर - अकरकरा	**देव -** देवदारु
हरि - हरिद्रा, दारूहरिद्रा	

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

- घृतकुमारी स्वरस -**12.288 लीटर**
- गुड - **4.8 kg**
- मधु - **2.4 kg**
- लोहभस्म - **2.4 kg**
- शेष सभी - **24 gram**

निर्माण विधि-

घृतकुमारी स्वरस / गुड एवं मधू / भस्म / यवकुट चूर्ण/ धातकीपुष्प

मुख बन्द/ निर्वात स्थान/ संधान परीक्षा

सर्वप्रथम **घृतकुमारी स्वरस , गुड एवं मधु** को सन्धान पात्र में डालकर अच्छी तरह मिश्रित करके उसमें लौहभस्म , स्वर्ण माक्षिक **भस्म** को मिलायें । इसके बाद शेष प्रक्षेप द्रव्यों का **यवकुट चूर्ण** करके पात्र में डालकर मिलायें ।

अन्तः में **धातकीपुष्प** को डालकर सन्धान पात्र का **मुख बन्द** करके सुरक्षित **निर्वात स्थान** पर रखा जाता है । एक माह पश्चात् सन्धान परीक्षण विधि से **परीक्षा** करके उचित सन्धान हो जाने पर वस्त्र से छानकर काँच की शीशियों में भरकर पैकिंग करके लेबल लगाकर सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है ।

Ayurvedic Formulation

मात्रा : - 20-30 मि . ली . दिन में दो बार प्रातः एवं सायम् ।

अनुपान : - भोजनोत्तर समान मात्रा में जल के साथ ।

मुख्य उपयोग : - बल्य , वर्ण्य , अग्निदीपक , वृष्य , बृंहण , पाचक , परिणामशूल , कष्टार्तव , नष्टार्तव , क्षय , प्रमेह , उदावर्त , अपस्मार , मूत्रकृच्छ्र , शुक्रदोष , अश्मरी , कृमि , रक्तपित्त नाशक ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चन्दनासव

घटक द्रव्य :-

पद्म कुमारी ने कपूर को गुड़ द्राक्षा लेने पर बताया ?

गंभीर शर्करा से लोध्र ग्रोध हुई, प्रिय मोचि को पटोल ने नगर के कांच मंदिर में पीला पुष्प,आम व सुगंधी चंदन मला जो उसे रास आई।

पद्म - पद्मकाष्ठ	**चि** - चिरायता
कुमारी - घृतकुमारी (पाठा)	**पटोल** - पटोल पत्र
कपूर - कचूर	**नगर** - नागरमोथा
गुड़ - गुड़	**कांच** - काचनारत्वक
द्राक्षा - द्राक्षा	**मंदिर** - मंजिष्ठा
पर - पर्पट	**पीला** - पिप्पली
गंभीर - गंभारी	**पुष्प** - धातकी पुष्प ,नीलकमल पुष्प
शर्करा - शर्करा	**आम** - आम्र त्वक
लोध्र - लोध्र	**सुगंधी** - सुगंधवाला
ग्रोध - न्यग्रोध	**चंदन** - रक्त चंदन , श्वेत चंदन
प्रिय - प्रियंगुपुष्प	**मला** - मुलेठी
मो - मोचरस	**रास्ना** - रास्ना

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- द्राक्षा - **960 ग्राम**
- गुड - **2.4 kg**
- धातकी पुष्प - **768 ग्राम**
- शर्करा - **4.8 kg**
- जल - **24.576 लीटर**

निर्माण विधि:-

द्राक्षा / गुड / शर्करा /प्रक्षेप द्रव्यों का यवकुट चूर्ण/ धातकीपुष्प

मुख बन्द/ निर्वात स्थान/ संधान परीक्षा

सर्वप्रथम सन्धान पात्र में **द्राक्षा, गुड, शर्करा** एवं जल डालकर अच्छी प्रकार से मिश्रित करें। फिर शेष **प्रक्षेप द्रव्यों का यवकुट चूर्ण** का पात्र में मिलाकर अन्त में **धातकीपुष्प** डालकर मुख बन्द करके एक माह तक सन्धान के लिए रख दिया जाता है।

एक माह पश्चात् सन्धान परीक्षण विधि द्वारा **परीक्षा** करके उचित सन्धान हो जाने पर वस्त्र से छानकर काँच की शीशियों में भरकर पैंकिंग करके लेबल लगाकर सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है।

मात्रा:- 20-30 मिली. दिन में दो बार प्रातः एवं सायम्।

अनुपान:-भोजनोत्तर समान मात्रा में जल के साथ।

मुख्य उपयोग:- बल्य, वृष्य, पुष्टिकर, हृद्य, अग्निदीपक, शुक्रमेह. मूत्रकृच्छ्र, संपूर्ण प्रकार के बीस प्रमेह नाशक।

Ayurvedic Formulation

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्नेह कल्पना

स्नेह के गुण -

" गुरुशीतसरस्निग्धमन्दसूक्ष्ममृदुद्रवम् । विरूषण औषधं स्नेहनं प्रायो विपरीत ....।। "

अर्थात् गुरु , शीत , सर , स्निग्ध , मन्द , सूक्ष्म , मृदु और द्रव - इन आठ गुणों वाले द्रव्यों को स्नेह कहते हैं।

स्नेह के प्रकार -

" सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मता: । एषु चैवोत्तमं सर्पि: संस्कारस्यानुवर्तनात् ।। "

अर्थात् घृत , तैल , वसा और मज्जा ये चार प्रकार के स्नेह समस्त स्नेहों में श्रेष्ठ माने गये हैं। **घृत सबसे श्रेष्ठ** माना गया है , क्योंकि घृत संस्कारों से दूसरों के गुणों को अपने में आत्मसात् कर लेता है।

स्नेह योनि -

" स्नेहानां द्विविधा चासौ योनि: स्थावरजङ्गमा ।। "

स्नेह की योनि 2 प्रकार की बताई गई है -

1) स्थावर स्नेह योनि
2) जङ्गम स्नेह योनि

1) स्थावर स्नेह योनि -

तिल , चिरौंजी , पिस्ता , विभीतक , रक्त एरण्ड , हरीतकी , एरण्ड , महुआ , सर्षप , कुसुम्भ , बिल्व , वासा , मूली , अलसी , नीम का बीज , अखरोट , करञ्ज , सहिजन आदि द्रव्यों को स्थावर स्नेह की योनि में माना गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) जङ्गम स्नेह योनि -

मछली , मृग पशु (गाय , भैंस , बकरी आदि) और पक्षी सभी को जङ्गम स्नेह की योनि में माना गया है। जिनके दूध , घृत , दधि , मांस , वसा और मज्जा का प्रयोग होता है। प्राणिज स्नेहों में घृत , मज्जा , वसा का विशेष प्रयोग होता है।

- ❖ शरीर में बल एवं स्नेहन के लिए समस्त स्थावर तैलों में तिल का तैल
- ❖ विरेचन के लिए एरण्ड का तैल श्रेष्ठ होता है
- ❖ जङ्गम स्नेहों में घृत , वसा और मज्जा मुख्य माने गये हैं

स्नेह पाक कल्पना -

चिकित्सा में प्रयोग करने के लिए घृत , तैल आदि स्नेह को क्वाथ , स्वरस , दुग्ध , जल आदि द्रव पदार्थ तथा औषध द्रव्यों के कल्क के साथ पकाकर जो कल्पना की जाती है , उसे स्नेहकल्पना या स्नेहपाक कल्पना कहते हैं।

स्नेहमूर्च्छन -

घृत , तैल आदि स्नेहों की उग्रता , दुर्गन्ध और आमदोष को दूर करके उनमें सुगन्ध व उत्तम वर्ण की उत्पत्ति हेतु सर्वप्रथम कुछ विशिष्ट द्रव्यों के साथ पाक करना स्नेहमूर्च्छन कहलाता है।

स्नेहमूर्च्छन करने से स्नेह में योगोक्त औषधियों के गुण ग्रहण की शक्ति में वृद्धि हो जाती है।

1. घृत मूर्च्छन -

द्रव्य - हरीतकी , बिभीतकी , आमलकी (त्रिफला) , नागरमोथा , हरिद्रा और मातुलुङ्ग नींबू स्वरस

Trick - **नगर से त्रिफला , हरिद्रा और नींबू लाओ**

मात्रा - एक - एक पल

जल - एक प्रस्थ

विधि -

एक प्रस्थ घृत को स्टील के पात्र में डालकर **मन्दाग्नि पर गर्म** करके पात्र को चूल्हे से नीचे उतार कर घृत को थोड़ा सा शीतल करें

⇩

इसके पश्चात् हरीतकी , बिभीतकी , आमलकी , नागरमोथा , हरिद्रा और मातुलुङ्ग नींबू स्वरस **प्रत्येक द्रव्य एक - एक पल** लेकर उसका कल्क बनाकर घृत में शनैः शनैः डाला जाता है

⇩

बाद में एक प्रस्थ जल डालकर मन्दाग्नि द्वारा फेन और जल रहित होने तक घृत को पकाकर मूर्च्छन किया जाता है

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लाभ - घृत आमदोष रहित , वीर्यवान् और सुखदायक हो जाता है

2. तिल तैलमूर्च्छन -

द्रव्य - मंजिष्ठा , हरिद्रा , लोध्र , नागरमोथा , नलिका , आमलकी , विभीतकी , हरीतकी , केतकीपुष्प , वटाङ्कुर , सुगन्धबाला

Trick - **अंकुर लोध्र के लिए नगर के मंदिर से सुगंधी पुष्प , त्रिफला , नलिका एवं हरिद्रा लाता है**

अंकुर - वटाङ्कुर	**पुष्प** - केतकीपुष्प
लोध्र - लोध्र	**त्रिफला** - आमलकी , विभीतकी , हरीतकी
नगर - नागरमोथा	**नलिका** - नलिका
मंदिर - मंजिष्ठा	**हरिद्रा** - हरिद्रा
सुगंधी - सुगन्धबाला	

मात्रा - मंजिष्ठा - 4 तोला , शेष दस द्रव्य - एक - एक तोला

जल - एक प्रस्थ

विधि -

सर्वप्रथम **एक प्रस्थ तिल तैल** को स्टील के पात्र में डालकर **मंदाग्नि** द्वारा भलाभाँति गर्म करने पर जब तैल में उत्पन्न फेन बंद हो जाय तब चूल्हे से पात्र को नीचे उतारकर थोड़ा ठण्डा करें।

⇩

फिर मंजिष्ठा , हरिद्रा , लोध्र , नागरमोथा , नलिका , आमलकी , विभीतकी , हरीतकी , केतकीपुष्प , वटाङ्कुर , सुगन्धबाला इन द्रव्यों में **मंजिष्ठा 4 तोला** और शेष दस **द्रव्य एक - एक तोला** की मात्रा में लेकर कल्क बनाकर उक्त तैल में डाला जाता है।

⇩

इसके पश्चात् तैल के बराबर जल डालकर अग्नि पर निर्जल होने तक पकाया जाता है।

Ayurvedic Formulation

लाभ - तैल अरुण वर्ण का , सुगन्धित और आमदोष रहित हो जाता है

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्नेहपाक विधि -

1. **स्नेहपाक का सामान्य नियम -**

- कल्क - ¼ भाग
- स्नेह - 1 भाग
- द्रव्य - 4 भाग

2. आचार्य वाग्भट्ट , एंव शौनक के अनुसार -

	कल्क	स्नेह	द्रव
जल से स्नेह सिद्धि में	1/4 भाग	1 भाग	4 भाग जल
क्वाथ से स्नेह सिद्धि	1/6 भाग	1 भाग	6 भाग जल
स्वरस से स्नेह सिद्धि	1/8 भाग	1 भाग	8 भाग जल

3. अधिक द्रवों में स्नेहपाक नियम -

- पांच या पाँच से अधिक द्रव - प्रत्येक द्रव स्नेह के समान मात्रा में डाले
- पाँच से कम चार , तीन , दो या एक द्रव - सभी द्रव स्नेह से चतुर्गुण

4. स्नेहपाकार्थ क्वाथ में जल का परिमाण -

1) मृदु द्रव्य में - **चतुर्गुण** जल ,
2) **मध्यम** द्रव्य में - **अष्टगुण** जल ,
3) **कठिन** द्रव्य में - **अष्टगुण** जल
4) अत्यन्त **कठिन** द्रव्य में - **षोडश** गुण जल

1) **1 से 4 तोला** द्रव्य - **16** गुना जल
2) **4 तोले से 16 तोला** द्रव्य - **8** गुना जल
3) **16 तोला से खारी** पर्यन्त - **4** गुना जल

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

5. केवल कल्क /क्वाथ से स्नेहपाक -

	कल्क	स्नेह	जल
केवल कल्क मे	1/4 भाग	1 भाग	4 भाग
केवल क्वाथ मे	1/4 भाग	1 भाग	4 भाग

6. पुष्पकल्क से स्नेहपाक -

	पुष्पकल्क	स्नेह	जल
केवल पुष्पकल्क मे	1/8 भाग	1 भाग	4 भाग

7. स्नेह साधक हेतु दिन मर्यादा -

- धान एवं मांसरस से स्नेहसिद्धि काल मर्यादा - **1 दिन**
- दूध एवं मांसरस से स्नेहसिद्धि काल मर्यादा - **2 रात्रि**
- स्वरस एवं मांसरस से स्नेहसिद्धि काल मर्यादा - **3 रात्रि**
- तक्र , दधि , कांजी एवं गोमूत्र काल मर्यादा - **5 रात्रि**
- मूल एवं लताओ से स्नेहसिद्धि काल मर्यादा - **12 दिन**

स्नेह सिद्धि लक्षण -

" **वर्तिवत् स्नेहकल्कः स्याद् यदाङ्गुल्या विमर्दितः । शब्दहीनो ऽग्निनिक्षिप्तः स्नेहः** सिद्धो भवेत् तदा ॥

यदा फेनोद्गमस्तैले फेनशान्तिश्च सर्पिषि । गन्धवर्णरसोत्पत्तिः स्नेहसिद्धिस्तदा भवेत् ॥ "

अर्थात् स्नेहसिद्धि के निम्नांकित लक्षण माने गये है -

1) स्नेह का कल्क हाथ की अंगुली द्वारा मसलने पर वर्ती बन जाना ।
2) कल्क मिश्रित स्नेह को अग्नि में डालने पर चट्चटू शब्द का नहीं होना ।
3) तैलपाक के समय पात्र में फेनोद्गम होना और घृतपाक के समय पात्र में फेन आकर शान्त हो जाना ।
4) उचित गन्ध , वर्ण एवं रस की उत्पत्ति हो जाना ।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पात्रपाक -

- सिद्ध स्नेह का प्रयोग जिस रोग में उपयोग करना है , उस रोग को नाश करने वाले यथा गुण पात्र में पाक करना पात्रपाक कहलाता है ।
- स्नेहपाक करने के लिए स्टीलपात्र , लौहपात्र , ताम्रपात्र एवं वंगलिप्त ताम्रपात्र का प्रयोग करना चाहिए ।
- जैसे शार्ङ्गधर संहिता में **कासीसादिघृत** का निर्माण **ताम्रपात्र** में करने का स्पष्ट निर्देश है , **केरल में** स्नेहपाक विशेष रूप से **ताम्रपात्र** में किया जाता है ।

स्नेहपाक के भेद - **" स्नेहपाकस्त्रिधा प्रोक्तो मृदुर्मध्य: खरस्तथा। "**

1) मृदु स्नेहपाक
2) मध्य स्नेहपाक
3) खर स्नेहपाक

1) मृदु स्नेहपाक - **" ईषत्सरसकल्कस्तु "**

- जब औषध का कल्क पककर **निर्यास की तरह हो जाय** और कल्क कुछ रसयुक्त हो , उसे **मृदु स्नेहपाक** कहते हैं।
- मृदु स्नेहपाक में स्नेह (घृत या तैल) में से जल समाप्त हो जाता है किन्तु कल्क में जल रहता है।
- अतः थोड़ा स्नेह (घृत या तैल) लेकर अग्नि पर डालने पर चट् चट् की आवाज नहीं आती है और जलने लगता है , जबकि कल्क में पानी रहने से अग्नि पर डालने पर चटू चटू की आवाज आती है। कल्क में जल होने से कल्क की वर्ति नहीं बनती है।

2) मध्य स्नेहपाक - **" कल्के नीरसकोमले "**

- जब औषध का कल्क पककर **संयाव (हलुआ) की तरह हो जाय** , दर्वी में नहीं लगता हो , रस (जल) से रहित और कोमल हो उसे **मध्य स्नेहपाक** कहते हैं।
- मध्य स्नेहपाक में कल्क में से भी जल समाप्त हो जाता है , इसलिए कल्क को अग्नि पर डालने पर बिना चट् चट् की आवाज किये जलता है तथा कल्क की वर्ति बन जाती है।

3) खर स्नेहपाक - **" ईषत्कठिनकल्कश्च "**

- जब औषध के कल्क की वर्ति बनाने पर टुकड़े - टुकड़े होकर गिरने लगे और कल्क द्रव्य कुछ कठिन (खर) हो जाय तो उसे खर स्नेहपाक कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्नेहपाक भेदों का उपयोग -

आचार्य चरक एवं शार्ङ्गधर न के अनुसार -

1) **मृदु** पाक स्नेह को - **नस्यकर्म** मे उपयोग ,
2) **मध्यम** पाक स्नेह को - **पीने एवं बस्ति** कार्य मे उपयोग ,
3) **खर** पाक स्नेह को - **अभ्यङ्ग** में उपयोग

Note - त्रिविध पाकों में से मध्य स्नेहपाक श्रेष्ठ माना गया है।

सिद्धस्नेह सेवन मात्रा - 1 पल (48ग्राम)

नारायण तैल

घटक द्रव्य :- **स्नेह द्रव्य :-** **तिल तैल - 3.072 लीटर**

द्रव द्रव्य :-

1) शतावरी स्वरस - 3.072 लीटर
2) गोदुग्धः - 12.288 लीटर

क्वाथ द्रव्य - **(TRICK)**

पाटला के अश्व व गो ने बिल्व के बड़े कांटो को बल दिया और अग्नि के पुनः प्रसारण से निम्ब और पाठा जल गए।

पाटला - पाटला	**बड़े** - बृहती	**पुनः** - पुनर्नवा
अश्व - अश्वगंधा	**कांटो** - कंटकारी	**प्रसारण** - प्रसारिणी
गो - गोक्षुर	**बल** - बला , अतिबला	**निम्ब** - निम्ब
बिल्व - बिल्व	**अग्नि** - अग्निमंथ	**पाठा** - श्योनाक

क्वाथ द्रव्य मात्रा -

1) जल - 49.152 लीटर
2) अवशिष्ट क्वाथ - 12.288 लीटर
3) शेष द्रव्य - 480 ग्राम

कल्क द्रव्य - **(TRICK)**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मूर्वा को जटाओं से बालो में श्वेत कुष्ठ हो गया उसे बचाने के लिए एला तुम देवो के अश्व को रास्ते में 4 पर्णी शौफ और सेंधव खिलाना।

मूर्वा - मूर्वा	**बचाने** - वचा	**रास्ना** - रास्ना
जटाओं - जटामांसी	**एला** - एला	**4 पर्णी** - (माषपर्णी, मुद्गपर्णी, शालपर्णी, पृश्नपर्णी)
बालों - बला	**तुम** - तगर	**शौफ** - शौफ
श्वेत - श्वेत चंदन	**देवो** - देवदारू	**सेंधव** - सैंधव लवण
कुष्ठ - कुष्ठ	**अश्व** - अश्वगंधा	

मात्रा - 96 ग्राम

निर्माण विधि -

सर्वप्रथम **क्वाथ द्रव्यों को यवकुट** कर स्टील के पात्र में 49.152 लीटर जल में डालकर **चतुर्थांश शेष** रहने **तक पाक** कर छानकर अलग पात्र में रखें

⇩

फिर स्टील के पात्र में **तिल तैल डालकर गर्म** करे , थोड़ा शीतल करके **कल्क द्रव्यों** को पीसकर बनाए हुए कल्क को थोड़ा - थोड़ा पात्र में डाल देवें

⇩

फिर **शतावरी स्वरस , गोदुग्ध एवं निर्मित क्वाथ** को क्रमशः स्नेह में डालकर स्नेहपाक करें

⇩

अन्त में **स्नेहपाक की परीक्षा** कर सिद्ध नारायण तैल को पात्र में छानकर सुरक्षित रखें

पानार्थ मात्रा - एक पल (48 मि . ली .)

नस्यार्थ मात्रा - 4-6 बूँद

अभ्यंग एवं बस्ति - यथावश्यक

मुख्य उपयोग -

Ayurvedic Formulation

पक्षाघातं हनुस्तम्भं मन्यास्तम्भं गलग्रहम् ।। खल्लत्वं बधिरत्वं च गतिभङ्गं कटिग्रहम्।

गात्रशोषेन्द्रियध्वंसावसृक्शुक्रज्वरक्षयान्। यथा नारायणो देवो दुष्टदैत्यविनाशनः ।।

तथैव वातरोगाणां नाशनं तैलमुत्तमम् ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पक्षाघात , हनुस्तम्भ , मन्यास्तम्भ , गलग्रह , खल्ली , बधिरता , गतिभङ्ग , कटिग्रह , गात्रशोष , इन्द्रियध्वंस , रक्तजरोग, शुक्ररोग , ज्वर , क्षय , सर्वाङ्गसंश्रित वातव्याधि आदि ।

त्रिफला घृत

घटक द्रव्य - **स्नेह द्रव्य -** **मूर्च्छित गोघृत - 768 मि. ली.**

द्रव्य द्रव - **(TRICK)**

राजा को बकरी का वसा फल दो

राजा - भृंगराज स्वरस - 768 मि. ली.	**वसा -** वासा स्वरस - 768 मि. ली.
बकरी - बकरी दुग्ध - 768 मि. ली.	**फल -** त्रिफला क्वाथ - 768 मि. ली.

कल्क द्रव्य

- **त्रिफला -** हरितकी , आमलकी , विभितकी
- **त्रिकटु -** शुण्ठी , पिप्पली , मरिच
- **सुगंध के लिए -** चंदन ,कमल
- **Taste के लिए -** लवण , शर्करा
- **पुन: बल के लिए -** (क्षीर +हल्दी) दिया

पुन: - पुनर्नवा	**क्षीर -** काकोली , क्षीरकाकोली
बल - बला	**हल्दी -** हरिद्रा , दारू हरिद्रा

Ayurvedic Formulation

द्राक्षा पुंडरीक से मधु की मेद बढ़ती है

द्राक्षा - द्राक्षा	**पुंडरीक -** पौणंरीक
मेद - मेदा	**मधु -** मधु

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निर्माण विधि -

सर्वप्रथम स्टील के पात्र में **गोघृत डालकर गर्म** किया जाता , **कल्क द्रव्यों का कल्क** बनाकर थोड़ा-थोड़ा गोघृत में डाला जाता है

⇩

इसके पश्चात् **त्रिफला क्वाथ, वासा स्वरस, भृङ्गराज स्वरस एवं बकरी के दूध** को क्रमशः डालकर **स्नेहपाक** किया जाता है

⇩

⇩

अन्तः में **स्नेहपाक की परीक्षा** करके सिद्ध त्रिफला घृत के पात्र को चूल्हे से नीचे उतार छानकर उचित पात्र में सुरक्षित रखना चाहिए

पानार्थ मात्रा - एक पल (48 ग्राम) , व्यवहार में प्रचलित (20 ग्राम)

नस्यार्थ मात्रा - 4 - 6 बूँद

अनुपान - मिश्रीयुक्त गोदुग्ध

मुख्य उपयोग – रात्र्यन्धता , नकुलान्ध्य , नेत्रकण्डू , नेत्रस्राव , नेत्रपटल , तिमिर अन्य सुदारुण नेत्ररोगनाशक

ब्राम्ही घृत

घटक द्रव्य :-

स्नेह द्रव्य - **गोघृत - 768 मि. ली.**

द्रव द्रव्य - ब्राह्मी स्वरस - 3.072 लीटर

कल्क द्रव्य -

1) ब्राह्मी
2) कुष्ठ
3) वचा
4) शंखपुष्पी

Ayurvedic Formulation

निर्माण विधि -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सर्वप्रथम स्टील के पात्र में **गोघृत डालकर गर्म** कर पात्र को चूल्हे से नीचे उतारकर थोड़ा शीतल किया जाता है

⇩

फिर **कल्क द्रव्यों का कल्क** बनाकर थोड़ा-थोड़ा घृत में डालकर **ब्राह्मी स्वरस** मिलाकर **स्नेहपाक** किया जाता है

⇩

अन्तः में **स्नेहपाक परीक्षा** करके सिद्ध ब्राह्मी घृत के पात्र को चूल्हे से नीचे उतारकर छानकर काच पात्र में सुरक्षित रखा जाता है

पानार्थ मात्रा - एक पल (48 ग्राम)

अनुपान - मिश्रीयुक्त गोदुग्ध

मुख्य उपयोग - स्मृतिवर्द्धक, उन्माद, अपस्मार, ग्रहबाधा नाशक

अणु तैल

घटक द्रव्य :-

स्नेह द्रव्य - तिल तैल - 2.7 लीटर

द्रव द्रव्य - अजा दुग्ध - 2.7 लीटर

क्वाथ द्रव्य - **(TRICK)**

- **मोथा -** केवती मोथा , नागरमोथा
- **पर्ण -** शालपर्णी , पृश्नपर्णी, तेजपत्र
- **दारू -** देवदारू , दारुहरिद्रा
- **कमल -** नील कमल , पद्मकेसर

रेणु मधु पौण्ड में नहा रही थी बड़े काटो वाला कुंदरु बिल से निकलकर सूक्ष्म डंक शत बार मारता है ,
चंदन गुरू सारि सुगंधी खस एवं दाल से जीवन में बल दिया

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रेणु - रेणुका	**शत -** शतावरी
मधु - मधु	**चंदन -** श्वेत चंदन
पौण्ड - प्रपौण्डरिक	**गुरू -** अगरु
बड़े - बृहती	**सारि -** सारिवा
कांटों - कंटकारी	**सुगंधी -** सुगंधबाला
कुंदरु - कुंदरु	**खस -** खस
बिल - बिल्ब	**दाल -** दालचीनी
सूक्ष्म - सूक्ष्म एला	**जीवन -** जीवंती
डंक - विडंग	**बल -** बला

निर्माण विधि -

सर्वप्रथम **क्वाथ द्रव्यों को यवकुट चूर्ण** करके किसी बड़े पात्र में 270 लीटर माहेन्द्र जल में पकाकर **दशमांश शेष** (27 लीटर) क्वाथ का निर्माणकिया जाता है फिर क्वाथ को छानकर अलग पात्र में रखा जाता है ,

⇩

फिर एक के पात्र में **तिल तैल** को डालकर उसमें प्रत्येक बार 2.700 लीटर क्वाथ डालकर बार तैल को **पकाया** जाता है

⇩

फिर **अन्त में (दसवीं बार)** 2.700 लीटर क्वाथ, 2.700 लीटर **अजादुग्ध को 9 बार सिद्ध तैल में** डालकर **पकाया** जाता है

⇩

इस प्रकार बनाया हुआ यह **अणु तैल नस्य में प्रयोग** किया जाता है

नस्य मात्रा - सप्ताह में तीन बार आधा पल (24 मि. ली.)

मुख्य उपयोग - मन्यास्तम्भ, शिरःशूल, अर्दित, हनुस्तम्भ, जीर्ण प्रतिश्याद, अर्धावभेदक, शिरःकम्प में उपयोगी है , त्रिदोषघ्न एवं सभी इन्द्रियों के लिए बल्य है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कृतान्न और औषधिसिद्ध अन्न कल्पना

संदर्भ

- चरक सूत्र स्थान - 27
- शा. स. मध्य. खंड. - 2 और 3

कृतान्न परिभाषा

जिस प्रकार औषध द्रव्यों की विभिन्न कल्पनाएँ (स्वरसादि) की गई है , उसी प्रकार भक्ष्य अन्न (शुकधान्य - तण्डुल आदि , शिम्बी धान्य - मुदा आदि) से विभिन्न पथ्य कल्पनायें (यवागू , यूष आदि) की गई है ।इन विभिन्न कल्पनाओं को कृतान्न वर्ग कल्पना कहा जाता है ।

पथ्यापथ्य परिभाषा

" पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम् । यच्चाप्रियमपथ्यं च नियतं तन्न लक्षयेत् ॥
मात्राकालक्रियाभूमिदेहदोषगुणान्तरम् । प्राप्य तत्तद्धि दृश्यन्ते ते ते भावास्तथा तथा ॥ "

- **पथ्य:-** जो आहारादि द्रव्य उचित मात्रा में सेवन करने पर शरीर एवं मन के लिए लाभदायक हो , उसे पथ्य कहते हैं ।
- **अपथ्य:-** आहारादि द्रव्य उचित मात्रा में सेवन करने पर शरीर एवं मन के लिए हानिकारक हो , उसे अपथ्य कहते हैं ।

Ayurvedic Formulation

इस प्रकार पथ्य और अपथ्य द्रव्यों में नियतरूप में नहीं होते हैं , अतः पथ्य द्रव्य भी मात्रा , काल , क्रिया , भूमि , देह एवं दोष की विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करके अपथ्य हो जाते हैं और इन्हीं कारणों से अपथ्य द्रव्य भी पथ्य हो जाते हैं ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" सिक्थैर्विरहितो मण्ड : पेया सिक्थसमन्वितः । यवागूर्बहुसिक्था स्यात् विलेपी विरलद्रवा ॥ "

- जिस पेय आहार में **सिक्थ (चावल के कण) नहीं** हो उसे **मण्ड**
- जिसमें **अल्प सिक्थ (चावल कण)** हो उसे **पेया**
- जिसमें **सिक्थ (चावल के कण) अधिक** हो उसे **यवागू**
- जिसमें चावल का **मण्ड (द्रव भाग) अत्यल्प** एवं सिक्थ भाग अधिक हो उसे **विलेपी** कहा है

आहार द्रव्य का वर्ग	हिततम (20)	अहिततम (20)
1. शूकधान्य	1. रक्त शालि	1. यवक
2. शमी धान्य	2. मुद्ग	2. माष
3. जल	3. आन्तरिक्ष जल	3. वर्षा ऋतु में नदी का जल
4. लवण	4. सैन्धव	4. औषर
5. पत्रशाक	5. जीवन्ती	5. सर्षप
6. मृगमास	6. ऐणेय	6. गोमांस
7. पक्षी	7. लाव	7. काण–कपोत
8. विलेशय	8. गोधा	8. मण्डूक (भेंक)
9. मृत्स्य	9. रोहित	9. चिलचिम
10. घृत	10 गोघृत	10 मेषीघृत
11. दुग्ध	11. गोदुग्ध	11. मेषी दुग्ध
12. स्थावर स्नेह	12. तिलतैल	12. कुसुम्भ तैल
13. आनूपमृगवसा	13. वराहवसा	13. माहिष वसा
14. मृत्स्य वसा	14. चुलुकी वसा	14. कुम्भीर वसा
15. जलचर–पक्षीवसा	15. पाकहंस वसा	15. काकमद्गु वसा
16. विष्किर–पक्षीवसा	16. कुक्कुट वसा	16. चटकवसा
17. शाखामेदस	17. अजमेदस	17. हस्तिमेदस्
18. कन्द	18. आर्द्रक **(सुश्रुत, भा. प्र. –सूरण)**	18. आलुक
19. फल	19. मृद्वीका **(सुश्रुत – आमलकी)**	19. लकुच
20. इक्षुविकार	20. शर्करा	20. फाणित

Ayurvedic Formulation

यवागू

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **चावल : जल - 1: 6**
- यवागू तण्डुल आदि शूकधान्यों से बनायी जाती है।
- यवागू के निर्माण में औषधसिद्ध जल का प्रयोग किया जाता है।

परिभाषा -

" यवागू: षड्गुणजले सिद्धा स्यात् कृशरा घना। तण्डुलैर्मुद्गमाषैश्च तिलैर्वा साधिता हिता ।। "

चावल , मूँग , उड़द को कूटकर × **6 गुना** जल मिलाकर —(पाक)→ **द्रव्यांश अल्प एवं** सिक्थ भाग अधिकता

यवागू के भेद - **आचार्य सुश्रुत** ने यवागू के **चार भेद** बताए है -

1) मण्ड
2) पेया
3) यवागू
4) विलेपी

यवागू गुण -

" यवागू: ग्राहिणी बल्या तर्पणी वातनाशिनी । "

यवागू ग्राही , बल्य , तृप्त करने वाली और वातनाशक होती है

यवागू दोष - यवागु के सात दोष बताए गए है -

1) गाढ़ी
2) पतली
3) ठण्डी
4) अल्प चावल
5) पिच्छिल
6) विशद
7) अहृद्य

मण्ड **चावल : जल - 1 : 14**

" सिक्थैर्विरहितो मण्ड "

अर्थात् चावल के कणों (सिक्थ) से रहित पेय को मण्ड कहते हैं ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" नीरेचतुर्दशगुणे सिद्धो मण्डस्त्वसिक्थक: । शुण्ठीसैन्धवसंयुक्त: पाचनो दीपन: पर: ॥ "

चावल आदि × **14 गुना** जल मिलाकर —(पाक)→ सिक्थ रहित भाग **मण्ड** कहलाता है

जब चावल सिद्ध हो जाते हैं तो उसे स्वच्छ वस्त्र से छानकर केवल मण्ड (द्रव) भाग ग्रहण करते हैं , इसको शुण्ठी एवं सैंधव लवण डालकर पीने से अग्नि का दीपन एवं पाचन करता है ।

मण्ड के गुण -

" मण्डस्तु दीपयत्यग्निं वातं चाप्यनुलोमयेत् । मृदुकरोति स्रोतांसि स्वेदं संजनयत्यपि ॥ "

- अग्निदीपक ,
- वातानुलोमक ,
- स्रोतो का मार्दवकर ,
- स्वेदनकारक

वाट्यमण्ड -

बिना भुना यव × **14 गुना** जल मिलाकर —पाक→ स्वच्छ वस्त्र से छान लेते है उसे **वाट्यमण्ड** कहते है

गुण - कफपित्तहर एवं रक्तपित्तप्रसादन

लाजामण्ड -

धान के लाजा (खील) × **14 गुना** जल मिलाकर —पाक→ स्वच्छ वस्त्र से छान लेते है उसे **लाजामण्ड** कहते है

गुण - कफपित्तहर एव ग्राही , ज्वरपिपासाहर

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पेया (चावल : जल - 1 : 14)

" पेया सिक्थसमन्वितः "

अर्थात् जिस पेय आहार में चावल के मण्ड (द्रव) में चावल के कुछ कण (सिक्थ) भी रहे , उसे पेया कहते हैं

" द्रवाधिका स्वल्पसिक्था चतुर्दशगुणे जले । "

चावल आदि × **14 गुना** जल मिलाकर —पाक→ अल्प सिवध अधिक द्रव को **पेया** कहते हैं

पेया के गुण -

" क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगज्वरापहा । स्वेदाग्निजननी पेया वातवर्चोऽनुलोमिनी ।। "

- भूख , प्यास , ग्लानि एवं श्रमहर ,
- वातानुलोमक ,
- स्वेद जनक, अग्निदीपक,
- मलानुलोमक , दौर्बल्य ,
- उदररोग एवं ज्वर को दूर करने वाली होती है

विलेपी

(चावल : जल - 1 : 4)

" विलेपी विरलद्रवा "

जिस पेय आहार में चावल का मण्ड (द्रव) अल्प एवं सिक्थ (चावल के कण) अधिक हो , उसे विलेपी कहते हैं

" विलेपी घनसिक्था स्यात् सिद्धा नीरे चतुर्गुणे । "

चावल के मोटे टुकड़ों × **4 गुना** जल मिलाकर ⟶ पाक ⟶ द्रवभाग अल्प एवं सिक्थभाग अधिक को **विलेपी** कहते हैं

विलेपी गुण -

" तर्पणी बृंहणी हृद्या मधुरा पित्तनाशिनी ।। "

विलेपी तृप्तिकारक , बृंहण , हृद्य , पित्तनाशक , क्षुधा और प्यास को दूर करने वाली होती है ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अन्न कल्पना

❖ भाव प्रकाश के अनुसार **भात ही अन्न है**

❖ भात के पर्याय मक्त , अन्न , अन्य , कूर ओदन , भिस्सा , दीदिवि

" अन्नं पन्चगुणे साध्यं "

चावल × **5 गुना** जल मिलाकर —पाक→ स्वच्छ वस्त्र से छान लेते है उसे **अन्न कल्पना** कहते है

भक्त कल्पना

चार पल (192 ग्राम) स्वच्छ चावलों में चौदह गुना (2.688 लीटर) जल मिश्रित कर पात्र को चूल्हे पर चढ़ाकर नावल सिद्ध कर उसका मण्ड निकाल दिया जाए , उसे भक्त कल्पना कहते हैं।

भक्त के पर्याय - ओदन

भक्त के गुण - मधुर और लघु होता है

ओदन

ओदन के गुण -

ओदन विशद , सम्यक् सिद्ध , सुस्विन्न , मण्ड रहित और मृद होता है। इसमें चावल सम्पूर्ण रूप में (साबुत) होते हैं , चावल टूटे हुए नहीं होने चाहिए।

ओदन के दोष -

अच्छी तरह स्विन्न नहीं हो , अक्लेदी , असाकल्य (चावलों का पूरे रूप में न होना) , मण्ड युक्त , विरस , अविशद और शीत ये ओदन के दोष हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

यूष कल्पना

जल , क्वाथ , स्वरस आदि द्रव पदार्थ , विविध औषध द्रव्य और मसूर आदि शिम्बी धान्य को पकाकर जो द्रव कल्प बनाया जाता है , उसे **यूष** कहते है

❖ यह **बिना तण्डुल (चावल)** के ही बनायी जाती है

❖ तण्डुल आदि शूकधान्य से यवागू कल्पना बनायी जाती है

" कल्कद्रव्यपलं शुण्ठी पिप्पली चार्धकार्षिकी । बारिप्रस्थेन विपचेत् स द्रवो यूष उच्यते ।। "

छिलका सहित मूँग , मसूर आदि की दाल **एक पल (48 ग्राम)**

+

शुण्ठी और पिप्पली **आधा कर्ष (6 ग्राम)** को यक्कुट कर

+

एक प्रस्थ जल (768) मिली) में मिश्रित कर पात्र में डालकर

⇩

अर्घावशेष या चतुर्थांशावशेष रहने या सम्यरूपेण सिद्ध होने पर स्वच्छ वस्त्र से छान लें, इसे **यूष** कहते हैं।

यूष के भेद - आचार्य सुश्रुत ने यूष के **दो भेद** बताए हैं -

1) अकृत यूष
2) कृत यूष

1. अकृतयूष - जिस यूष में सैंधव लवण , कटुद्रव्य मरिचादि एवं स्नेह नहीं डाला गया हो अर्थात् छौंक नहीं लगाया गया हो , उसे अकृतयूष कहते हैं।

2. कृत यूष - जिस यूष में संघव लवण , मरिच , दालचीनी आदि कटु सुगन्धित द्रव्य एवं स्नेह , घी आदि डाला गया हो अर्थात् छौंक लगाया गया हो , उसे कृतयूष कहते हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

यूष के गुण -

" रोचनो दीपनो वृष्यः स्वरवर्णबलाग्निकृत् । प्रस्वेदजननो मुख्यस्तुष्टिपुष्टिसुखावहः ॥ "

यूष रुचिकारक अग्निदीपक , वृष्य , स्वर , वर्ण , बल और अग्निवर्द्धक , स्वेदजनन , मुख के लिए। हितकारी , तृप्ति कारक , पुष्टिदायक , सुखदायक होते हैं।

- यूष स्निग्ध एवं उष्णता में **वात** का ,
- स्निग्ध एवं कषाय रस से **पित्त** का
- कटु , उष्ण एवं संस्कार से **कफ** का शमन करते

कृशरा

- कृशरा को लोकभाषा में **खिचड़ी** कहते हैं
- खिचड़ी प्राय : चावल और मूंग की दाल से बनाई जाती है
- यह पथ्य के रूप में विशेष रूप से अतिसार रोग में खिलाई जाती है

चावल , मूंग की दाल , लवण , आर्द्रक , हिङ्गु को किसी स्टील के पात्र में **चार गुना पानी** के साथ पकाकर बनायी गई कल्पना को **कृशरा** कहते हैं।

कृशरा के गुण -

कृशरा बीर्यवर्द्धक , बलप्रद , गुरु , पित्तकफवर्द्धक , पचने में कठिन , बुद्धि वर्धक , विष्टम्भी और मलमूत्रोत्पादक होती है

Ayurvedic Formulation

मांस रस

वेसवार (मांस का मसाला)
उचित जल व लवण
बकरे का अस्थि रहित मांस
हल्दी व हिंगु
घृत एवं तैल

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

- किसी भी स्टेनलेस स्टील के पात्र में घी या तैल को गर्म करे
- फिर उसमें हिङ्गु एवं हरिद्रा का चूर्ण एवं बकरे के निरस्थि मांस को डालकर भूना जाता है।
- इसके बाद यथावश्यक मात्रा में जल एवं लवण को डालकर पाक किया जाता है।
- फिर सिद्ध जल से ही वेसवार को पीसकर (मांस के मसालों) एवं मिलाकर पुनः पाक किया जाता है, इसे **मांसरस** कहते हैं।

मांस भेद	मांस मात्रा	जल मात्रा
घन मांसरस	**8 पल** (384 ग्राम)	16 पल (768 मिली)
मध्यम मांसरस	**6 पल** (288 ग्राम)	16 पल (768 मिली)
पतला मांसरस	**4 पल** (192 ग्राम)	16 पल (768 मिली)

मांसरस के गुण -

" प्रीणन प्राणजनन: श्वासकासक्षयापह: । वातपित्तश्रमहरो हृद्यो मांसरस स्मृत: ।। "

अर्थात् मांसरस का सेवन करने पर तृप्ति , प्राणदायी , हृद्य , श्रमहर , क्षय , श्वास , कास , वातपित्तनाशक है ।

वेसवार

किसी भी स्टेनलेस स्टील के साफ **पात्र** में अस्थिरहित **बकरे के मांस** के टुकड़ो को **चतुर्गुण जल** के साथ मध्यमाग्नि पर पकाया जाता है । मांस पक जाने पर पात्र को नीचे उतारकर मांस के **टुकड़ो** को पीसकर **बारीक** किया जाता है । फिर उसी पात्र में घी डालकर गर्म करके **सैंधव लवण , पिप्पली चूर्ण , शुण्ठीचूर्ण , मरिच चूर्ण एवं गुड** डालकर पकाया जाता है । जब मांस भली भाँति सिद्ध हो जाय , तो उसे **वेसवार** कहते हैं । यह गुरु , स्निग्ध , बल्य और वातरोगनाशक होता है ।

वेसवार के गुण - गुरु , स्निग्ध , बल्य और वातरोगनाशक होता है ।

खड काम्बलिक

सर्वप्रथम सुश्रुत संहिता में खड - काम्बलिक के गुणों का वर्णन किया है , लेकिन परिभाषा नहीं दी है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

खड के भेद - खड के 2 भेद बताए है -

1. **सतक्र शमीधान्य-** (तक्र + शमीधान्य से निर्मित)

किसी भी स्टील के पात्र में तक्र , शमीधान्य , छिलका रहित मूँग , मसूर , उड़द की दाल यथावश्यक मात्रा में डालकर पकायें । जब सम्यक् पाक हो जाय तब घृत को अलग पात्र में गर्म करके सैन्धव लवण , जीरक , शुण्ठी , मरिच आदि का छौंक लगाकर सिद्ध करने को सतक्रशमी धान्य खड कहते हैं ।

2. **सतक्र शाक -** (तक्र + शाक से निर्मित)

किसी भी स्टील पात्र में तक्र , कपित्थ , चाङ्गेरी , मरिच , श्वेतजीरक और चित्रकमूल को यथावश्यक मात्रा में लेकर पकाकर छौंक लगाकर सिद्ध करने को सतक्रशाक खड कहते हैं।

काम्बलिक -

दहीमस्तु + मूँग से निर्मित यूष + सौवर्चल लवण , जीरा , बिजौरानीबू से संस्कारित रस

खड काम्बलिक के गुण -

खड एवं काम्बलिक दोनों ही हृद्य एवं वात , कफ दोष के लिए हितकारी माने गये हैं तथा दोनों ही बल्य एवं वातकफ के रोगों को नष्ट करते हैं।

रागषाडव

- आचार्य सुश्रुत ने राग षाडव को एक ही कल्पना के नाम से वर्णित किया है।
- किन्तु टीकाकार डल्हण ने राग एवं षाडव को अलग - अलग कल्पना माना है।
- **चरक संहिता** के व्याख्याकार चक्रपाणि ने षाडव के लिए **" षाडवस्तु - मधुराम्ल द्रव्यकृतः "** कहा है।
- **आचार्य सुश्रुत** अनुसार कृत एवं अकृत मुद्रयूष में अनार और द्राक्षा मिलाकर पीसने से बनने वाली कल्पना को रागषाडव कहते है।

राग -

मिश्री , सैन्धव लवण , सौवर्चल लवण , वृक्षाम्ल रस , फालसा स्वरस , जामुन के फल का स्वरस और राजिका को पीसकर किसी पात्र में डालकर अच्छी तरह मिश्रित की गई कल्पना को राग कहते हैं।

षाडव -

- अनेक प्रकार के षाडव का वर्णन - सोढल ने किया है।
- मधुर ,अम्ल , लवण रसों के संयोग द्वारा अनेक प्रकार की षाडव कल्पनाएँ बनायी जाती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रागषाडव के गुण -

लघु , कटु , अम्ल , मधुर , लवण रसयुक्त , मुखप्रिय , हृदय के लिए अनुकूल , अग्निदीपक , पाचक , रुचिकर

दधि एवं तक्र वर्ग

दुग्ध को उबालकर शीतल करके थोड़ा सा तक्र या दधि (जामन) डालने पर दुग्ध जम जाता है , उसे दधि कहते हैं। यह गाढ़ा और श्वेत वर्ण का होता है।

दधि के गुण -

" रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम्। पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं मङ्गल्यं बृंहणं दधि॥ "

उत्तम रूप से जमा हुआ दही रुचिकारक , अग्निदीपक , पाचक , वृष्य , स्नेहजनन , बल्य , अम्ल विपाकी , उष्ण , वातनाशक , माङ्गल्य , मांसवर्धक और प्रतिश्याय , अतिसार , शीतज्वर , विषमज्वर , अरुचि , मूत्रकृच्छ्र और कार्य को दूर करने वाला माना गया है।

निषेध ऋतु - शरद् , ग्रीष्म एवं बसन्त ऋतु

- रक्त , पित्त एवं कफजन्य रोगों में हानिकारक होता है
- उत्तम रूप से जमा हुआ दही वातनाशक होता है
- किन्तु उत्तम रूप से नहीं जमा हुआ दही त्रिदोषों को कुपित करने वाला होता है
- दही की मलाई शुक्रल होती है
- दही का जल वातकफनाशक और स्रोतोशोधक होता है
- दही के द्वारा स्नेह के तरतम भेद से तथा जल के मिलाने की मात्रा के भेद से घोल , मथित , तक्र , उदश्वित , छच्छिका एवं कटवर कल्पनायें बनायी जाती है।

तक्र — दही + ½ जल ⟶ मक्खन निकाल ले ⟶ तक्र

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चरक संहिता में तक्र **तीन प्रकार** का बताया है -

1) **रूक्ष -** पूरा स्नेह निकाली हुई तक्र (स्नेहरहित)
2) **अर्धोद्धृत स्नेह -** जिस तक्र में से आधास्नेह (मक्खन) निकाल लिया
3) **अनुद्धृत स्नेह -** जिस तक्र में से मक्खन नहीं निकाला गया हो अर्थात् पूर्णस्नेहयुक्त

आचार्य भावमिश्र ने **पाँच प्रकार** का बताया है -

1. **घोल** - मलाई (सर) के साथ और बिना जल मिलाये दही को मथ लेने को घोल कहा है : पर घोल कहलाता है
   - **गुण** - रक्तपित्त , तृषा , दाह नाशक है
2. **मथित** - जब दही से मलाई (सर) अलग करके बिना जल मिलाये मथ लिया जाये तो उसे मथित कहते हैं
   - **गुण** - कफ पित्तनाशक
3. **कट्वर** - किसी पात्र में दही एवं चतुर्थांश जल को मिलाकर मक्खन सहित मथने पर कट्वर कहलाता है
   - भावप्रकाश के अनुसार :- कट्वर तक्र का पर्याय है
4. **उदश्वित्** - किसी पात्र में दही से आधा भाग जल मिलाकर मथानी से मथा जाता है मक्खन (स्नेह) सहित रहने पर उदश्वित् कहा जाता है
   - **गुण** - यह कफकारक , बल्य और आमनाश में श्रेष्ठ होता है
5. **छच्छिका** - दही में प्रचुर मात्रा में स्वच्छ जल डालकर सारहीन (मक्खन रहित) द्रव बनाने को छच्छिका कहते हैं।
   - **गुण** - यह शीत , लघु , पित्त , श्रम , तृषानाशक , वातहर कफवर्धक और सैंधव लवण के साथ पीने पर दीपन , पाचन का कार्य करती है।

- दही में चौथाई जल मिलाकर मथने पर तक्र ,
- आधा जल मिलाकर मथने पर उदश्वित ,
- मक्खन सहित बिना जल के मथने पर घोल ,
- मक्खन हटाकर बिना जल के मथने पर मथित ,
- प्रचुर मात्रा में जल के साथ मथने पर उच्छिता कहा जाता है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

तक्र के गुण -

- **रस** - मधुराम्ल रस प्रधान
- **वीर्य** - उष्ण
- **गुण** - लघु , रूक्ष ,
- **विपाकी** - मधुर

“ शोफाशों ग्रहणीदोष मूत्र ग्रहोदरारुची । स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद् गरेषु च ॥ ”

शोफ , अर्श , ग्रहणी , मूत्रकृच्छ्र , उदारोग , अरुचि , पाण्डु , स्नेहव्यापद , गरविषनाशक होता है **चरक संहिता** के अनुसार **वातकफज रोगों में तक्र सर्वश्रेष्ठ** औषध है।

- **तक्र सेवन के योग्य -** शीतकाल ,अग्निमांध ,कंफजव्याधियों
- **तक्र सेवन के अयोग्य -** उरक्षत , गर्मी में मूर्च्छा , दाह व रक्तपित

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

नेत्रोपचारार्थ कल्पना

- **आचार्य सुश्रुत** ने नेत्ररोगों में उपचार के लिए तर्पण , पुटपाक , मेक , आश्च्योतन एवं अञ्जन **पाँच प्रकार** के उपक्रमों का वर्णन किया है।
- जबकि **आचार्य शार्ङ्गधर** ने सेक , आश्च्योतन , पिण्डी , विडालक , तर्पण , पुटपाक और अब्जन **सात प्रकार** के उपक्रमों का वर्णन किया है।

1) सेक -

- अभिष्यन्द आदि समस्त प्रकार के नेत्ररोगों में जिस विधि द्वारा सूक्ष्मधारा से सिंचन किया जाता है , उसे सेक कहते हैं।
- इसके लिए रोगी को उचित स्थान पर उत्तान लिटाकर बन्द की हुई आँख पर रोगानुसार उपयुक्त द्रव को सूक्ष्मधारा के रूप में चार अङ्गुल ऊपर से गिराया जाता है।
- इस क्रिया के लिए चौचनुमा पात्र प्रदान में लिया जाता है।

सेक के भेद -

1) वातज नेत्र रोगों में - **स्नेहन**
2) पित्तज एवं रक्तज नेत्ररोगों में - **रोपण**
3) कफज नेत्ररोगों में - **लेखन**

सेक की मात्रा -

- **वातज रोगों में** स्नेह द्रव का सेक - 600 की गिनती (6 मिनट) ,
- **पित्तज एवं रक्तज रोगों में** रोपण द्रव का सेक - 400 की गिनती (4 मिनट)
- **कफज रोगों में लेखन** द्रव का सेक - 300 की गिनती (3 मिनट) तक किया जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

सेक का प्रयोग -

आचार्य सुश्रुत ने -

- कफज नेत्ररोगों में - **प्रातःकाल**
- वातज नेत्ररोगों में - **सायंकाल।**
- पित्तज एवं रक्तज नेत्ररोगों में - **मध्यान काल**

- ✓ वेदना होने पर तुरन्त किसी भी समय में सेक करने का निर्देश दिया है।
- ✓ जबकि आचार्य शार्ङ्गधर ने दिन में ही सेक का निर्देश देते हुए आत्ययिक अवस्था में रात्रि में भी सेक करने का निर्देश किया।

2) आश्च्योतन -

- ➢ नेत्रों में द्रव औषध को बूँद के रूप में डालने को आश्च्योतन कहते हैं।
- ➢ रोग के अतिप्रबल नहीं होने पर दोषों के अनुसार किया आश्च्योतन रोग को नष्ट करता है।
- ➢ रोग के अतिप्रबल होने पर सेक कर्म द्वारा रोग को दूर किया जाता है।

आश्च्योतन भेद -

आचार्य सुश्रुत एवं शार्ङ्गधर ने आश्च्योतन को भी पुटपाक के समान स्नेहन , लेखन एवं रोपण भेद से तीन प्रकार का माना है।

1) **लेखन** - 7-8 बूँद
2) **स्नेहन** - 10 बूँद
3) **रोपण** - 12 बूँद

- ❖ आश्च्योतन शीत काल में उष्ण (गुनगुना) और उष्णकाल में शीतल द्रव से करना चाहिए।

आश्च्योतन विधि -

- ➢ निर्वात स्थान में रोगी को टेबल पर लिटाकर **बाँये हाथ की दो अंगुलियों** से नेत्र को खोलकर ड्रोपर या रूई के फोहे से औषध द्रव को दाहिने हाथ से दो अंगुल ऊपर से कनीनक से (नाक की ओर से) **आठ , दस या बारह बूँद** को डाला जाना चाहिए।
- ➢ इस प्रकार आश्च्योतन करने के पश्चात स्वच्छ कोमल कपड़े से आँख को साफ किया जाना चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आश्च्योतन काल -

- ➢ त्रिविध आश्च्योतन को 100 मात्रा (एक मिनट) तक धारण करता चाहिए।

एक मात्रा -

- ➢ आँखों के निमेषोन्मेष (बन्द कर खोलना) अथवा घुटनों के चारों ओर एक बार हाथ को घुमाकर चुटकी बजाने या गुरु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है , उसे एक मात्रा कहते हैं।

आश्च्योतन का प्रयोग -

" सर्वेषामक्षिरोगाणां "

- सभी प्रकार के नेत्र रोगो में वेदना , तोद , कण्डू , हर्ष , अश्रु , दाह आदि को दूर करने के लिए आश्च्योतन का प्रयोग करना चाहिए।
- आश्च्योतन का रात्रि के समय में प्रयोग निषेध माना गया है।
- अतः दिन के समय एवं नेत्र में वेदना होने पर आश्च्योतन का प्रयोग करना चाहिए।

3) पिण्डी -

पर्याय - पोटली , कवलिका

परिभाषा - औषधि के सूक्ष्म चूर्ण से कल्क का निर्माण करके स्वच्छ कपड़े में पोटली बनाकर नेत्राभिष्यन्द और नेत्रव्रणों में आँखों पर बाँधने को पिण्डी या कवलिका कहते हैं।

- सभी प्रकार के अभिष्यन्द में पिण्डी का प्रयोग किया जाता है
- **वातज अभिष्यन्द में** स्निग्ध एवं उष्ण द्रव्यों एरण्डपत्र , मूल एवं त्वक् से निर्मित।
- **पित्तज अभिष्यन्द में** आँवलों की पिण्डी।
- **कफज अभिष्यन्द्र में** शिग्रुपत्रों की पिण्डी का प्रयोग करने पर लाभकारी होती है।

Ayurvedic Formulation

4) विडालक -

- नेत्र पक्ष्मों को छोड़कर नेत्र के दोनों पलकों के ऊपर औषधियों को पीसकर पिष्टी (कल्क) का बाह्य लेप किया जाता है। इसे विडालक कहते हैं।
- इसकी मात्रा मुखलेप सदृश होती है।
- इस लेप को लगाने से नेत्र बिल्ली के नेत्रों की तरह दिखाई देने के कारण विडालक का नाम दिया गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

5) तर्पण -

- सर्वप्रथम रोगी व्यक्ति के शरीर को वमन , विरेचन द्वारा शुद्ध शिरोविरेचन से शिर का शोधन करें।
- इसके पश्चात् भोजन के पच जाने के बाद हु में दिन में पूर्वाह्न या अपराह्न काल में नेत्रों का तर्पण करना चाहिए।
- वायु , आतप एवं धूलरहित स्थान पर रोगी को उत्तान शयन करवाकर दोनों आँखों के चारों तरफ उड़द के आटे की पिष्टी से मण्डालाकार , एक समान , दो ऊँची छिद्र रहित , दीवार (आलवाल) बनायी जाती है।
- इस आलवाल में घृत मंडअथवा शतधौत घृत या दुग्ध से निष्कासित मक्खन को सुखोष्ण जल में मिश्रित करके नेत्रपक्ष्म के अग्रभाग तक भर दिया जाता है।

- इसमें घृतमण्डादि भरते समय पलके डूबने तक आँखो को बन्द रखें नेत्रमण्डलों में घृतमण्ड आदि भरले के बाद धीरे - धीरे नेत्रों को खोलना चाहिए।

तर्पण काल -

- **वर्त्मगत रोगों में** - 100 मात्रा (1 मिनट)
- **कफज एवं संधिगत रोगों में** - 500 मात्रा (5 मिनट) ,
- **शुक्लगत रोगों में -** 600 मात्रा (6 मिनट)
- **कृष्णगत रोगों में** - 700 मात्रा (7 मिनट)
- **दृष्टिगत रोगों में -** 800 मात्रा (8 मिनट)
- **अधिमन्थ एवं वातज रोगों में -** 1000 मात्रा (10 मिनट) तक तर्पण को धारण किया जानाचाहिए।

पश्चात कर्म -

- तर्पण का समय पूर्ण हो जाने पर अपाङ्ग की तरफ छिद्र करके घृतमण्डादि निकालकर नेत्र को साफ करके उष्णोदक से प्रक्षालन किया जाता है।
- स्नेह के वीर्य से उत्क्लिष्ट हुए कफ को स्विन्न कफघ्न धूमपान से शोधन करना चाहिए।

सम्यक् तर्पण लक्षण -

- सम्यक् तर्पण होने पर सुखपूर्वक निद्रा , समय पर निद्रात्याग , नेत्र लघुता , वर्ण निर्मलता , विशदता , व्याधि नाश और नेत्र निमीलन एवं उन्मीलन में कष्ट नहीं होता है।

तर्पण निषेध -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- आकाश में बादल होने , अत्यन्त उष्ण , अत्यन्त शीत , चिंता , परिश्रम , भ्रम से क्लान्त रोगी , नेत्र शोथ , राग , वेदना आदि उपद्रवों के रहने पर तर्पण कर्म नहीं करना चाहिए।

❖ **तर्पण नेत्रों को तृप्त करने में परमोत्तम उपाय है।**

पुटपाक -

- तर्पण कर्म के समान ही इसमें भी नेत्रों के चारों तरफ उड़द की पिष्टी का आलबाल बनाकर पुटपाक विधि से प्राप्त मांसरस या औषधि स्वरस को पथम के अग्रभाग तक भर दिया जाता है।
- फिर निर्धारित समय के बाद अपान की तरफ आलबाल में छिद्र करके द्रव्य को बाहर निकालकर उष्ण जल में भीगे कपड़े को निचोड़कर नेत्र का स्वेदन एवं धूमपान कराया जाता है। इसे ही पुटपाक कहते हैं।

पुटपाक भेद - तीन

1) **स्नेहन**
2) **लेखन**
3) **रोपण**

पुटपाक समय -

- **स्नेहन पुटपाक - 200 मात्रा** (2 मिनट) तक दो दिन ,
- **लेखन पुटपाक - 100 मात्रा** (एक मिनट) तक एकदिन
- **रोपण पुटपाक - 300 मात्रा (तीन** मिनट) तक तीन दिन धारण किया जाना चाहिए।

पुटपाक का प्रयोग -

1) अतिरूक्ष नेत्र में स्नेहन ,
2) अतिस्निग्ध में लेखन और दृष्टि बलवर्धन
3) पित्तज एवं रक्तजव्रणों में रोपण पुटपाक का प्रयोग हितकारी होता हैं।

अञ्जन - अंगुली या शलाका द्वारा आँखों में औषध लगाने को अंजन कहते हैं।

अंजन भेद -

1) **कल्पना भेद से - तीन प्रकार**

आचार्य सुश्रुत ने -

1) गुटिका
2) रसक्रिया
3) चूर्ण

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- रोग प्रबल होने पर **गुटिका ,**
- रोग मध्यबल होने **पर रस क्रिया**
- रोग अल्प बल होने **पर चूर्ण अञ्जन** का प्रयोग किया जाता है।

2) **कर्म भेद से - तीन प्रकार**

1) लेखन
2) रोपण
3) स्नेहन

- क्षार , तीक्ष्ण एवं अम्ल द्रव्यों का अञ्जन **लेखन**
- कषाय , तिक्त रस युक्त द्रव्यों का स्नेहयुक्त अञ्जन **रोपण**
- मधुर द्रव्यों का स्नेहयुक्त अञ्जन प्रसादन या **स्नेहन क**हलाता है।

रसक्रियांजन -

- रसौत , राल , चमेली पुष्प , मनः शिला , समुद्रफेन , सैंधव लवण , गैरिक एवं मरिच - इन सभी द्रव्यों को समान मात्रा में लेकर इनका सूक्ष्मचूर्ण बनाकर मधु के साथ अञ्जन करना चाहिए।
- क्लेद , कण्डू का नाश हो जाता है।

रसक्रियाञ्जन मात्रा -

- **श्रेष्ठ मात्रा** - तीन विडङ्ग के समान
- **मध्यम मात्रा** - दो विडङ्ग के समान
- **हीन मात्रा** - एक विडङ्ग के समान होती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

बस्ति कल्पना

चरक मतानुसार पञ्चकर्म में वमन, विरेचन, अनुवासन बस्ति, निरुह बस्ति और नस्य कर्म आते हैं।

बस्ति निरुक्ति -

" नाभिप्रदेशं कटिपार्श्वकुक्षिं गत्वा शकृद्दोषचयं विलोड्य।

सस्नेह्य कायं सपुरीषदोषः सम्यक् सुखेनैति च यः स बस्तिः ।। "

अर्थात् जो औषधि द्रव नाभिप्रदेश, कटि, पार्श्व और उदर में पहुँचकर मल एवं दोष संचय को मथकर शरीर का स्नेहन करके मल एवं दोषों के साथ सुखपूर्वक भली भाँति बाहर आ जाती है, उसे बस्ति कहते हैं।

बस्ति की परिभाषा -

गुदामार्ग, मूत्रमार्ग एवं योनिमार्ग द्वारा बस्तियन्त्र से विविध रोगनाशक औषधियों के स्वरस, क्वाथ, क्षीर, औषधि सिद्ध स्नेह, क्षारादि को यथावश्यक मात्रा में लेकर पक्वाशय, मूत्राशय एवं गर्भाशय में पहुँचाने की प्रक्रिया को बस्ति कहते हैं।

बस्ति वर्गीकरण -

अनुवासनं निरुहश्चोत्तरबस्तिश्च स त्रिविधः। (च. सि. 10/8)

अर्थात् सभी आचार्यों ने आस्थापन, अनुवासन और उत्तर बस्ति भेद से बस्ति को तीन प्रकार का माना है।

बस्ति लक्षण -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अर्थात् स्नेह द्वारा दी जाने वाली बस्ति को अनुवासन और कषाय (क्वाथ आदि), क्षार एवं तैल के मिश्रण से दी जाने वाली बस्ति को निरुह कहते हैं।

1) आस्थापन (निरुह) बस्ति -

अर्थात् दोषों को बाहर निकालकर शरीर का रोहण (वृद्धि) करने के कारण निरुह कहते हैं। शरीर और वय को स्थिर करने तथा दोष और धातुओं को अपने स्थान पर स्थिर करने के कारण इसका नामकरण आस्थापन बस्ति किया गया है।

आस्थापन बस्ति के भेद -

आचार्य वाग्भट ने उत्क्लेशन, संशोधन, संशमन, लेखन, बृंहण, वाजीकरण, पिच्छाबस्ति और माधुतैलिक आदि कई भेद किए है।

बस्ति नेत्र -

घटक द्रव्य -

- स्वर्ण, रजत, वंग, ताम्र, पीतल, कांस्य, अस्थि, लौह, लकड़ी, बांस, दाँत, नल, सींग और मणि आदि के द्वारा तीन कर्णिका युक्त बस्ति नेत्र का निर्माण किया जाना चाहिए।
- इनके अभाव में रबर एवं प्लास्टिक से बनी हुई उत्तम क्वालिटी की नली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्रमाण -

- **6 वर्ष तक की** आयु - 6 अंगुल लम्बा - मूंग के आकार के छिद्र युक्त
- **6 वर्ष से 12** वर्ष की आयु - 8 अंगुल लम्बा - मटर के आकार के छिद्रयुक्त
- **20 वर्ष तक की** आयु - 12 अंगुल लम्बा - बेर के आकार के छिद्रयुक्त
- बस्ति नेत्र सीधा, स्निग्ध और **गोपुच्छ के समान** उतार चढ़ाव वाला होना चाहिए

निरुह बस्ति की मात्रा -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

- **1 वर्ष** - एक पल, { इसके बाद प्रतिवर्ष एक-एक पल बढ़ाते हुए }
- **12 वर्ष तक** - 12 पल (6 प्रसृत), { इसके पश्चात् एक-एक प्रसृत प्रतिवर्ष बढ़ाते हुए }
- **18 वर्ष तक** - 12 प्रसृत (24 पल) की मात्रा देनी चाहिए।
- **18 वर्ष से 70 वर्ष तक** - 12 प्रसृत (24 पल) की मात्रा देनी चाहिए।
- **70 वर्ष के बाद** - **16 वर्ष के समान** 10 प्रसृत (20 पल) दी जाती है।

श्रेष्ठ मात्रा - 12 प्रसृत (24 पल या 96 तोला) मानी गयी है।

- बालक एवं वृद्ध व्यक्तियों में विशेष रूप से मृदु निरुह बत्ति की कल्पना करनी चाहिए।

निरुह बस्ति गुण -

1) **बस्तिर्वय:स्थापिता -** निरुह बस्ति आयु स्थिर करने वाली,
2) **सुखायुर्बलाग्निमेधास्वरवर्णकृच्च -** सुखकारक, बल्य, अग्निदीपक, मेध्य, स्वर प्रसादक, वर्ण्य आदि
3) **शिशुवृद्धयूनां निरत्यय: -** बालक, युवा और वृद्ध सभी व्यक्तियों के लिए लाभदायक होती है
4) **सर्वगदापहश्च -** यह बिना उपद्रव के संपूर्ण रोगों को नष्ट करती है।
5) **शुक्रबलप्रदश्च -** शुक्र एवं बल को बढ़ाती है

निरुह बस्ति सम्यक् योग लक्षण -

" प्रसृष्टविण्मूत्रसमीरणत्वं रूच्यग्निवृद्धयाशयलाघवानि।

रोगोपशान्ति: प्रकृतिस्थता च बलं च तत् स्यात् सुनिरूढलिङ्गम्।। "

अर्थात् मल, मूत्र एवं वायु का भलीभाँति विसर्जन होना, भोजन में रुचि होना, अग्नि की वृद्धि होना, आशयों में लघुता, रोग शमन, स्वास्थ्य ठीक रहना और शरीर में बल का अनुभव होना निरुह बस्ति के सम्यक् योग का लक्षण है।

Ayurvedic Formulation

निरुह बस्ति पश्चात् कर्म -

- निरुह बस्ति की औषध निकलने के पश्चात् सुखोष्ण जल से स्नान करके यूष, मांसरस, दूध आदि के साथ शालि चावलों के भात का भोजन देना हितकारी होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निरुह बस्ति धारण काल -

- निरुह बस्ति या अनुवासन बस्ति में बस्ति द्रव को **एक मुहुर्त (48 मिनट)** तक पक्वाशय में रखना चाहिए।

निरुह बस्ति मे पथ्यापथ्य -

1) उष्ण जल से स्नान करना चाहिए
2) दिवास्वप्न, अर्जीण का परित्याग

2) अनुवासन बस्ति -

जिस बस्ति द्रव के शरीर में रहने पर भी निरूपद्रवकारक एवं प्रतिदिन देने से उपयोगी हो और दोष एवं रोगियों के अनुसार औषधियों से सिद्धस्नेह या केवल स्नेह का बस्ति में प्रयोग हो तो उसे अनुवासन बस्ति कहते हैं।

अनुवासन बस्ति मात्रा -

श्रेष्ठ मात्रा - 6 पल (24 तोला) को

- मध्यम मात्रा - 3 पल (12 तोला)
- ह्रस्व मात्रा - 1½ पल (6 तोला) को मात्रा बस्ति कहा जाता है।

बस्ति का प्रभाव -

- बस्ति पक्वाशय में रहने से स्वशक्ति द्वारा पैर के तलवे से मस्तिष्क तक के कुपित दोषों को नष्ट करती है।
- जिस तरह सूर्य आकाश में रहते हुए भी स्वशक्ति से पृथ्वी रस को खींच लेता है।

अनुवासन बस्ति धारण काल -

- अनुवासन बस्ति का तैल शरीर **में 3 याम (9 घंटे)** तक ठहरकर बाहर निकलने से शरीर पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है।

अनुवासन बस्ति गुण -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) **सस्नेहनं वर्णबलप्रदं च** : - निरुह बस्ति द्वारा शरीर के स्रोतों का शोधन होने के बाद अनुवासन बस्ति का प्रयोग करने पर शरीर का वर्ण एवं बल की वृद्धि हो जाती है।
2) **न तैलदानात् परमस्ति किञ्चिद्रव्यं विशेषेण समीरणार्ते** : - विशेषतः वात व्याधियों की वेदना को शान्त करने के लिए अनुवासन तैल के प्रयोग से बढ़कर अन्य औषधि नहीं है।
3) **स्नेहेन रौक्ष्यं लघुतागुरुत्वादीष्ण्याच्च शैत्यं पवनस्य हत्वा तैलं ददात्याशु** : - तैल अपने स्नेह गुण से वायु की रूक्षता, गुरु गुण से वायु की लघुता, उष्णवीर्य से वायु की शीतलता का नाश करके शीघ्र ही शरीर एवं मन को प्रसन्नता देता है।

4) **मनः प्रसादं वीर्यं बलं वर्णमथाग्निपुष्टिम् : -** बल, वर्ण, वीर्य एवं जाठराग्नि की वृद्धि कर शरीर को पुष्ट करता है।

अनुवासन बस्ति सम्यक् योग लक्षण -

" प्रत्येत्यसक्तं सशकृच्च तैलं रक्तादिबुद्धीन्द्रियसंप्रसादः ।

स्वप्नानुवृत्तिलघुता बलं च सृष्टाश्च वेगाः स्वनुवासिते स्युः ।। "

अर्थात् अनुवासन बस्ति का उचित रूप से प्रयोग होने पर बिना किसी अवरोध के मल के साथ तैल के गुदा से बाहर आ जाने से रक्तादि धातु, बुद्धि, इन्द्रियां स्वच्छ होकर सुखपूर्वक निद्रा आ जाती है। वेगों के नहीं रुकने से शरीर में लघुता एवं बलवृद्धि हो जाती है।

अनुवासन बस्ति काल -

- **हेमन्त , शिशिर, बसन्त में** - दिन के समय
- **ग्रीष्म, वर्षा, शरद ऋतु में** - रात्रि के समय

अनुवासन बस्ति में पथ्यापथ्य -

- भोजन का पाचन हुए व्यक्ति को स्नेह के बाहर आने पर सायंकाल इच्छानुसार लघु भोजन खाना चाहिए।
- यदि जाठराग्नि दीप्त नहीं हो तो भोजन अल्पमात्रा में या बिल्कुल नहीं देना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त अनुवासन बस्ति में खान पान, विहार और परहेज का स्नेहपान के समान ही प्रयोग करना चाहिए

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) उत्तरबस्ति -

उत्तरमार्ग (मूत्र मार्ग या योनि मार्ग) में दी जाने के कारण, श्रेष्ठ गुण होने के कारण तथा निरुह व अनुवासन बस्ति के पश्चात् दी जाने के कारण इसे उत्तर बस्ति कहते हैं।

उत्तर बस्ति नेत्र -

पुरुषों के लिए -

पुष्प नेत्र - स्वर्ण या रजत निर्मित |

आकृति - चमेली, कनेर के फूल के वृन्त सदृश सूक्ष्म और गाय की पूँछ के सदृश |

- पुष्पनेत्र में **सर्षप के आकार का छिद्र,**
- नेत्र **12 अङ्गुल लम्बा** एवं विकर्णिका युक्त होना चाहिए।
- **आचार्य सुश्रुत ने** 14 अंगुल लम्बी नली बनाने का निर्देश दिया है।

स्त्रियों के लिए -

- पुष्पनेत्र 10 अंगुल लम्बा,
- पुष्पनेत्र में मूंग के आकार का छिद्र बना हुआ हो,

पुष्पनेत्र को स्त्रियों के

- योनि मार्ग में - चार अंगुल
- मूत्रमार्ग में - 2 अंगुल
- दस वर्ष से कम उम्र की बालिकाओं में - एक अंगुल अन्दर प्रविष्ट किया जाना चाहिए।

उत्तर बस्ति मात्रा -

आचार्य चरक ने उत्तरबस्ति के लिए द्रव की मात्रा 2 तोला अथवा 25 वर्ष के पुरुष के लिए अनुवासन उत्तरबस्ति 4 तोला एवं निरुह उत्तरबस्ति की मात्रा 8 तोला बतलायी गयी है। इसी प्रकार आचार्य सुश्रुत ने स्त्रियों के लिए अनुवासन उत्तरबस्ति की मात्रा 8 तोला और निरुह उत्तर बस्ति की गर्भाशय शोधनार्थ 16 तोला की मात्रा में देने का निर्देश किया है। जबकि आचार्य शार्ङ्गधर के मतानुसार स्त्रियों में योनिमार्ग द्वारा गर्भाशयगत उत्तरबस्ति की मात्रा 8 तोला, मूत्राशयगत उत्तरबस्ति की मात्रा 4 तोला और 12 वर्ष तक की बालाओं में मूत्राशयगत उत्तरबस्ति की मांत्रा 2 तोला बतलायी है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 8319811628 , 8962265728

स्त्रियों में उत्तरबस्ति काल -

- स्त्रियों **के ऋतुकाल में गर्भाशय** का मुख खुला रहने से योनि शीघ्र ही स्नेह को ग्रहण कर लेती है।
- इसलिए स्त्रियों में उत्तर बस्ति **विशेषत: ऋतुकाल में** ही दी जाती है।

उत्तर बस्ति गुण -

शुकं दुष्टं शोणितं चाङ्गानानां पुष्पोद्रेकं तस्य नाशं च कष्टम् ।

मूत्राघातान्मूत्रदोषान् प्रवृद्धान् योनिव्याधिं संस्थितिं चापरायाः ।।

शुक्रोत्सेकं शर्करामश्मरीं च शूलं बस्तौ वङ्गणे मेहने च ।

घोरानन्यान् बस्तिजांश्चापि रोगान् हित्वा मेहानुत्तरो हन्ति बस्तिः ।।

अर्थात् उत्तरबस्ति से प्रमेह, दूषित शुक्र एवं आर्तव, रज की अधिकता, रजोनाश, रजकृच्छ्रता, मूत्राघात, मूत्रदोष, योनिव्यापद्, अपरा का अवरोध, शुक्रक्षरण, शर्करा, अश्मरी, बस्तिशूल, वंक्षणशूल, लिङ्गशूल और बस्तिगत अन्य विविध भयंकर रोग नष्ट हो जाते हैं।

उत्तरबस्ति लक्षण समन्वय -

" सम्यग्दत्तस्य लिङ्गानि व्यापदः क्रम एव च । बस्तेरूत्तरसंज्ञस्य समानं स्नेहबस्तिना ।। "

अर्थात् उत्तर बस्ति का सम्यक् योग लक्षण, उपद्रवों के लक्षण, चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य आदि अनुवासन बस्ति के समान जानना चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लेप कल्पना

लेप -

- बाह्य प्रयोग से त्वचा के द्वारा औषध के कार्यकारी तत्त्वों का शरीर में अवशोषण होता है। औषध का बाह्य प्रयोग कई प्रकार से जैसे - लेप , मलहर , उद्वर्तन , अवचूर्णन , उपनाह (पुलटिस) , स्नेह द्रव्यों का अभ्यंग , स्वेदन , धूपन आदि द्वारा होता है।

लेप के पर्याय - लेप , लिप्त , लेपन

परिचय -

- लेप कल्पना कल्क का ही रूप है।
- मृदु स्वरूप का कल्प है।
- आचार्य सुश्रुत ने व्रण तथा सभी प्रकार के शोफों में आलेप (लेप) को प्रथम और प्रधान उपक्रम कहा है।
- व्रणशोथ , विद्रधि , भगन्दर , अपची आदि रोगों में लेप व आलेपों का प्रयोग बताया गया है।

लेप और कल्क में अन्तर -

- लेप का केवल बाह्य प्रयोग होता है , जबकि कल्क का दोनों प्रकार से आभ्यन्तर और बाह्य प्रयोग होता है।

परिभाषा -

" द्रव्यमाद्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा सद्रवं तनु। देहे प्रलेपनार्थं तल्लेप इत्युच्यते बुधैः "

- औषधि द्रव्य को आर्द्र लेकर या शुष्क होने पर जल आदि द्रव द्रव्यो के साथ पत्थर की शिला पर पीसकर कल्कवत् बनाकर शरीर पर बाह्य लेप करने हेतु की जाने वाली कल्पना को लेप कहते हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लेप के भेद -

आचार्य शार्ङ्गधर ने - 2

1) **प्रलेप**
2) **प्रदेह**

- दोनों की मोटाई भैंस के गीले चमड़े के समान होती।

मुखलेप - 3

1) **दोषघ्न लेप**
2) **विषघ्न लेप**
3) **वर्ण्य लेप**

आचार्य सुश्रुत -

1) प्रलेप
2) प्रदेह
3) आलेप

वागभट्ट -

1) **प्रलेप**
2) **प्रदेह**

प्रलेप -

- जो लेप शीत , तनु और विशोषी हो , उसे प्रलेप कहते हैं।
- प्रलेप पित्तनाशक

प्रदेह -

- जो लेप आर्द्र , घन (मोटा) और उष्ण हो , उसे प्रदेह कहते हैं
- प्रदेह कफवातनाशक होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लेप के गुण -

" प्रह्लादने शोधने च शोफस्य हरणे तथा | उत्सादने रोपणे च लेप : स्यात्तु तदर्धकृत् । "

- लेप करने से प्रह्लादन , शोधन , शोथहर , उत्सादन और व्रण का रोपण हो जाता है।
- जैसे - जिस प्रकार जलते हुए घर पर जल डालने से शीघ्र ही अग्नि शान्त हो जाती है उसी प्रकार व्रण पर लेप करने से शीघ्र ही पीड़ा शान्त हो जाती है।

लेप के नियम -

- रात्रि में लेप लगाने से उसकी शीतलता से उस स्थान की दबी हुई। ऊष्मा नहीं निकलने से विकार बढ़ जाता है , अतः रात्रि में लेप का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

उद्वर्तन -

- जौ या चने के आटे में दही एवं तैल मिश्रित कर शरीर पर मलने को उद्वर्तन कहते हैं।
- और केवल जौ या चने के आटे से शरीर पर मलना उद्धर्षण कहलाता है।

उद्वर्तन के गुण -

" उद्वर्तनं कफहर मेदसः प्रविलायनम्। स्थिरीकरणमङ्गानां त्वक्प्रसादकरं परम्। "

- उदवर्तन से कफनाश , मेदहर , शरीर के अङ्ग दृढ़ और त्वचा स्वच्छ कान्तिमन् हो जाती है।

अवचूर्णन योग (Dusting powder) -

- अवचूर्णन योग (Dusting powder) का त्वचा पर बाह्य प्रयोग antiseptic . antipruritic , absorbent . protective and lubricant उद्देश्य से किया जाता है।
- ये चूर्ण अत्यन्त सूक्ष्म और एक समान मिश्रित (Uniform mix) होने चाहिए , जिससे इनका प्रभाव अधिक तथा स्थानिक क्षोभ न्यून हो।
- इसके अलावा अवचूर्णन प्रयोग करने पर एक समान फैलकर त्वचा पर लगा रहना चाहिए। इनको प्रयोग करने पर घर्षण , नमी और रासायनिक प्रतिक्रिया से त्वचा को सुरक्षा देनी चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सिक्थ तैल निर्माण -

घटक द्रव्य -

1) **सिक्थ (मोम) - 1 भाग**
2) **तिलतैल - छः भाग / पाँच भाग**

निर्माण विधि -

- सर्वप्रथम एक भाग मोम एवं तिल तैल छःभाग / पाँच भाग को स्टील पात्र में रखकर मन्दाग्नि द्वारा पकाया जाता है।

- जब संपूर्ण मोम पिघलकर तैल में घुल जाये , तब पात्र को नीचे उतारकर शीतल होने तक कड़छुल से चलाते रहते है।
- जब थोड़ा गाढ़ा हो जाय तो किसी उपयुक्त पात्र में भरकर दक्कन बंद कर दिया जाता है।
- मोम एवं तैल से निर्मित होने से इसको सिक्थ तैल कहते हैं।

उपयोग - मलहमों में प्रयोग।

- आधुनिक चिकित्सा में मलहमों में प्रायः वेसलीन आदि का प्रयोग किया जाता है।

मलहर -

- यूनानी चिकित्सा में मरहम या मलहम के नाम से प्रचलित है।
- व्रण , विद्रधि , अर्श , त्वग्विकार आदि के मल दूर (हरण) करने के कारण इसे मलहर कहते हैं।
- मलहर कल्पना में घृत , तैल , मोम , गन्धविरोजा , राल , तुत्य फिटकरी आदि द्रव्यों का प्रमुख रूप से प्रयोग किया जाता है।
- मलहर द्रव्यों का केवल बाह्य प्रयोग ही किया जाता है।
- आयुर्वेद में मलहर प्रायः सिक्थ तैल से बनाये जाते हैं।

सर्जरस मलहर -

घटक द्रव्य -

1) **तिल तेल - 16 भाग**
2) **सर्जरस (राल) 4. भाग**
3) **तुत्थ - 1 भाग**
4) **फिटकरी -1 भाग**

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निर्माण विधि -

- सर्वप्रथम सर्जरस , तुत्थ एवं फिटकरी का सूक्ष्म चूर्ण करते हैं। फिर किसी स्टील के पात्र में तिल तेल डालकर अग्नि पर गर्म किया जाता है। तैल के निष्फेन होने पर उपरोक्त द्रव्यों का चूर्ण डालकर खूब चलायें।
- जब सभी द्रव्य घुलकर एकाकार हो जाय तब पात्र को नीचे उतारकर कपड़े से दूसरे पात्र में छान लेवे।
- फिर शीतल होने पर थोड़ा - थोड़ा पानी डालकर हाथ से अच्छी प्रकार से इसी प्रकार मसलकर पानी गिराते जाये 15-20 बार करने पर सर्जरस फूलना बन्द हो जाता है।
- इस प्रकार पीताभ श्वेत वर्ण का सर्जरस मलहर का निर्माण हो जाता है। जब पानी मिलाकर मथकर पानी बाहर फेंकते हैं तो हर बार तुत्थ बाहर निकलने के कारण पानी हरे रंग का दिखाई देता है।

- जब हरा वर्ण आना बन्द हो जाय तो मलहर सिद्ध माना जाता है।
- इस मलहर को काँच के जार में रखकर ऊपर से स्वच्छ पानी भरकर रखा। जाता है , अन्यथा मलहर काला होकर सड़ जाता है।

मुख्य उपयोग -

- सामान्य व्रण ,अग्निदग्ध व्रण , दाह , दुर्गन्धित व्रण , गुदपाक अर्श , दुष्टव्रण , नाडीव्रणनाशक।
- बाह्य प्रयोग ही किया जाता है।

गन्धकाद्य मलहर -

घटक द्रव्य -

1) **सिक्थ तैल - 72 ग्राम**
2) **गन्धक - 6 ग्राम**
3) **सिन्दूर - 6 ग्राम**
4) **टङ्कण - 2 ग्राम**
5) **कर्पूर - 2 ग्राम**

निर्माण विधि -

- सर्वप्रथम गन्धक , सिन्दूर , टङ्कण एवं कर्पूर के सूक्ष्म चूर्ण को खरल में डालकर पीस लिया जाता है।
- फिर सिक्थ तैल मिलाकर भलीभांति मर्दन किया जाता है।
- जब चिकना मलहर हो जाय तो काँच के पात्र में रखकर सुरक्षित स्थान पर रखें।
- इस प्रकार गन्धकाद्यमलहर का निर्माण हो जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मुख्य उपयोग -

- त्वक् विकार
- यथा- पामा , दद्रु , कण्डू , सभी व्रण

उपनाह (Poultice) -

- आचार्य चरक ने व्रणशोथ के उपचारार्थ उपनाह द्वारा व्रणशोध को पकाकर पाटन कर्म (चीरा लगाने) का उल्लेख किया है।

- आम एवं पक्च द्विविध प्रकार के व्रणशोथ में अतसी आदि द्रव्यों को द्रव पदार्थ के साथ पीसकर उसको वस्त्र पर रखकर पुन वस्त्र से आच्छादित कर शोध पर बाँधने को उपनाह कहते हैं।

मुख्य उपयोग - आमशोध , पक्वशोथ , व्रणनाशक।

शतधौत और सहस्रधौत घृत -

शतधौत घृत -

- गोघृत को सौ बार जल से मथकर धोने से शतधौत घृत।

सहस्रधौत घृत-

- एक हज़ार बार धोने से सहस्रधीत घृत कहा जाता है।

निर्माण विधि -

- किसी स्टील के पात्र में 500 ग्राम गोघृत डालकर उसमें दुगुनी मात्रा में स्वच्छ मधुर जल मिलाकर दोनों हाथों से अच्छी प्रकार से मथकर पानी को अलग पात्र में निधार लिया जाता है।
- इस प्रकार 8-10 बार मचने तक घी फूलता जाता है। इसके पश्चात् घृत का फूलना बन्द हो जाता है।
- इस प्रकार पात्र में स्थित घृत के ऊपर शीतल स्वच्छ मधुर जल डालकर धोने और निथारने की प्रक्रिया को सौ बार करने से शतधौत घृत का निर्माण हो जाता है।
- इसी तरह स्वच्छ मधुर शीतल जल डालकर घृत को धोने और निधारने की प्रक्रिया को एक हजार बार करने से सहसधीत घृत का निर्माण हो जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मुख्य उपयोग -

- शतधौत घृत एवं सहस्रघौत घृत क्रमशः अत्यन्त शीतल एवं सौम्य हो जाने से ओष , चोष , दाह , दग्धवेदना , मसूरिका , व्रण , विस्फोट , कुष्ठादि अनेक विकारों को बाह्य लेप से नष्ट करता है।

नस्योपचारार्थ कल्पना

नासा से सम्बन्धित विकारों में नस्य का प्रयोग किया जाता है।औषधद्रव्यों का चूर्ण , स्वरस , क्वाथ , स्नेह (औषधा क्षीरपाक तथा औषध द्रव्यों का धूमपान नासा से लेने को नस्य कर्म (नासा कर्म) कहते है।

पर्याय - नावन , नस्तु

- शिरो रोगों में नस्य प्रयोग लाभकारी होता है , क्योंकि नासा को शिर का द्वार कहा गया है।

नस्य के भेद -

कर्म भेद से नस्य - दो

1) **स्नेहन**
2) **शिरोविरेचन**

- शिरोविरेचन नस्य कर्षण (अपतर्पण) और स्नेहन नस्य को बृहण कहा जाता है।

" नावनं चावपीडश्च ध्मापनं धूम एव च। प्रतिमर्शश्च विज्ञेयं नस्तः कर्म तु पञ्चधा। "

(च . सि . 9/89)

Ayurvedic Formulation

आचार्य चरक ने - 5

1) **नावन**
2) **अवपीड**
3) **ध्मापन**
4) **धूम**
5) **प्रतिमर्श**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य सुश्रुत - 5

1) **नस्य ,**
2) **शिरोविरेचन ,**
3) **प्रतिमर्श ,**
4) **अवपीड**
5) **प्रधमन**

नस्य -

- शून्यशिर , ग्रीवा , और नेत्रों को निर्मल करने के लिए सामान्यतया नस्य या नावन शब्द सभी प्रकार के नस्यों के लिए प्रयुक्त होता है।
- सिद्ध स्नेह का प्रयोग करने को विशेष रूप से नस्य कहा जाता है।
- सामान्यतया नस्य या नावन शब्द सभी प्रकार के नस्यों के लिए प्रयुक्त होते हैं।

शिरोविरेचन -

- पिप्पली , विडङ्ग आदि शिरोविरेचन द्रव्यों या उनसे सिद्ध स्नेह से दिया गया नस्य शिरोविरेचन कहा जाता है।

नावन -

- आचार्य चरक के नावन शब्द से आचार्य सुश्रुत के नस्य और शिरोविरेचन दोनों का समावेश हो जाता है।
- नावन के स्नेहन और शोधन दो भेद माने गए हैं।

अवपीड -

- तीक्ष्ण औषधियों के कल्क को यन्त्र या वस्त्र से निचोड़कर प्राप्त स्वरस अथवा उनके क्वार्थ , शीत आदि के द्वारा दिये गये नस्य को अवपीड कहते हैं
- यह शोधन एवं स्तम्भन भेद से दो प्रकार का होता है।

प्रधमन या ध्मापन -

- छः अंगुल लम्बी , दोनों ओर खुले मुख वाली नली के अन्दर एक कोल (6 ग्राम) तीक्ष्णौषधियों का चूर्ण भरकर नली के एक सिरे को नाक के छिद्र में लगाकर दूसरे सिरे के मुख से फूंक मारने को प्रधमन नस्य कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रधमन का उपयोग -

- चेतना की विकृति , कृमि और विष से पीड़ित रोगियों का विरेचन द्वारा स्रोतोशोधन करने में किया जाता है।

मर्श एवं प्रतिमर्श : -

- मर्श एव प्रतिमर्श नस्य में मात्रा भेद से स्नेहों को नाक द्वारा प्रयोग में लिया जाता है।

- मर्श नस्य **को विशेषरूप से रोगों में प्रयुक्त** किया जाता है जबकि **प्रतिमर्श नस्य को प्रतिदिन लिया** जा सकता है।
- आचार्य चरक ने प्रतिमर्श को प्रातः एवं सायं लेने का निर्देश दिया है।
- यह दोष वर्धक नहीं होने से शरीर को दृढ करने का कार्य करता है।

प्रतिमर्श विधि -

- प्रतिमर्श नस्य को दो - दो बूंद की मात्रा में दोनों नाक में विधिपूर्वक प्रयुक्त किया जाता है।
- नाक में स्नेह डालने पर कुछ स्नेह मुख में पहुँच जाये इतना स्नेह प्रतिमर्श की एक मात्रा होती है।
- इसको पीना नहीं चाहिए , बल्कि मुख में गये हुए स्नेह को भूँक देना चाहिए।

मर्श एवं प्रतिमर्श मात्रा -

मर्शमात्रा - आठ बिन्दुओं

- तर्जनी अंगुली के दो पर्वों को स्नेह में डुबोकर बाहर निकालने पर जो बूँद गिरती है , उस मात्रा को एक बिन्दु कहा जाता है
- इस प्रकार की आठ बिन्दुओं का एक शाण होता है , जो मर्शनस्य में प्रयोग के लिए लिया जाता है।

प्रतिमर्श की मात्रा - दो बिन्दु

Ayurvedic Formulation

मर्श एवं प्रतिमर्श में भेद

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मर्श	प्रतिमर्श
मात्रा 8 बिन्दु	मात्रा 2 बिन्दु
विशेषकर रोगनाशक	स्वस्थावस्था में प्रयुक्त
शीघ्रप्रभावकारी	देर से प्रभावकारी
उत्तम गुणयुक्त	अल्पगुणयुक्त
पथ्यापथ्यपालन	पथ्यापथ्यपालन नहीं
उपद्रवकारक	निरूपद्रवकारक

नस्य विधि -

- पुरुष को नस्य के लिए मेघरहित साफ आकाश के समय वायु , धूल , धूम रहित स्थान पर मलमूत्रादि से निवृत्त , धूमपान द्वारा मुख स्रोतों का शोधन किये हुए , ललाट , गल , कपोल को स्विन्न किये हुए रोगी को शय्या पर उत्तान सुलाया जाता है।
- हाथ पैरों को फैलाकर पैरों को ऊंचा एवं शिर भाग को नीचा रखकर उसके आँखों को स्वच्छ वस्त्र से ढ़ककर बायें हाथ की प्रदेशिनी अंगुली से नासाग्र को ऊपर उठाकर दाहिने हाथ से नासारन्ध्र में शुक्ति या पिचु द्वारा धीरे - धीरे एक धारा में सुखोष्ण स्नेह को डाला जाता है।
- यह स्नेह उष्ण जल से गर्म किया हुआ और स्वर्ण , रजत , ताम्र मणि , मृत्तिका पात्र एवं शुक्ति में रखा होना चाहिए

नस्य काल -

- कफ को दूर करने के लिए - **प्रातःकाल**
- पित्त को दूर करने के लिए - **दोपहर**
- वात को दूर करने के लिए - **सायंकाल**

नस्यधारण काल -

- नस्य को **पाँच मात्रा , सात मात्रा अथवा दश मात्रा** तक ही धारण करना चाहिए।

नस्य गुण -

" नस्येन रोगा : शाम्यन्ति नराणामूर्ध्वजत्रुजा: । इन्द्रियाणां च वैपल्यं कुर्यादास्य सुगन्धि च ।। "

- नस्य का प्रयोग करने पर ऊर्ध्वगत रोग नष्ट होकर इन्द्रियां निर्मल एवं मुख सुगन्धित हो जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सम्यक् नस्य लक्षण -

- शिर में हल्कापन
- सुखपूर्वक सोना और जागना
- विकारोपशमन
- न्द्रियों की शुद्धि और मन का सुखपूर्वक प्रसन्न रहना।

धूमपानार्थ कल्पना

औषध द्रव्यों के धूम का शरीर पर प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है -

1) **धूमपान**
2) **धूपन**

धूमपान -

- **ऊर्ध्वजत्रुगत रोगों में नासा या मुख** द्वारा औषध द्रव्यों का धूम प्रवेश कराना धूमपान कहलाता है।
- औषध द्रव्यों की **वर्ति बनाकर जलाने** से उत्पन्न **धूम का नासा या मुख द्वारा** ग्रहण किया जाता है।
- नस्य कर्म के पश्चात् जब कफ विलयीभूत होकर गल नासा व शिर के स्रोतसों में स्थिर हो जाता है और रोगों के उत्पन्न होने की सम्भावना हो सकती हैं , इसलिए कफनाशक धूमपान कराया जाता है।
- **नस्य , अञ्जन , निद्रा आदि के अन्त में कफनाशक धूमपान करना हितकारी होता है।**

धूपन -

- किसी भी रोग में उपयुक्त द्रव्यों का कल्क सम्पुट में रखकर उसको **अग्नि पर के छिद्र में नलिका लगाकर धूप देने** की प्रक्रिया को धूपन कहते हैं।
- जिस स्थान के लिए धूपन दिया जाता है , उस स्थान के साथ ' धूपन ' शब्द लगाकर **व्रणधूपन , योनिधूपन कर्णधूपन , गृहधूपन** आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

व्रणधूपन -

- व्रण में रहे हुए **कृमियों को नष्ट करने तथा व्रण की पीड़ा** कम करने के लिए जो धूम दिया जाता है , उसको व्रणधूपन कहते हैं।
- गुग्गुलु अगुरु , राल , वचा , गौरसर्षप , सैधवलवण , निम्बपत्र और घृत से मिश्रित द्रव्यों का कल्क शरावसम्पुट में रखकर अग्नि जलाकर सम्पुट के छिद्र में नलिका लगाकर व्रण पर धूपन देने को व्रण के लिए प्रशस्त माना गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अर्शोधूपन -

- कुटज , बिल्व , चित्रक , सोंठ , अतीस , वचा , चव्य , दुरालभा , हरीतकी और दारिद्रा द्रव्यों के सूक्ष्म चूर्ण का कल्क शरावसम्पुट में रखकर अग्नि जलाकर संपुट के छिद्र में नलिका लगाकर अर्श में धूपन करने पर हितकारी होता है।

मुखप्रयोगार्थ कल्पना

मुख अर्थात् ओष्ठ से लेकर गले तक स्थानिक क्रियाओं के लिए जो औषध प्रयोग किया जाता है , उसे मुख प्रयोगार्थ कल्पना कहते हैं।

प्रकार - मुख्य रूप से दो

1) **गण्डूष और कवल**
2) प्रतिसारण

- कषाय , तिक्त रस युक्त औषधियों के क्वाथ , स्वरस , कल्क , शीत , आदि पदार्थों को मुख में धारण या कुल्ला करने को मुख प्रयोगार्थ कल्पना है।
- यथा : गण्डूष , कवल।

गण्डूष -

- औषधियों के क्वाथ , स्वरस , उष्णोदक , मधु , घृत , तैल , गोदुग्ध आदि द्रव पदार्थों को मुख में इतना अधिक भरा जाता है।
- जिससे **मुख में अन्दर घुमाया फिराया नहीं जा सकता** हो , उसे गण्डूष कहते हैं।

Ayurvedic Formulation

गण्डूष के भेद -

- आचार्यों ने गण्डूष को **स्नैहिक , शमन , शोधन एवं रोपण** भेद से प्रकार का माना है।
- इनमें **शमन गण्डूष को स्तम्भन ओर प्रसादन** भी कहा जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) स्नैहिक गण्डूष -

- स्नेह द्रव्यों से तैयार किया हुआ स्निग्ध गण्डूष मुख में धारण करने पर वातज विकार नष्ट हो जाते हैं।

2) शमन गण्डूष -

- मधुर और शीत गुण युक्त द्रव्यों से तैयार किया हुआ। शमन (प्रसादन) गण्डूष मुख में धारण करने पर पित्तज विकार नष्ट हो जाते हैं।

3) शोधन गण्डूष -

- कटु , अम्ल , लवण और उष्ण गुण युक्त द्रव्यों से तैयार किया हुआ शोधन गण्ड्य मुख में धारण करने पर कफज विकार नष्ट हो जाते हैं।

4) रोपण गण्डूष -

- कषाय , तिक्त , मधुर , कटु (सुश्रुत) और उष्ण गुणों से युक्त द्रव्यों से तैयार किया हुआ रोपण गण्डूष मुख में धारण करने पर व्रणों का रोपण हो जाता है।

गण्डूष में प्रक्षेप मात्रा - एक कोल (6 ग्राम)

गण्डूष से लाभ -

1) स्नेह तैल का गण्डूष मुख में धारण करने से हनु और स्वर बलवर्द्धक, मुखमांसवर्द्धक, जिह्वाशोधक होने से रसबोधक एवं रुचिकारक,
2) मुख एवं कण्ठ का अशोषक,
3) ओष्ठों का फटना बन्द होना,
4) दाँत एवं मसूड़ों के लिए बल्य,
5) मसूढ़ों के लिए पीड़ानाशक,
6) अम्ल पदार्थों से दन्तहर्ष नहीं होना।

Ayurvedic Formulation

कवल -

- औषधियों के कल्क, क्वाथ, स्वरस, मधु, गोघृत, तैल, गोमूत्र, गोदुग्ध आदि पदार्थों को मुख में इतना भरा जाता है। जिससे धारित पदार्थ को **मुख में आसानी से घुमाया फिराया** जा सकता हो, उसे कवल या कवलग्रह कहते हैं।
- आचार्य शार्ङ्गधर ने कवल में कल्क से ही मुख धारण का निर्देश दिया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कवल के भेद -

आचार्यों ने कवल **को स्नैहिक, प्रसादी (शमन), शोधन एवं रोपण भेद से चार** प्रकार का माना है -

1) **स्नैहिक कवल -** स्निग्ध और उष्ण कवल को मुख में धारण करने वातज विकार नष्ट हो जाते हैं।
2) **प्रसादी (शमन) कवल** - मधुर और शीत गुण युक्त द्रव्यों का कवल में धारण करने पर पित्तज विकार नष्ट हो जाते हैं।

3) **शोधन कवल -** कटु, अम्ल, लवण, रूक्ष और उष्ण गुण युक्त द्रव्यों क में धारण करने पर कफज विकार नष्ट हो जाते हैं।
4) **रोपण गण्डूष -** कषाय, तिक्त, मधुर, कटु और उष्ण गुण युक्त द्रव्यों का कवल मुख में धारण करने पर मुखज व्रण नष्ट हो जाते हैं।

कवल में प्रक्षेप मात्रा - 1 कर्ष (12 ग्राम)

कवल के लाभ -

- मुखपाक में सिराकर्म, शिरोविरेचन, कायविरेचन और गोमूत्र, तिलतैल, गोघृत, गोदुग्ध, और मधु का कवल धारण करना हितकारी होता है।

गण्डूष कवल धारणार्थ वय -

- **पाँच वर्ष की** आयु के बाद ही गण्डूष कवल को धारण करना चाहिए।

गण्डूष कवल सम्यक् योग लक्षण -

1) रोग का क्षय होना,
2) रोगी के हृदय में परितोष,
3) मुख में लघुता और इन्द्रियों का प्रसन्न होना गण्डूष एवं कवल के सम्यक योग का लक्षण माना गया।

Ayurvedic Formulation

गण्डूष एवं कवल में भेद

गण्डूष	कवल
गण्डूष की मात्रा असञ्चारी होती है।	कवल की मात्रा सञ्चारी (चलाने योग्य) होती है, आचार्य वाग्भट्ट ने कवल को कण्ठ तक संचारण करने का निर्देश दिया है।
आचार्य शार्ङ्गधर ने गण्डूष द्रव पदार्थों से करने का निर्देश किया है।	आचार्य शार्ङ्गधर ने कवल को कल्क से धारण करने का निर्देश किया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628, 8962265728

प्रतिसारण -

- अंगुली या रूई लगी हुई सलाई की नोक पर औषध लेकर उसको मुँख, कंठ और तालु में अन्दर लगाने की क्रिया को प्रतिसारण कहते हैं।

प्रतिसारण भेद -

आचार्य सुश्रुत ने - चार

1) कल्क
2) रसक्रिया
3) क्षौद्र (मधु)
4) चूर्ण

आचार्य शार्ङ्गधर ने - तीन

1) कल्क
2) अवलेह
3) चूर्ण

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728